

मध्यकालीन भारत के प्रमुख इतिहासकार

लेखक

डॉ एस एल नागोरी

एम ए (गोल्ड मडलिस्ट) पी एच डी,
प्राध्यापक, स्नानकोत्तर इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, सिरोही (राज)

प्रावचन लेखक

डॉ सी एम जैन

निदेशक,

पत्राचार पाठ्यक्रम निदेशालय

मुस्ताडिया विश्वविद्यालय,

उदयपुर (राज०)

आदिनाथ प्रकाशन

आदिनाथ प्रकाशन
C/o श्रीनाथ स्टोर
मिनमा रोड सिरोही (राज०)



प्रकाशक

द्वितीय संस्करण 1986

मूल्य 60 00



मुद्रक
जगदम्बे प्रिन्टर्स
मिरोही (राज०)

गुवा शोधना के प्रेरणा स्रोत
डॉ एस आर दत्ता
चिकित्सा अधिकारी (सेवा निवृत्त)
को
सादर समर्पित

श्राति
C/o
सिनेर



प्रकाश

द्वितीय

मूल्य ८



मुद्रक
जगदम्बे ।
मिराही (

मुझे प्रसन्नता है कि डॉ० एस एल नागोरी ने इतिहास विषय पर "मध्यकालीन भारत के प्रमुख इतिहासकार" नामक पुस्तक प्रस्तुत की है। सबसे पहले तो मैं डॉ० नागोरी को उनके इस सराहनीय प्रयास के लिये अपनी श्रौर में हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ कि उन्होंने इस विषय पर अत्यन्त सुबोध शैली में यह पुस्तक लिखी। डॉ० नागोरी ने अपनी इस पुस्तक में नवीनतम शोध के आधार पर प्राप्त तथ्यों व अद्यतन विचारधाराओं का समावेश किया है। विषय के गम्भीर अध्येता होने के कारण वे अपनी बात बहुत सरल और बोधगम्य ढंग से कह पाय हैं।

मुझे पूर्ण विदवास है कि डा० नागोरी की यह पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों एवं गम्भीर अध्येताओं के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के प्रणयन के लिए मैं एक बार पुनः डा० नागोरी को अपनी श्रौर से बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि वे इसी सँग और उत्साह से अपने लेखन कार्य में जुटे रहेंगे।

स्वाधीनता दिवस, 1984

डा० सी एम जैन

निदेशक

पन्नाचार पाठ्यक्रम निदेशालय

मुम्बई विश्वविद्यालय,

उदयपुर (राज०)

भूमिका

मैंने 'मध्यकालीन भारत के प्रमुख इतिहासकार' नामक पुस्तक प्रामाणिक ग्रंथों को आधार बनाकर लिखी है। सम्भवत यह प्रथम कृति है जिसमें मध्यकालीन भारत के प्रमुख इतिहासकारों एवं उनकी कृतियों को एक साथ समाविष्ट किया गया है एवं उनका विविध दृष्टियों से विस्तृत विवेचन भी किया गया है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों एवं इतिहास के पाठकों के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक को लिखने में मैंने जिन ऐतिहासिक कृतियों की सहायता ली है, उन इतिहासकारों के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य मानता हूँ।

मैं इस अवसर पर राजनीति विज्ञान के भारत प्रसिद्ध विद्वान माननीय डा० सी एम जैन, निदेशक पत्राचार-पाठ्यक्रम निदेशालय, मुम्बई विश्वविद्यालय, उज्जैन के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जो मुझे लेखन काम हेतु प्रेरणा देते रहे हैं। मैं डा० जैन के प्रति इसलिए भी कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने अपनी अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद मेरे अनुरोध को स्वीकारत हुए इस पुस्तक के लिये 'प्राक्कथन' लिखने की कृपा की।

मैं हमारे प्राचार्य एवं विद्वान लेखक प्रो० श्री एच बी सक्सेना का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिनका सराहनीय सक्रिय सहयोग एवं मार्ग-दर्शन मुझे हमेशा प्राप्त होता रहता है।

मैं अपने अभिन्न मित्र एवं राजस्थान के प्रसिद्ध युवा साहित्यकार डा० डी पी अग्रवाल के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनसे लेखकों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

मैं डा० बी एल शर्मा, प्रो० राजेंद्रहादुर आम्हा एवं प्रो० के एम जैन को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने मेरा उत्साहवर्द्धन किया एवं अपने अमूल्य समय एवं सुझावों से इस कार्य को पूरा करने में योग दिया।

श्री सी एन शर्मा के प्रति भी आभार व्यक्त करना मेरा कर्तव्य ही जाता है जिनके सहयोग के अभाव में यह पुस्तक प्रकाशन हेतु दन्ती जल्दी तैयार नहीं हो सकती थी।

यद्यपि यह पुस्तक इतिहास जगत में तनिक भी उपादेय हो सके तो मैं अपने श्रम को सायब समझूँगा।

विषय सूची

भाग (1) सल्तनत काल के प्रमुख इतिहासकार

प्रध्याय

1	फखरेन्नी तारीख उल हिन्द	10/96	पृष्ठ संख्या
2	हसन निजामी, ताज उल मासिर	12-5-8	
3	बाजी मिनहाज उस सिराज तबकात ए-नामिरी		
4	अमीर मुसरो की वृत्तिया		13
5	जिमाउद्दीन बरनी तारीख ए फीरोजशाही एव फतवा ए-जहांदारी		20
6	रायस ए सिराज अफोफ तारीख ए फीरोजशाही		38
7	सुलतान फीरोज तुगलक फतूहात ए- फीरोजशाही		43
8	स्वाजा भद्र ब्रह्मानी फतूह-उस-मलानीन		45
9	इब्नबतूता कितान-उल रहला		49
10	यहिया बिन अहमद तारीख ए-मुबारकशाही		54
11	अहमद याफार तारीख ए-सलातीन-ए-अफगानी		58
12	नियामततुल्ला मखजन ए अफगानी		60
13	अब्दुल्ला तारीख ए-दाऊदी		63
14	सीरत ए फीरोजशाही		67
15	आइनुल मुन्क मुल्तानी इ-गाये माह्य		69

भाग (2) मुगल काल के प्रमुख इतिहासकार

1	शाबर वावरनामा	1
2	मिर्जा हैदर तारीख-ए रानी	14
3	गुलबदन बेगम हुमायूनामा	17
4	बीहर अफवाबची तजकिरतुल बाबेआत	23
5	स्वाजा निजामुद्दीन अहमद तबकात ए अफगानी	25
6	अब्बास खा सरवानी तारीख ए शेरशाही	30
7	अबुल फजल अकबरनामा	34
8	अब्दुल कादिर बग्यूती मुतस्वाब उत-तवारीख	46
9	मोहम्मद कासिम हि दूशाह तारीख ए करिदता	54
10	जहागीर तुजुब ए जहागीरी	57
11	दारीफ बिन दोस्त मोहम्मद मोतमद खा इ-बालनामा-ए-जहागीरी	60

12	नामगात्र गाँ मघामिर ए जसुंगीरी	(1) 63
13	अमृत हमी लाहोरी पाठगाहनामा	65
14	मिर्जा अमीन बजबिनी पाठगाहनामा	70
15	- इनायत खा गाहजहाणामा	72
16	मुहम्मद सादिक गाहजहाणामा	74
17	मिर्जा मोहम्मद बाजिम घालमगीरनामा	76
18	मुहम्मद साकी मुस्तईद खा मघासिरे घालमगीरी	78
19	खाफी खा मुन्तखब उल-नुबाव	79
20	मुहम्मद कासिम इबरतनामा	89
21	भीमसेन नुस्खा ए दिलकुशा	91
22	ईश्वरदास नागर फुत्रहात ए घालमगीरी	94
23	गुजानराय खुलासत उन-नबारीख	95
	सादभ प्रथ सूची	98

भाग (१)

सल्तनत काल

के

प्रमुख

इतिहासकार

अलबेरुनी का पूरा नाम अर रैहा मुहम्मद इबन अहमद अलबेरुनी था परंतु इतिहास में वह अलबेरुनी के नाम से प्रसिद्ध है। वह खीरा प्रदेश का निवासी था। उसका जन्म 973 ई० में हुआ था। वह विज्ञान और साहित्य में रुचि था इमनिये मामुनी कुल के शासक ने उसे राजमंत्री के पद पर नियुक्त किया। उस समय गजनी पर महमूद गजनी शासन कर रहा था। यद्यपि खीरा का शासक महमूद का रिश्तेदार था फिर भी वह उसका राज्य छीनना चाहता था। अलबेरुनी जान कि खीरा नरेश का राज्यमंत्री था खीरा राज्य को महमूद के हाथकण्ठा में कई बार बचाया था। इमनिये महमूद और उसका मंत्री अहमद इबन हमन मैमनी उसे अपना गुरु समझते थे।

अतः जब 1017 ई० में महमूद ने खीरा प्रदेश पर अधिकार कर लिया और मामुनी राज्य का नष्ट भ्रष्ट कर वहाँ के शासक और मंत्रियों को उन्नी बना कर गजनी ले आया। उनका साथ ही अलबेरुनी भी लडाई के कैदियों में पकड़कर लाया गया। महमूद और उसके मंत्री अलबेरुनी का अपना गुरु समझते थे इमनिये उस महमूद के दरबार में विशेष स्थान प्राप्त नहीं हो सका। महमूद के दरबार में उस कबल ज्योतिषी के रूप में थोड़ी बहुत प्रसिद्धि मिली। महमूद को उसकी धार्मिक नीति के कारण "खलीफा के वर का दाहिना हाथ" और इस्लाम का संरक्षक' शक्ति उपाधिया प्राप्त हुई थी। अलबेरुनी ने इस सम्बन्ध में लिखा था कि 'उसने भारत के वैभव का सर्वथा नष्ट कर दिया, और ऐसी 2 चीजें चनी कि जिनसे हिंदू मिट्टी के परमाणुओं की भाँति बिखर गयी और केवल एक ऐतिहासिक बात रह गई।

महमूद की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र मसऊद (1030-1040 ई०) गजनी का शासक बना। उस समय अलबेरुनी का 'अलबानूनन मसऊदी' नामक पुस्तक मसऊद को समर्पित की। इस पर मसऊद बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अलबेरुनी की मारी गिरावटें दूर कर दी। जब गजनी के सुलतानाने ने भारतवर्ष पर आक्रमण किये तब अलबेरुनी को भी राजसेना के साथ भारतवर्ष घुमने का अवसर प्राप्त हुआ।

अलबेस्नी को हिंदुओं के विचारों का अध्ययन करने में बहुत आनंद प्राप्त होता था। यद्यपि महमूद की दृष्टि में हिंदू काफिर थे जिन्हें नरक की भट्टी में जलना पड़ेगा, इसलिये वह प्रतिवृत्त भारत पर आक्रमण करता था। और यहाँ के मंदिरों, श्रीर, मूर्तियों को नष्ट कर अपार धन सम्पत्ति लूटकर गजनों ल जाँना ही उसका मुख्य उद्देश्य था। किन्तु अलबेस्नी हिंदुओं को श्रेष्ठ तत्ववेत्ता 'उत्तम गणितज्ञ और निपुण ज्योतिर्वेद समझता था। इनका हान पर भी अलबेस्नी ने हिंदुओं के दोषों का छिपाया नहीं है और उनकी बड़ी आलाचना भी की है। इसके अनिश्चित उमर हिंदुओं के छाट से छाट गुण की प्रशंसा भी की है। तीर्थ स्थानों पर स्नानघाट के बारे में उमर लिखा है कि 'इस विश्व में उहाँ बहुत उत्तम की है हमारा लोग (मुसलमान) जब घाटों का खते है ता चर्चिन रह जात है वँमा बनाना तो दूर रहा उनका वणन करने में भी हम अममथ है।

अलबेस्नी का भारतीय दर्शनशास्त्र की तरफ बहुत भुकाव था। उसने मूर्ति पूजा के बारे में लिखा है कि प्रतिमा पूजन का मूल कारण मूर्तियों के स्मरणोत्सव मनाए और जीवितों को शांत करने की आकांक्षा थी, पर बन्ने बढ़ते अब यह एक जटिल और हानिकारक राग बन गया है। उसने हिंदू विद्वानों के बारे में कहा था 'उह परमात्मा की महायता है। अलबेस्नी की हिंदुओं के प्रति सहानुभूति इसलिये थी कि भारतवर्ष की भाँति खीवाँत में भी महम्मू के हाँको से नष्ट कर दिया गया था।

अलबेस्नी ने अरबी भाषा में लगभग 20 पुस्तकें लिखी हैं परंतु उनमें से तारीख उल हिंद अधिक प्रसिद्ध है। भारतीय प्रमाणों से पता चलता है कि इस पुस्तक की रचना 30 सितम्बर 1930 ई० के बीच की गई थी। इस पुस्तक में जातीय पक्षपात का अभाव है।

अलबेस्नी गीता के उपरान्त में बहुत प्रभावित हुआ था। वह पहला मुसलमान था जिसे इस पुस्तक का मुसलमानों के सामने रखा। उसने अपनी पुस्तक में रामायण, महाभारत मानव प्रमाणों के साथ पतजलि गीता, विष्णु और पुराण आदि स्मृतियों के अध्यायों के अवतरणों का उल्लेख किया है। उसकी मृत्यु 1048 ई० में हुई।

तारीख उल - हिंद

अलबेस्नी ने अपनी इस पुस्तक में हिंदुस्थान का आच्छो दखा विवरण लिखा है। यह पुस्तक भाग्य की धार्मिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक परम्पराओं पर प्रकाश डालती है। उसने अपनी पुस्तक में यहाँ की महकों नदियों नामों एवं सिक्का आदि का विस्तृत वर्णन किया है। इस पुस्तक में 80 अध्याय

हैं। प्रथम अध्याय में साधारण परिचय दिया गया है। द्वितीय में बाह्य एवं अन्तर्गत धार्मिक एवं सामाजिक विषयों का वर्णन है। तैरहवें से सत्रहवें तक गृहस्थ, व्रतविवाहा, एवं प्रचलित अंधविश्वासों का वर्णन है। अठारहवें में इतनीमें अध्याय तक गणित, भूगोल एवं पौराणिक बातों का वर्णन है। अन्तिममें से दसठवें अध्याय तक ज्योतिष एवं धार्मिक परम्पराओं (नारायण और रामेश्वर) का वर्णन है। अन्तिममें से छियात्तवें अध्याय तक स्त्रीहारों का नूना गिष्टाचार परम्पराओं एवं हिन्दुओं के उपवास के दिनों का वर्णन है। अन्तिममें से अन्तिम अध्याय तक ज्योतिष में सम्बन्धित विषयों का वर्णन है।

अन्तिममें न भारत की धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं का वर्णन करने में लिखा है कि 'हिन्दू महान् सामाजिक अन्धे गणित और ज्योतिष के ज्ञानकार थे।' उसमें उनकी भूरी भूरी प्रशंसा की है। अन्तिममें ईश्वर में श्रद्धा और विश्वास रखना था। उसमें अपनी इस पुस्तक का लेखन कायममान करने में समय ईश्वर में विश्वास प्रकट करते हुए कहा था कि "यदि इसमें कोई बात सत्य गणित में हो तो ईश्वर उसके लिए मुझे क्षमा करें।" उसमें भारत के हिन्दुओं की सामाजिक धार्मिक एवं सामाजिक रूपों का प्राथमिक विवरण लिखा है।

1- हिन्दुओं की विदेशियों के प्रति घृणा

अन्तिममें न हिन्दुओं की विदेशियों के प्रति घृणा का वर्णन करते हुए लिखा है कि भारतवर्ष के हिन्दू विदेशियों की "भेद" कहकर उनसे घृणा करते थे। वे उनके साथ खाना पीना बँठना, विवाह या अन्य किसी प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करना नहीं चाहते थे। उनकी मान्यता थी कि वे इसमें भ्रष्ट हो जायेंगे। 'अन्तिममें न महमूद के भारतवर्ष पर किये गये आक्रमणों के बारे में लिखा है कि "महमूद न भारत के वैभव को सबका नष्ट कर दिया।" उसमें आगे लिखा है कि हिन्दुओं का विश्वास था कि उनके समान कोई देव नहीं था, कोई राजा नहीं था, कोई धर्म नहीं था, कोई विज्ञान नहीं लेकिन यह उनकी सुखता और अहंकार था। भारतवर्षी विदेशियों के कहने पर विश्वास नहीं करते थे और समुद्री यात्रा के समय नहीं थे। इस समय हिन्दुस्तान का विदेशों से सम्पर्क टूट चुका था।

2- हिन्दुओं की सामाजिक दशा

(1) जाति व्यवस्था - अन्तिममें न लिखा है कि हिन्दू समाज का आधार जाति व्यवस्था थी। उस समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र ये चार वर्ग थे। व्यक्ति के जन्म में ही उसकी जाति एवं व्यवस्था निश्चित हो जाता था। उस समय जाति व्यवस्था के नियम बहुत कठोर थे। एक जाति का व्यक्ति दूसरी जाति में विवाह नहीं कर सकता था। यहाँ तक

कि अथ जाति के लोगो के साथ भोजन भी नहीं कर सकता था । इस समय तक जाति प्रथा के गुण प्रायः लुप्त हो गये थे ।

(ii) वर्णाश्रम व्यवस्था - यहाँ की सामाजिक व्यवस्था का प्रमुख आधार वर्णाश्रम व्यवस्था थी । व्यक्ति का जीवन चार आश्रमों में (ब्रह्मचर्य आश्रम गृहस्थाश्रम वानप्रस्थाश्रम एवं सन्यास आश्रम) में विभाजित था । प्रत्येक आश्रम 25 वर्ष का था । ब्रह्मचर्याश्रम में विद्यार्थी गुण के पाम रहकर वेदा तथा अथ धार्मिक प्रथा का अध्ययन करता था । गृहस्थाश्रम में विद्यार्थी विवाह कर गृहस्थी जीवन व्यतीत करता था । इसके पश्चात् 50 वर्ष की आयु में गृहस्थाश्रम को छोड़कर वानप्रस्थाश्रम के लिए वन की ओर प्रस्थान कर जात थे और अंत में मोक्ष की प्राप्ति हेतु सन्यास ग्रहण कर लेते थे ।

अनर्त्तनी ने लिखा है कि उस समय समुद्री यात्रा बहुत बड़ा पाप माना जाता था । ब्राह्मणों का काय धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करवाना था । हिन्दू भी मांस खाते थे परंतु गौ मांस सर्वथा वर्जित था ।

(iii) विवाह - अनर्त्तनी ने लिखा है कि 'युवावस्था में विवाह किये जाते थे जिसका प्रबंध माता पिता करते थे । सगीत और निकट के नातदारों में विवाह करना निर्बंध था ।' विवाह के अवसर पर जा चीजें प्राप्त होती थीं जो लड़कों का ही नहीं जाती थीं । उस समय तनाक प्रथा का प्रचलन नहीं था । पति पत्नी केवल मरन पर ही जुग हो सकते थे । सजातीय विवाह होता था । यह पत्नी प्रथा प्रचलित थी । अनुलाम विवाह होते थे परंतु प्रतिलौम विवाह नहीं होता था । विधवा विवाह नहीं कर सकती थी । उस समय विधवाय या तो अजीवन विधवा जीवन बिताती थी या फिर सती हो जाती थी । राजाओं की रानियाँ सदैव सती होती थीं । लोग मुत्तान पुष्कर वनारस मथुरा और धानेश्वर आदि तीर्थ स्थानों की यात्राएँ किया करते थे ।

(iv) मृतक संस्कार - मृतक शरीर को मन्नादारण के साथ जलाया जाता था और उनकी हड्डियों को गंगा में बहा दिया जाता था । तीन वर्ष से कम आयु के बालक की मृत्यु होने पर उसे टफना दिया जाता था ।

(v) अथ सामाजिक परम्पराएँ - हिन्दू धर्म के नाम पर उपवास करते थे एवं व्रत आदि भी रखते थे । उन्मत्तों के भी निश्चित नियम थे । पिता की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र उसका उन्मत्त अधिकारी होता था । उस समय तायानय भी थे । व्यक्ति अपनी गिकायत

यायाधीन के सामने प्रस्तुत कर सकता था। अलबेस्नी को हिन्दुओं के कई रीतिरिवाज बड़े अजुबे लगे, जिनका बगन उमने अपनी पुस्तक में किया है जैसे कि हिन्दू जब किसी दूसरे व्यक्ति के घर में प्रवेश करना था तब उस समय उमकी स्वीकृति नहीं लता था परन्तु जात समय स्वीकृति प्राप्त करता था।

3- धार्मिक दशा

अलबेस्नी ने लिखा है कि उस समय ब्राह्मण धर्म प्रबलित नहीं था तथा वैश्व मत और बौद्ध मत का प्रचलन भी नहीं था। यहाँ के लोग विष्णु या नारायण की उपासना करते थे। हिन्दू 'ईश्वर' को सृष्टि का रचयिता मानते थे। उनका आत्मा एक पुनर्जन्म में विवास था। अलबेस्नी ने लिखा है कि 'हिन्दुओं का विवास था कि स्वर्ग और नरक की प्राप्ति उनके भ्रष्टे और बुरे कार्यों पर निर्भर है।' हिन्दू अपनी मुक्ति के लिये हर संभव प्रयास करते थे। अलबेस्नी ने लिखा है कि "हिन्दू अपने दबी देवताओं की आराधना करते थे।"

4 साहित्य एवं विज्ञान

अलबेस्नी हिन्दुओं के विज्ञान साहित्य एवं विज्ञान के ग्रन्थों को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उमने वन तथा अग्नि ग्रन्थों का अध्ययन किया। इनके पश्चात् उमने वनों तथा पुराणों के बारे में लिखा कि "हिन्दुओं के पास विज्ञान की तमाम गारवाओं की अनको पुस्तकें हैं। कोई इन सबके नाम से जान सकता है और खामशीर पर जबकि वह हिन्दू न हो, अपितु एक विदेशी हो।"

अलबेस्नी ने अपनी पुस्तक के अंतिम अध्यायों में हिन्दुओं के ज्योतिष एवं खगोल शास्त्र के बारे में बहान किया है। उमने लिखा है कि हिन्दू अपनी पुस्तकें किसी खाम बक्ष की पत्तियों पर लिखा करते थे जिनको "पौपी" कहा जाता था।

अलबेस्नी ने विष्णु पुराण, रामायण महाभारत, विष्णु धर्म, बराह-मिहिर, आयुभट्ट आदि की पुस्तकों का बहान किया है। उसने कुछ उदाहरण गीता से भी दिये हैं।

5- स्थापत्य कला

अलबेस्नी मुसलमान होने के कारण उमकी कला के प्रति विशेष रुची

नहीं थी फिर भी उमने कहीं कहीं थोड़ा भवना मन्दिरों और मूर्तियों के तारे म वणन किया है । अलबतनी न उत्तरी भारत क थोड़ा विहागे का भी वणन किया ह । उमने लिखा है कि हिन्दू मन्दिरों के पास उड़े उर तालाबों का निर्माण करवाया जाना था ताकि व स्नान करने के प चात ही मन्दिरों म प्रवण तर ।

6- राजनीतिक स्थिति

अलबतनी न उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति का वणन किया है । भारतवष छोटे छोटे राज्या म विभाजित था । उनम एकता का अभाव था । मद्रम गजनवी का पञ्जाब पर अधिकार हा चुका था । भारतीय गामका व सकीण विचार थे डमनिय उहोने विदेगी आक्रमणकारियों को निकालन के लिए कोई संयुक्त सुरक्षा का प्रयाम नहीं किया । आनन्दपाल युद्ध म अकेला ही नडा एव पराजित हुआ । यही हान दूमर गामका का भी हुआ । काश्मीर स्वतंत्र राज्य था । सिंध पर अरबों का अधिकार था और यह छोट छोट भागों मे विभक्त था । गुजरात म सोलरी राजपूत शासन कर रहे थे । महमूद के मोमना २ पर आक्रमण का गुजरात पर कोई स्याई प्रभाव नहीं पडा । मालवा पर आक्रमण का गुजरात पर कोई स्याई प्रभाव नहीं पडा । मालवा पर परमार वण का शासक भोजदेव शासन कर रहा था । अलबतनी ने राजा भोज और मालवा की राजधानी के बारे म लिखा है । कनाज एक अय महत्वपूर्ण राज्य था परन्तु महमूद ने उसे ध्वस्तकर दिया था ।

अलबतनी १ लिखा है कि कन्नौज के आस पास के प्रदेश को "मय प्रदेश" कहा जाता था । उमने ग्वालियर और कालिंजर के दुगों का वणन किया है साथ ही उज्जयिनी और भिलसा आदि प्रसिद्ध स्थानों का एव मराठा देश का भी वणन किया है ।

अलबतनी न लिखा है कि पश्चिमी, पहाडी प्रदेश म अज्ञान जातिया रहनी थी । पूर्वी राज्यों मे अलबतनी ने बनारस पाटलिपुत्र और मुंगर का विवरण ही लिया है । उमने उत्तरी भारत की कई नदिया का वणन किया है । परन्तु दक्षिण के राज्या का वणन नहीं किया है ।

7- आर्थिक दशा

अलबेनी ने लिखा है कि भारत आर्थिक दृष्टि से समृद्ध था। यद्यपि विन्ही व्यापार कम हो गया था। परन्तु आर्थिक दशा फिर भी अच्छी थी। मंदिरों में अर्पण धन अनग्रहित था। आंतरिक व्यापार का बहुत विकास हो चुका था। मुद्रा का प्रचलन था। नापतौल के नियम निश्चित पैमाने में हुए थे। सोना एवं चांदी आदि को तोला एवं मापा में तोला जाता था।

राजा प्रजा से जा कर वसूल करता था। उन्ने यह जनहित कार्यों पर खर्च करता था। अलबेनी ने लिखा है कि "नाचने और वैश्यावृत्ति करनेवाली औरतों पर कर लगाया जाता था।" राज्य की आय का मुख्य साधन भूमिकर था, जो उपज का 1/6 भाग था। विभिन्न व्यवसायों में लग लागों को व्यावसायिक कर भी देना पड़ता था। ब्राह्मण वर्ग को समाज में विशेषाधिकार प्राप्त थे। सक्षेप में अलबेनी का विवरण सत्य और महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।



ताज उल मासिर के लेखक हसन निजामी का जन्म 1164 65 ई० में हुआ था। वह निमापुर का निवासी था। उसने 1205 ई० में ग्रंथ निम्ना प्रारम्भ किया। सब प्रथम उसने 1191 से 1217 ई० तक का हाल निमा और बाद में 1229 ई० तक का हाल और जोड़ दिया। इस प्रकार इस पुस्तक की पाण्डुलिपि से 1229 ई० तक की घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

लेखक के बारे में हम विस्तृत जानकारी प्राप्त नहीं होती। सिर्फ इतना पता चलता है कि मध्य एशिया में मुगलानों का आक्रमण उठने में वह भागकर गजनी गया किंतु वहाँ नौकरी नहीं मिलने से वह नौकरी से वह तहरीर चला गया। इसके पश्चात् इल्तुतमिश के समय वह इल्तुतमी में आकर आया गया और यही इस पुस्तक के लेखक का पूरा नाम है। इस ग्रंथ से हम मुहम्मद गौरी के आक्रमण के समय की भारत की स्थिति कुतुबुद्दीन ऐबक और इल्तुतमिश के प्रारम्भिक वर्षों के इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

लेखक ने पुस्तक को अलफारिक भाषा में लिखा है। जबकि उसने आखिरी देखी घटनाओं का वर्णन लिखा है 'इसलिये उसने ग्रंथ का महत्व उद्धृत किया है। उसके द्वारा दी हुई घटनाओं की तिथियाँ एवं उनके विषय में ऐतिहासिक तथ्य सही प्रतीत होते हैं। उसने अपनी पुस्तक में अनेक दरबारी मामलों का भी वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त अनेक राजकीय समारोहों का भी वर्णन मिलता है जिससे हमें उस समय की सांस्कृतिक दशा के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

ग्रंथ के दोष -

- (i) इस ग्रंथ में ऐतिहासिक विवरण बहुत कम है।
- (ii) इस ग्रंथ की भाषा बहुत ही क्लिष्ट एवं अलफारिक है जिससे कहीं कहीं लेखक के वास्तविक तात्पर्य को समझने में बहुत कठिनाई होती है।

मूल्यांकन - इन दोषों के होने हुए भी हम इस ग्रंथ से पता चलता है कि उस समय के विद्वान किस प्रकार की भाषा का महत्त्व देते थे। इसमें हम उस समय की साहित्यिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक दशा के बारे में महत्वपूर्ण भाँकी मिलती हैं।

काजी मिनहाज-उस-मिराज तबकात-ए-नासिरी

काजी मिराज अपने समय का बहुत बड़ा विद्वान था। उस समय के प्रभावशाली तुर्क अमीर उसके दोस्त थे। यही कारण था कि ग़मसुद्दीन की मृत्यु के पचास राजनीतिक उथल-पुथल में बड़े मुलतान बढ़ने परन्तु उसका राजनीतिक प्रभाव बना रहा। उलुग खा की कृपा में वह राज्य का सर्वोच्च पदाधिकारी बन गया था।

मिनहाज न तबकाते नासिरी मुलतान इल्तुतमिश के पुत्र और रजिमा के उत्तराधिकारी मुलतान नामिरुद्दीन महमूद को समर्पित की। इसमें 13 अध्याय हैं। भारतवर्ष का इतिहास अतिम दो अध्यायों से प्राप्त होता है। मिनहाज न मुलतान ग़मसुद्दीन इल्तुतमिश के राज्यपाल से लेकर मुलतान नामिरुद्दीन के राज्यपाल के पाँचहत्तें वर्ष तक की ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया है। इस ग्रन्थ का महत्व इमलिय अधिक है क्योंकि लम्बक न घटनाओं का वर्णन स्वयं की जानकारी के आधार पर निरखा है।

मिनहाज काजिए ममालिक के पद पर नियुक्त था। साथ ही देहली के मुख्य मदारसेना अय्यक भी था। जिसकी वजह से उस राज्य की लगभग सभी घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती रहती थी। उसने दिल्ली के मुलतानों के साथ - साथ अमीरा तथा मलिका का हाल भी लिखा है। उसके इस ग्रन्थ से हम अमीरा व पडयत्र, चरित्र विद्या तथा धर्म से प्रेम आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती हैं। जिसका वर्णन ग्रन्थ मध्यकालीन इतिहासों में बहुत कम है। इस सम्बन्ध में उसने भावी लेखकों का पथ प्रदर्शन किया है। मिनहाज सिंगरज कजा तथा हिस्वा का अध्ययन था। यद्यपि वह एक धर्मनिष्ठ मुसलमान था तथापि बरनी की तरह उसने अपने ग्रन्थ में धार्मिक कट्टरपन का प्रदर्शन नहीं किया है। मिनहाज न विद्रोही हिन्दू शासकों की आलोचना की हैं लेकिन विद्रोही मुसलमान अमीरों की भी प्रशंसा नहीं की।

ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रन्थ का महत्व - मिनहाज एक लम्बे समय तक भारत वर्ष में रहा इतलिये उसे यहाँ की राजनीतिक व्यवस्था की अच्छी जानकारी थी। वह तुर्कों सामन्तों के बहुत नज़दीक था इमलिये उसे घटनाओं की सारी जानकारी

प्राप्त हो जाती थी। चूँकि वह समकालीन लेखक है इसलिए उसके ग्रन्थ में आदि-तुककालीन भारत के इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। अतः ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

ग्रन्थ 'की' प्रमुख विशेषताएँ - तबक़ात नामिरी की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित हैं।

(i) **घटनाओं का क्रमबद्ध रूप से वर्णन -** मिनहाज ने यह पुस्तक स्वयं के निरीक्षण और विश्वमनीय यक्तियों की सूचना को आधार बनाकर लिखी है। उसमें लगभग सभी घटनाओं की तिथियाँ सही सही दी गई हैं। इसके अतिरिक्त उसमें घटनाओं का वर्णन क्रमबद्ध रूप से किया है।

(ii) **घटनाओं की पुनरावृत्ति -** यद्यपि लेखक ने घटनाओं का वर्णन सही किया है परन्तु कुछ घटनाओं का वर्णन कई स्थानों पर अनेक बार किया है। जिसे वजह से तबक़ात नामिरी में एक ही घटना का कई बार वर्णन मिलता है।

(iii) **लेखक में निष्पक्षता का अभाव -** मिनहाज मिराज के दिल्ली के सुलतानों के अतिरिक्त दरबारी सामंतों के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध थे। सुलतान इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात् उत्तराधिकार के लिये जो मध्य हुआ उसमें दरबार दो दलों में विभाजित हो गया।

प्रथम दल ताजिक सामंतों का एक द्वितीय दल तुर्क सामंतों का। मिनहाज ने तुर्क दल का समर्थन किया था। इसलिए उसने इतिहास लिखते समय पक्षपात किया इसका कारण यह था कि जब ताजिक सामंतों का उत्थान हुआ तो उन्होंने मिनहाज का नौकरी से निकाल दिया। इसलिए उसने दो वर्षों तक बग़ाल की राजधानी लखनौ में रहना पड़ा। जब तुर्क दल पुनः सत्ता में हुआ तो उसने मिनहाज का काजी के पद पर नियुक्त कर दिया। अतः उसने घटनाओं का वर्णन करते समय पक्षपात किया है।

(iv) **घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन -** यद्यपि मिनहाज मिराज एक समकालीन लेखक था और लगभग सारी घटनाएँ उसके सामने घटित हुई थीं। परन्तु फिर भी उसने घटनाओं का वर्णन विस्तृत विवरण न कर संक्षिप्त वर्णन किया है। उस समय के अन्य समकालीन ग्रन्थों के अभाव के कारण उसका यह ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

(v) **दरबारी सामंतों का वर्णन -** मिनहाज मिराज ने अपने ग्रन्थ के वाइसके अध्याय में इल्तुतमिश के दरबारी सामंतों की जीवनी का वर्णन किया है जिससे हम दरबारी सामंतों की राजनीतिक स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। उसने बसबस की जीवनी का विस्तृत विवरण दिया है।

कभीकि उमदन मिनहाज का बहन प्रो माहन देना था । एमादुदीन ईहामात्रा बलबन का विरोधी था, की जीवनी का भी विस्तृत विवरण दिया है ।

मिनहाज न जीवनिमा के बगन में भी निष्पक्षता का प्रदशन नहीं किया है । इसका कारण यह था कि वह एक बट्टर मुसी मुसलमान था इमलिय प्रवार के उन सामना का हीन दष्टि में दगता था । जा नये नय मुसलमान बन थे । उमका मानना था कि मार अधिवार उध वग के तुकों के हाथ म रहन चाहिय । एमादुदीन रैहान के गतिगानी हा जान म मिनहाज का चहैता स्वामी उलुग का का पनन हा गया था जिमकी बजह म उम काफी बष्ट भोगन पड । इमलिय उमन रैहान की निदा करत हूए लिखा कि उमके भवगुणा का मुख्य कारण यही था कि वह सुववर्गीय न होकर एक हिन्दुस्नानी था । अन म मिनहाज मिराज का नहीं अपितु उमके समय की विशेष परिस्थिति का कारण समझना चाहिय ।

मिनहाज मिराज ने यही सरल भाषा म अपना ग्रथ लिखा है । उमन ममस्त घटनाया का बलन क्रमवद्धरूप में किया है । उमके ग्रथ में पता चलता है कि वह घटनायो का ममझा और उनका उन्वेय करन म रहन प्रवीण था । ममकानीन राजनीति क विषय म भी उमन अपन विचार यत्त किय है । रबनुदीन की हत्या क बगन के मार उमन लिखा है कि ' वाग्गाहा म मभी बातें विद्यमान हानी चाहिय जिमस प्रजा तथा नावकर मतुष्ट रह सक । भोगविलास एव दुराचारियो स मन क कारण राज्य का पनन हो जाता हैं । '

रजिया क मार म उमन लिखा है कि ' उमम वाग्गाहा के याग्य सभी गुण विद्यमान थ कितु भाग्य न उम गुण्य न बनाया था अन उमने ममस्त गुण उमके लिय कुछ भी लाभप्रद नहीं थे । '

मिनहाज मिराज एन मुनन कयि था । मुनतान मुन्जुदीन महराम गाह के मिहागनागोहण की बधाई एव मुनतान नामीरुदीन के राज्याभिषेक के समय उमन कुछ कविताया की रचना की जिनकी नवल तरफान नासिरी में है । उमन ' नामिरी नामा ' नामक एक अय कविता की भी रचना की जो भव उपनय नहीं है ।

तबनाते नासिरी की हस्तलिखित प्रतिया यूरोप तथा भारतवप के ममस्त पुस्तकालयो में उपलब्ध है । इस ग्रथ का सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद मेजर एच० जी० रैवर्टी न किया है । मिनहाज की यह रचना इलियट के इतिहास के द्वितीय खण्ड म अनुन्त हैं ।

मूल्यांकन - उस समय का ग्रंथ कोई समकालीन स्त्रीत नहीं होने से तबकाते नासिरी एक महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। मिनहाज न हमन निजामी की भाँति अलकारिक भाषा का उपयोग न कर अपनी पुस्तक को सरल एवं साधारण भाषा में लिखा है। इसलिये बाद के सभी इतिहासकारों ने उसके ग्रंथ को आधार बनाकर अपने ग्रंथों की रचना की। संक्षेप में आधुनिककालीन भारत का इतिहास जानने के लिये तबकाते नासिरी एक अद्वितीय ग्रंथ है।

अमीर खुसरो का वास्तविक नाम मुहम्मद हसन था जो इतिहास में अमीर खुसरो के नाम से प्रसिद्ध है। वह फारसी का सर्वश्रेष्ठ कवि था उसका जन्म इटावा जिले (उत्तरप्रदेश) के पटियाना नामक गांव में 12९4 ई० में हुआ था। उसका पिता सफ़रीन मेहमूद तुक था। जो इल्तुतमिश और उसके उत्तराधिकारियों के शासनकाल में उच्च प्रशासनिक पदों पर कार्य कर चुका था। उसकी माता एक उच्च पदाधिकारी इमादुलमुल्क की पुत्री थी। बाल्यकाल से ही खुसरो को फारसी भाषा में कविता करने में बड़ी रुचि थी। 12 वर्ष की आयु तक वह एक परिपक्व कवि बन गया था। वह गीत लिखन में भी कुशल था।

अमीर खुसरो ने बलबन के राज्यकाल में उसके भाई किली खा के यहां नौकरी कर ली एवं उसकी प्रशंसा में अनेकों कसीदों की रचना की। इसके पश्चात् वह बलबन के छोटे पुत्र बुगरा खा की सेवा में चला गया जो समाना (पंजाब) का गवर्नर था। वह बलबन के बड़े पुत्र मोहम्मद के पास पांच वर्ष तक मुतान में भी रहा था। जब 1284 - 85 ई० में माहम्मद मंगला के विरुद्ध युद्ध करता हुआ मारा गया तो वह उनके द्वारा पकड़े बना लिया गया। उनकी कैद में मुक्त हो जाने में मुहम्मद जुदीन बंशुखान के दरबार में कवि के पद पर नियुक्त हो गया। उसी समय खुसरो ने अपनी पहली मसनवी "किरातुस्मादन" की रचना की।

जनाउद्दीन खिलजी ने खुसरो को "भारत तुंग" की उपाधि प्रदान की। इस प्रकार बलबन से चकर गया मुद्दीन तुगलक के समय तकके मुतानों के दरबार में दरबारी कवि रहा था। उसमें कई प्रसिद्ध रचनाएँ रचीं। वह शेख जिनामुद्दीन आलिया का शिष्य था। खुसरो की 1३25 ई० में मृत्यु हो गई और उस शेष की राश के पास ही दफना दिया गया। वह हिन्दी भाषा का भी कृत धर्या कवि था परन्तु उसकी हिन्दी की रचनाएँ अब उपलब्ध नहीं हैं।

अमीर खुसरो की रचनाओं से जनाउद्दीन खिलजी से लेकर गया मुद्दीन तुगलक तक के शासनकाल की घटनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

अमीर खुसरो की कृतियाँ

(1) किरास्नुसादेन - इस मसनवी (कविता) की रचना अमीर खुसरो ने सुलतान मुइजुद्दीन क़ुतुबुद्दीन (1287-90 ई०) के आदेशानुसार की। यह अमीर खुसरो की पहली मसनवी थी। इस रचना के समय उसकी आयु 36 वर्ष की थी। इस कविता में उसने बंगाल के शासक बुगरा खाँ और उसके पुत्र सुलतान मुइजुद्दीन क़ुतुबुद्दीन के बीच अन्धकार में हुई भेंट का वर्णन किया है। इसमें हमें उस समय की सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दशा के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। दरबार का वैभव और ऐश्वर्य, दहली नगर की दशा दरबारी सामन्तों एवं पदाधिकारियों के पारस्परिक व्यवहार, किनोल्डी नगर के राजप्रामाद का निर्माण आदि का विस्तार में वर्णन किया गया है। यह कविता नामीरुद्दीन बुगरा खाँ और क़ुतुबुद्दीन के चरित्र पर भी प्रकाश डालती है। इसका ऐतिहासिक महत्व इस बात में निहित है कि यह दरबारी सामन्तों के राजनीतिक प्रभाव पर प्रकाश डालता है। इससे पता चलता है कि उस समय दरबारी सामन्त कितने शक्तिशाली हो गये थे और वामशाह पर उनका कितना प्रभुत्व था। इस वश के पतन की भाँकी भी हमें उसकी इस रचना में देखने को मिलती है।

इस प्रकार अमीर खुसरो ने एक आधारभूत घटना के वर्णन में उस समय की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थिति को स्पष्ट कर दिया है।

(2) आशिका - आशिका का 'मंगूरे गाही' अथवा इश्किया भी कहा जाता है। इस कविता की रचना अमीर खुसरो ने सुलतान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी (1316-20 ई०) के शासनकाल में 1316 ई० में की। इसमें सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के बड़े पुत्र राजकुमार खिज़्र खाँ और देवलदेवी (गुजरात के राजा कए की पुत्री) की प्रेम कहानी का वर्णन किया गया है। जिस समय अमीर खुसरो ने इसकी रचना की उस समय खिज़्रखाँ के साथ देवलदेवी भी खालिजर के दुर्ग में कैदी थीं। सुलतान कुतुबुद्दीन देवलदेवी को अपनी रानी बनाना चाहता इसलिए उसने अपने भाई खिज़्रखाँ को अर्धा करवा लिया और बाद में उसकी हत्या करवा दी। खिज़्रखाँ की मृत्यु के पश्चात् अमीर खुसरो ने इस कविता में उसका शेष हाल भी लिखा है।

अमीर खुसरो ने 'आशिका' के प्रारम्भ में लिखा है कि उसने इस कहानी की रचना राजकुमार खिज़्रखाँ के आग्रह पर की। इस कहानी से संबंधित घटनाओं की जानकारी उसे महल की एक तामी न दी। इस पुस्तक के प्रारम्भ में अलाउद्दीन के वैभव एवं दिल्ली नगर का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् खिज़्रखाँ का देवलदेवी से विवाह के लिये अलाउद्दीन से भगडा और उससे विवाह का विवरण दिया है। जिसमें हम उस समय की सामाजिक और सांस्कृतिक

स्थिति के प्रारंभ में जानकारी प्राप्त होती है। अनाउदीन के आस्था के मामल उमके बड़े बेटे खिज्ज खा का पतन, मलिक काफूर द्वारा उसे घाया किया जाना एक घत में मृत्यु का वगन किया गया है। जिजाउदीन दरनी ने लिखा है कि कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी न खिज्ज खा की हत्या इमलिय बरवाई थी क्योंकि उसने उमके खिलाफ पढ्यत्र रचा था परन्तु अमीर खुमरो ने इस ममनवी में स्पष्ट लिखा है कि मुलतान कुतुबुद्दीन दवलरानी को अपने हरम में सम्मिलित करता चाहता था परन्तु खिज्ज खा द्वारा इकार करने पर उमने उमकी हत्या बरवाई थी।

अमीर खुमरो की इस रचना का प्रसिद्ध इतिहासकार प्रार० मी० मज्मू'र ऐतिहासिक कृति मानने के पक्ष में नहीं है। उनका मानना है कि यह एक साहित्यिक रचना की मनगढ़त कहानी है और इसमें खिज्ज खा के इतिहासिक दृष्टि से मूल्य नहीं है। परन्तु उनका यह उनका कथन सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि फारसी भाषा में प्रेम का आभा का अन्तर ममनवी लिखना उम समय एक साधारण बात थी। अमीर खुमरो घटना का एक ममकालीन कवि था और रचना के समय उमने नगमग सभी पात्र जीवित थे। इसके अतिरिक्त उसने खिज्ज खा के विवाह की तिथि विवाह के समय की गर्भ मजावट एक उम समय उपस्थित मामलों के नाम एक खिज्ज खा की मृत्यु का घण आदि बातों का उल्लेख किया है। इसमें इस कृति का ऐतिहासिक महत्व बढ जाता है। इसमें प्रारंभिक मामलों के पढ्यत्र का विस्तारपूर्वक कृतांत है। जैसे कि खिज्ज खा के समुद्र घण खा का मलिक काफूर में भगडा होना और काफूर द्वारा खिज्ज खा को गरी में उनागन का प्रयास आदि घटनाओं का विस्तार से बणन है। यह बणन दरनी की तारीख ए फीरोजशाही से भी मिलता है इसका अतिरिक्त खिज्ज खा और दवलरानी की प्रेम कहानी का बणन इन्तवतूता न भी किया है इसलिये पुस्तक को निना न साहित्यिक रचना कहना उचित नहीं है।

(3) खजाइनुल फतूह या तारीख - ए - अलाई - अमीर खुमरो की यह रचना अम मखजाइनुल फतूह का एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इस पुस्तक की रचना उमने 1311 ई० में की। "तारीख - ए - अलाई" एक गद्यात्मक रचना है जिसे खजाइनुल फतूह भी कहा जाता है इस ग्रंथ में कृत्रिमता काफी है लेकिन जा ठोस जानकारी उपलब्ध है उमें दखत हुए 'हम कृत्रिमता को धमा कर सकते हैं (1) 'लेखक ने ग्रंथ में कई स्थानों पर हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया है। इससे पता चलता है कि हिन्दी उमें बहुत पहच थी। इस बात का महत्व इसलिये अधिक है क्योंकि उम समय के मुस्लिम लेखक हिन्दी शब्दों का प्रयोग करना पसन्द नहीं करते थे। खुमरो ने तिथियाँ नहीं दी हैं।

(1) इलियट एव डाउसन भारत का इतिहास (तृतीय खण्ड) पृष्ठ 45

अमीर खुसरौ प्रसिद्ध इतिहासकार उरुही का मिन था। उरुही १ अरब
 प्रथम घटनाओं की पुष्टि के लिये स्थापना-स्थापना पर खुसरौ के प्रथम का इतिहास
 दिया है। राजा इब्राहिम खान नामक प्रथम निम्न रत्न भागों में विभक्त है 1- प्रस्तावना
 2- प्रस्तावकीय मुद्दाओं और सावधानीय काय 3- मंगला का विस्तृत अभियान
 4 हिन्दुस्तान की विजय 5 यात्रा अभियान एवं 6 मारु अभियान।
 इस प्रथम में हम अलाउद्दीन गिलजी के गज्यारोहण (1296 ई०) में अरब मारु
 विजय (1310 ई०) तक की घटनाओं का धार में जानकारी प्राप्त होती है। प्रथम
 का एक प्रमुख भाग अरब भारतवर्ष की विजय के लिये विद्यमान पर
 प्रकाश डालता है डॉ० एच० एच० गिलजी ने लिखा है कि राजा इब्राहिम अभियानों
 का इतिहास है यह तिथि एवं घटनाओं की श्रुतियाँ मंगली है और इसमें
 हम अलाउद्दीन के सामनवाज के तिथिक्रम निश्चिन करने के धार में महत्वपूर्ण
 जानकारी प्राप्त होती है। इसमें कतिपय प्रस्तावकीय मुद्दों का भी बर्णन है
 परन्तु यह बर्णन अत्यन्त ही सविस्तर है। यह श्रेष्ठ की बात है कि उस युग की
 प्रवृत्तियों के अनुसार खुसरौ भी एक बहुरंगी मुसलमान था और जिन लोगों को
 वह काफिर समझता था उनमें विषय में विचार प्रकट करते हुए उमन अपनी
 धर्मा धना का परिचय दिया है।

अमीर खुसरौ ने यह पुस्तक उड़ी किशक तथा अलकारिक भाषा में
 लिखी है। सीधी-सीधी घटनाओं का भी उमन अलकारिक युक्त शैली में लिखा है
 जिसमें उमका आगय स्पष्ट नहीं होता। उमन मंगोली के आक्रमण का मही 2
 बर्णन नहीं किया है। इसका अर्थ यह नहीं कि खुसरौ की रचना का महत्व कम
 हो गया है। उमन घटनाओं की जा तिथियाँ भी हैं, वे मही हैं इस पुस्तक का
 महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि खुसरौ समकालीन कवि हैं और उरुही के इतिहास
 की घटनाओं की तिथियाँ भी इनमें जान हा जाती है।

(4) नूह सिपहर - अमीर खुसरौ की यह ममनवी (कविता) ऐतिहासिक तथ्यों
 से पूर्ण होने के कारण काफ़ी महत्वपूर्ण है नूह सिपहर का अर्थ होता है 'नव
 आकाश' चूँकि इस कृति के नीचे भाग है इसलिए अमीर खुसरौ ने इसका नाम
 नूह सिपहर रखा। अमीर खुसरौ ने 67 वर्ष की आयु में मुहम्मद कुतुबुद्दीन
 मुबारकशाह खिलजी के शासनकाल में 1318 ई० में इसका रचना की।
 पुस्तक के प्रथम भाग में उसने अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया की प्रशंसा मुहम्मद
 कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी का शासनकाल में कविता लिखने का कारण एवं
 मुबारकशाह का अपने पास खुसरौ का साथ देवगिरी पर अभियान आदि घट
 नाओं विस्तारपूर्वक का बर्णन किया है। द्वितीय भाग में कुतुबुद्दीन द्वारा दिल्ली में
 निर्मित भवन कारण एवं तैलगाना पर आक्रमण एवं दिल्ली नगर की प्रशंसा

का सविस्तार वर्णन है। तृतीय भाग महत्वपूर्ण है। सिंधु-गण्डक-संस्कृत-वर्द्धा।
 खुमरो ने इसमें भारतवर्ष की जलवायु, पशु पक्षी धार्मिक विचारों और जन भाषा का उल्लेख किया है। उसमें भारत की तुलना स्वर्ग व उद्यानों में की है। वही 2 तो वह भारत का अर्थ दर्शाते हैं श्रेष्ठ ठहरता है। यहां की भूमि के उपजाऊपन मार्ग और जनवायु की प्रशंसा करता है। यहां की उद्भूत चीजें उसे पसंद थी। उसमें यहां (भारत) का निवासियों को शीत प्राप्त था। उसमें लिखा है कि भारतवर्ष में अन्न भाषाओं को अन्न वात प्राप्त है। फिर भी उसमें कई वैमनस्य नहीं है।

वह पाश्चिमी के साथ गार्डर हिन्दी का भी उद्भूत प्रच्छा कवि था। उसमें लिखा है कि भारतवर्ष ज्ञान का भण्डार है। यहां बड़े बड़े विद्वान यन्त्रि निवास करते हैं। इसीलिए विद्वानों के योग यहां पर अध्ययन करने के लिए आते हैं जबकि इस देश का कोई भी यन्त्रि बाहर नहीं जाता। गणित शास्त्र का जन्म भारतवर्ष में आया। इसका जन्मस्थान आर्या नामक ब्राह्मण था। इसीलिए अरबी भाषा में गणित शास्त्र को "हिन्दू" कहा जाने लगा है। गणित नामक क्षेत्र भी भारतवर्ष में आरम्भ हुआ जिसका मन्वन्त नाम चतुरांग था। इसमें दोनों पक्षों के क्षेत्रों के मोहरे एक मुमुज्जित संज्ञा की भांति रंगे जाते हैं।

इस भाग में यहां के धार्मिक विचारों की रीतिरिवाज, एवं मौसम की प्रशंसा की गई है। मन्वन्त भाषा के ज्ञान में उसमें लिखा है कि यद्यपि वे अतिरिक्त विद्वानों की गार्गी ज्ञान की पुस्तकें मन्वन्त भाषा में हैं लेकिन हिन्दू इस ज्ञान का नाम नहीं उठाते। यही उनके पतन का कारण है। अमीर खुमरो मन्वन्त भाषा नहीं जानता था। इसीलिए उसमें बंदों का ज्ञान में लिखा है कि उनमें प्राचीन कहानियां लिखी हुई हैं।

चौथे भाग में अमीर खुमरो ने आर्याणा एवं साधारण जनता के लिये उनके उत्तरदायित्व के अनुसार शिक्षाओं का वर्णन किया है।

पांचवें भाग में उसमें अरबी भाषाओं को आर्याणा के प्रति स्वामीभक्त रहने की सलाह दी है। इस भाग में उसमें आर्याणा की मर गिराए, एवं भारतवर्ष की मरुत ऋतु का तथा अर्याणा का वर्णन किया है।

छठे भाग में मुबारकशाह के पुत्र राजकुमार मोहम्मद के जन्म का वर्णन है। सातवें भाग में उमैत ऋतु एवं राजकुमार माहम्मद के जन्म समारोह के समय की राजली की सजावट का वर्णन है।

आठवें भाग में अर्याणा का उल्लेख है जबकि नवें भाग में दिल्ली के समवालीन कविओं तथा उनकी भगवती (कविता) की विशेषताओं का वर्णन है।

यह मसनवी ऐतिहासिक दृष्टि में महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें दक्कन के वारंगल एवं तेलंगाना के शाही अभियानों तथा उस समय की शासन व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। चकि बरनी ने इन अभियानों का मक्षिप्त वर्णन किया है। अतः नूह मिर्हान का महत्व और भी बढ़ जाता है।

(5) तुगलक नामा - इस मसनवी (कविता) की रचना अमीर खुमरो ने 75 वर्ष की आयु में मुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के आदेशानुसार की। इसमें मुल्तान गयासुद्दीन तुगलक और खुमरो के बीच हुए युद्ध का वर्णन मिलता है। यह मसनवी मुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह बिलजी के शासनकाल से प्रारम्भ होती है। इसमें मुबारकशाह की विलासप्रियता, खुमरो खा की पदोन्नति, खुसरो खा का विश्वासघात एवं छल द्वारा मुल्तान की हत्या का वर्णन है। इसके पश्चात् गयासुद्दीन तुगलक जा पजाब का गवर्नर था, ने अपने स्वामी की हत्या का बदला किस प्रकार लिया उसका विस्तृत वर्णन है। गयासुद्दीन तुगलक का दिल्ली पर अधिकार एवं खुमरो की पराजय गयासुद्दीन तुगलक का दिल्ली में प्रवेश का वर्णन है। इस मसनवी के अंत में गयासुद्दीन तुगलक के राज्यभिषेक का वर्णन है।

यह मसनवी अमीर खुमरो ने बहुत सरल भाषा में लिखी है इसमें उत्तम साहित्यिक सौन्दर्य का अतिरिक्त ऐतिहासिक तथ्य भी मिले हैं। उत्तम युद्ध का आख्यायिका हाल लिखा है जिसकी जानकारी हम अन्य ग्रन्थों में नहीं मिलती। अमीर खुसरो ने युद्ध में दोनों पक्षों की आरंभ से भाग लेने वाले सामंतों के नाम दिये हैं। जिससे उस समय की राजनीतिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। अमीर खुसरो ने इस मसनवी (कविता) में हिंदी का प्रयोग किया है। उत्तम युद्धकाल के चित्र का वर्णन किया है जैसे उसकी यह पंक्ति "हाय हाय तीर मारा"।

यद्यपि मसनवी (कविता) ऐतिहासिक नामग्री में भरपूर है परन्तु इसका मूल्य उदात्त रूप यह है कि इसमें गयासुद्दीन तुगलक की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा की गई है। इसके अनुसार वह अपने अपार साहस के कारण ही खुसरो खा की पराजित करने में सफल हुआ। जबकि उसकी तारीख एफीराजशाही में पता चलता है कि खुसरो खा की हार इमतिह हूड बखानि घटना के समय तथा उसके पूर्व अपने मामलत अपना मतलब को हराकर ने मर फिर उसके साथ विश्वासघात किया। इसके अतिरिक्त खुमरो खा की मता में योग्य सलाह नापक नहीं थी। अमीर खुमरो ने खुमरो खा पर बहुत आगे लेगाय है और उसकी गलतियों का वर्णन नहीं किया है।

इन ऋटियों के बावजूद भी यह मानना पड़ेगा कि इस मसनवी का बहुत अधिक ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि यह समकालीन कवि के द्वारा लिखी गई है जो इतिहास की आवश्यकता को समझता था। बाद के इतिहासकारों ने खुसरू खा की घटना के त्रये तुगलकनामा को आधार बनाकर अपने-अपनी रचना की है।

इसके अतिरिक्त अमीर खुमरो के लैला मजनुमीरी व फरखर एवं आईते शिवरी आदि ग्रंथों की रचना की थी।

खुसरू का हिन्दी के क्षेत्र में योगदान

अमीर खुमरो सम्भवतः पहला भारतीय मुसलमान लेखक था जिसने अपनी रचनाओं में हिन्दी के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया। उसका दृष्टिकोण उत्तर था। उसने भारतीय विषय पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं।

संगीतज्ञ के रूप में - अमीर खुमरो प्रसिद्ध संगीतज्ञ भी था। उसे भारतीय संगीत से प्रेम था। उसने संगीतकला पर "आवाजे खुमरवी" नामक ग्रंथ लिखा। इसमें अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी संगीतकारों का विवरण दिया है। खुमरो ने भारतीय और ईरानी संगीत के सिद्धांत को समन्वय कर कुछ नये रागों का प्रचलन किया था। उसने कवाली का आविष्कार किया था। कविता गीता, तोसगीतो एवं गजना के लिये भी वह प्रसिद्ध है। उसने जिलाफ सजगीरी, सरफत तराना एवं ग्याल जैसी नयी रागें प्रचलित कीं। अमीर खुमरो ने भारतीय वीणा और ईरानी तम्बूर को मिलाकर सितार और तबले का आविष्कार किया था। मयकानीय मासट्रिक समन्वय में खुमरो का मराहनीय योगदान रहा।

अमीर खुमरो की रचनायें अलीगढ़ में प्रकाशित हुई हैं। शिवरी ने अपनी पुस्तक गार-उन अजम (द्वितीय खण्ड) में उसकी जीवनी एवं रचनाओं का आलोचनात्मक बणन किया है। इन्डियन एंड डाउन कृत भारत का इतिहास (तृतीय खण्ड) में खुमरो का कृतिया के उद्धरण उपलब्ध होते हैं। प्रो० जी ब्राउन कृत 'हिन्दी ऑफ पशियन लिटरेचर' के अतिरिक्त प्रो० मोहम्मद हबीब ब्रन अमीर खुमरो और उसके मरक्षक सान निजामुद्दीन औलिया ग्रंथ भी गोचर हैं। फारसी साहित्य के प्रथम इतिहास में खुमरो की रचनाओं का वर्णन है।

जियाउद्दीन बरनी : तारीख-ए-फीरोजशाही एव फतवाए जहादारी

प्रो० ह्यूज के अनुसार "व्यक्तिगत शोषों व रहस्य रूप भी बरनी ही हमारा तुगलकवालीन भारत का मुख्य इतिहासकार है। उसने शोषों श्रुतिया का उल्लेख किया जा सकता है किन्तु उसका इतिहास की उपाया नहीं की जा सकती क्योंकि उसने श्रमाव म हमारा मध्यकालीन इतिहास सम्प्रति क गान म बरनी कर्मी हो जायगी जिसकी पूर्ति सम्भव है।"

बरनी का संक्षिप्त जीवन परिचय

बरनी का जन्म 1285-86 ई० म हुआ। उस समय मुल्तान राजन शासन कर रहा था। बरनी ने अपनी पुस्तक 'तारीख ए-फीरोजशाही' की रचना 1357 ई० म पूरा की। उस समय उसकी आयु 74 वर्ष की थी। इसमें उलबन क शासनकाल के प्रारम्भ म लेकर फिरोज तुगलक क शासनकाल क छठे वर्ष (1357 ई०) तक का ऐतिहासिक विवरण है। बरनी का नाना सिपहमानार हुमायुद्दीन बलबन का विश्वमनीय व्यक्ति था उगवे पिता मुइद्दुन मुल्क और चाचा अलाउलमुल्क का जनाउद्दीन एव अनाउद्दीन बिनजी अच्छा सम्मान करत थे।

जियाउद्दीन बरनी ने वाक्यकाल म बड़े बड़े विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। वह अमीर खुमरो का मित्र था और खुमरो के गुरु शेष निजामुद्दीन औत्रिया का वह उडा भक्त था। यद्यपि बरनी एक धार्मिक व्यक्ति था तथापि उसकी धार्मिकता मुसलमानों के पक्ष म थी। वह धर्मनिरपेक्षता म विश्वास नहीं करता था। बरनी ने लिखा है कि उसे फीरोज तुगलक के शासनकाल म शत्रुघ्रा क कारण बड़े कष्ट भोगन पडे। उसकी अत्यन्त दीन अवस्था हो गई। कुछ समय तक उसने बरनी गह म रहकर कष्ट भोगे। (1)

बरनी ने अपने शत्रुओं की रचना फीरोज शाह क शासनकाल म की और अपनी पुस्तक फीरोजशाह की समर्पित की किन्तु मुल्तान ने बरनी को आर्थिक सहायता नहीं दी जिन वजह से उसका जीवन के अन्तिम समय म काफी कठिनाइयों का सामना करना पडा। भाग्य की विचित्र विडम्बना है कि जब बरनी की मृत्यु हुए उसका पाम कफन तक के लिये पैसा नहीं था शायकीय अवस्था म ही उसकी मृत्यु हो गई।

बरनी ऐतिहासिक स्रोत के रूप में

तुगलक वंश का मुख्य इतिहासकार बरनी है। उसने लिखा है कि 'इस तारीख-

1 Barani says Even the birds and fish are happy in their homes but I am not Now I am old and blind and confined to my corner helpless and poor with nothing but my regrets to feed upon and nothing to carry with me to the other world except my unfulfilled desires

जा-फीरोज़ाही का मकानकर्ता 17 यष 3 माम मक सुतान मुहम्मद के दरबार का सेवक रह चुका है। उसे मुलतान द्वारा अत्यधिक इनाम तथा धन सम्पत्ति प्राप्त हुआ करती थी। "एक अर्थ स्थान पर उमने लिखा है कि" मुलतान मुहम्मद न मुझे आश्रय प्रदान किया। वह मरा पोषक है, उसके द्वारा जो इनाम इकगम मुझे प्राप्त हो चुका है इतना न इसमें पूव मैंने दस्ता है और न इसमें उपरात स्वप्न म भी दखगा।

बरनी न इस बारे म कुछ नहीं लिखा कि वह मुहम्मद तुगलक के दरबार में किम पद पर नियुक्त था। सम्भवत वह नदीम के पद पर होगा। बड़े बड़े अमीर और उच्च पदाधिकारी उसके माध्यम से ही मुलतान का प्राचना पत्र प्रस्तुत कर सकत थे। फीरोज़, मनिव क़ोर एव अहमद आयाज ने दवगिरी पर विजय की बधाई मुतान को मुमरो के माध्यम म दी थी। मुहम्मद बिन तुगलक बठिन परिस्थितिया म उसमें मनाहिलता था। जब मुलतान ने देवगिरी के विद्रोह को दूराने के पश्चात तमी म मुद्र करन के लिय प्रस्थान किया तो उसने भाग म विद्रोहियों के प्रांते म उरनी से मलाह भागी। इस बारे में उरनी न लिखा है कि 'मैं मुलतान की सेवा म यह निवृत्त नहीं कर सकता था कि प्रत्येक िगाम म विद्रोह, अगाति का फैलना मुलतान के हत्याकांड का फल हैं। यदि वह कुछ समय तक हत्याकांड को रोक दे तो सम्भव है कि लोग गात हो जाय और माधारण तथा विशेष व्यक्ति उसमें धृणा करना कम कर दें।'

बरनी ने आगे लिखा है कि 'मैं मुतान के क्रोध से भय करता था उपयुक्त बात न कह सकता, किंतु हृदय म सोचना था कि यह एक विचित्र बात है कि जिम बात स उसके राज्य में उथल पुथल विनाग हा रहा है वही बात राज्य तथा शासन का मुख्यस्थित करने व उसके उपकार के लिये मुलतान मुहम्मद के हृदय म नहीं आती।'

दवगिरी मुतान मुहम्मद तुगलक के हाथ से निकल जान के बाद उमकी उरनी म जो वार्ता हुई, उमका बरनी ने अच्छा विवरण दिया है। उस समय उमन मुतान को स्पष्ट शर्तों म चेतावनी दते हुए कहा था कि - "राज्य के लोगो म मजस बड़ा धानक रोग यह है कि राज्य के साधारण एव विशेष व्यक्ति बाग्गाह म धृणा करन लगे तथा प्रजा का विश्वास बाग्गाह पर न रहे। उमन एतिहासिक सत्य के प्रकरण म मुतान को राज्य त्याग देने का परामश दिया।

बरनी के इतिहास की उपयोगिता इतिहासकार के कतय आदि के

बारे में तारीख ए फीरोजशाही की भूमिका में विद्वानों में विवाद है। इतिहासकारों की धमनिष्ठता के बारे में बरनी ने लिखा है कि - "उमें बात्ताह की प्रतिष्ठा, गुणो उत्तम बातों, याय नकिया का उल्लेख प्रवचन करना चाहिये किन्तु साथ ही उनकी बुरी बातों एवं अनाचार को नहीं छिपाना चाहिये। किसी प्रकार का पक्षपात नहीं करें और जो कुछ उचित दमे उसे यदि स्पष्ट नहीं तो मक्ना से बुद्धिमानों एवं ज्ञान सम्पन्न व्यक्तियों को सचत करना चाहिये। यदि किसी भय या डर के कारण समकालीन बात्ताह के विरुद्ध कुछ भी लिखना सम्भव नहीं हो तो वह अपने आपका विषय समझ सकता है किन्तु पिछले जमानों के विषय में सच सच लिखे। यदि इतिहासकार को बात्ताह मन्त्री या किसी भी व्यक्ति में कष्ट हो तो उस पर ध्यान न देकर, अच्छाई अथवा बुराई को मत्स्य के विरुद्ध नहीं लिखना चाहिये और न ऐसी घटनाओं का उल्लेख करना चाहिये जो कभी नहीं घटी हो।"

बरनी ने यथासम्भव अपनी कृति "तारीख ए फीरोजशाही" में इस नियम का पालन किया है। उसने लिखा है कि मैं इस तारीख ए-फीरोजशाही में उन सब घटनाओं का उल्लेख किया है जो वर्तमान मुल्तान फीरोजशाह के समय में हुई हैं। इससे पश्चात् यदि ईश्वर ने मुझे आयु दी तो इस पुस्तक के अंतिम प्रकरण में आगे की घटनाओं का वृत्तान्त लिखूंगा। मैं इस इतिहास के लिखने में बड़ा परिश्रम किया है और मुझे आशा है कि इसको पाठक पसन्द करेगा। जो केवल इसको इतिहास समझकर ही पढ़ेंगे उनका इसमें बड़े बड़े सुनताना और विजेताओं के कार्यों का बखाना मिलेगा। यदि पाठक इसमें प्रतापन के नियम और राजा पालन कराने के मायने टटोलेंग और प्रशासकों के लिये इसमें क्या चेतावनी है तो वे भी जिनकी पूजा में इसमें मिलेगी अथवा नहीं मिलेगी।

जहाँ पर तत्काल ए नासिरी समाप्त होती है वही में बरनी का इतिहास शुरू होता है। 'तारीख ए फीरोजशाही' गयामुनीन बलवन के समय से शुरू होती है। इसमें आठ सुल्तानों का इतिहास है। बलवन में फीरोज के शासन बनन के बीच में जिन तीन सुल्तानों ने केवल तीन या चार माह तक ही शासन किया, उनका बखाना बरनी ने नहीं किया है। अथवा जिन सुल्तानों के राज्यकाल का बखाना मिलता है उनकी सूची बरनी के बखाने के आधार पर इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास (तृतीय खण्ड) में दी है।

बरनी ने इतिहास लेखन के बारे में लिखा है कि इतिहासकार को तथ्यों को कभी विकृत नहीं करना चाहिये। डा० दशवरी प्रसाद ने लिखा है कि

"मध्यकालीन इतिहासकारों में से है।" ~~अथवा ऐसा व्यक्ति जो अंगरेजों पर जोर देना है और चाटुकारिता तथा मिथ्याकरण से घृणा करता है।" 1~~

डा० रिजवी के अनुसार बरनी न यथासम्भव तारीख ए फीरोजशाही में उपर्युक्त नियम के पालन का प्रयत्न किया है। उसमें युद्धों और विजयों के वर्णन की अपेक्षा वाग्दंड तथा अमीरा के पूरा व्यक्तित्व का प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। किंतु लोगों के गुणा की प्रशंसा और दोषों का उल्लेख करते समय वह इतना उत्साहित हो जाता है कि अपने ही निर्धारित किये हुए नियमों की अपेक्षा करने लगता है।²

बरनी खिलजी वंश के ऐतिहासिक स्रोत के रूप में

बरनी ने खिलजी वंश का इतिहास स्वयं के निरीक्षण के आधार पर लिखा है। उसने लिखा है कि जिस समय जलालुद्दीन खिलजी का गामन था, उस समय उसने कुरान पठना समाप्त किया और अलाउद्दीन खिलजी के समय वह जवान हो चुका था। इसके अनिश्चित खिलजी गामनों के निवृत्त सहयोगियों में भी उसे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होनी रहती थी।

बरनी का चाचा अलाउलमुल्क था जो अलाउद्दीन खिलजी का विश्वसनीय सलाहकार था। उसने उस दिल्ली के बोटवाल के पत्र पर नियुक्त कर रखा था। अमीर खुमरो जो कि अलाउद्दीन और जलालुद्दीन का दरबारी कवि था, उसका पण्डित मित्र था और उनके समय का बहुत कुछ हाल उसने अमीर खुमरो में सुनकर लिखा था। उदाहरण के तौर पर — बरनी ने लिखा है कि 'सी' मीना के के पंडित के समय वह दिल्ली में स्वयं उपस्थित था और अनेक बार मीना द्वारा आयोजित प्रीतिभाज में जाया करता था। फिर भी उसने मीना के चरित्र के बारे में जो कुछ लिखा है वह पूरा विश्वसनीय नहीं है। जैसे कि 'सी' मीना मोता बनाता था तथा जानता था। इसे सही नहीं माना जा सकता।

बरनी का अलाउद्दीन खिलजी से सम्बंधित इतिहास विश्वसनीय है। परंतु उसने मुनान के दरबार हरम एवं गुप्त गोष्ठियों के बारे में जो कुछ लिखा है उसे तब तक विश्वसनीय नहीं माना जा सकता जब तक कि इसकी पुष्टि किसी अन्य मध्यकालीन ऐतिहासिक स्रोत द्वारा नहीं हो जाती। इसका कारण यह है कि जब बरनी ने इस इतिहास को लिखा उस समय अलाउद्दीन खिलजी

1- डा० ईश्वरी प्रसाद — भारतीय मध्य युग का इतिहास (1200-1526 ई०)

2- रिजवी, एम ए, ए — तुगलक कालीन भारत (प्रथम भाग) पृष्ठ "ग"

श्रीर उमके शरमागी मृत्यु का प्राप्न हा चुके थ इगनिय १० बी० एम० इगीवुन्नाह प्रो० मोहम्मद टरीब एव प्रो० नुरस हगन का यह मानना है कि बरनी न अपनी कृति म कई स्थाना पर मनगढ़न बातें लिखी हैं। आन्वय हम जान का है कि हम यह पता नहीं चरता कि बरनी न अलाउद्दीन गिलजी का आलोचनात्मक इतिहास क्यों लिखा है जरनि इतिहासकार का निष्पक्ष और तटस्थ हाकर इतिहास विधना चाहिये।

बरनी द्वारा लिखित गिनजी पानीन इतिहास प्रकृत महत्वपूर्ण है। इसम जिन घटनाआ का वगन किया गया है उनका वगन किसी अन्य समकालीन ऐतिहासिक ग्रंथ म नहीं मिलता है उदाहरणार्थ - बरनी द्वारा लिखित सुलतान अलाउद्दीन खिलजी का बाजार नियन्त्रण एव मगोलो के आक्रमण आदि। यद्यपि समकालीन इतिहासकार अमीर खुसरो न अपनी पुस्तक "मजाइनुन फुतूह" म सुलतान अलाउद्दीन गिनजी का इतिहास लिखा है परंतु बाजार नियन्त्रण एव मगोलो के आक्रमणो का वणन नहीं किया है। इसका कारण यह हो सका है कि मगोलो न उम समय उत्तर पश्चिम सीमा पर आतंक फैला रखा था और सुलतान न उनके आक्रमणो का रोकन के लिय कोई व्यवस्था नहीं की थी।

बरनी द्वारा लिखित सुलतान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी का इतिहास महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि इस बारे म अमीर खुसरो न अपनी कृतिया मे बहुत कम लिखा है। बरनी की सुलतान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी के प्रति सहानुभूति थी लकिन फिर भी उमके द्वारा लिखित इतिहास विश्वसनीय है। बरनी द्वारा लिखित खिलजी वंश का इतिहास निम्न दो कारणो से महत्वपूर्ण स्थान रखता है -

- (i) बरनी समकालीन इतिहासकार है और उसन अपनी कृति को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखी है।
- (ii) उम समय के समकालीन इतिहासकार मौजाना कबीरुद्दीन द्वारा लिखित ग्रंथ "फतहनाम" मे यह इतिहास उपलब्ध नहीं है।

बरनी तुगलकवंश के इतिहास का प्रमुख स्रोत

गयासुद्दीन तुगलक - बरनी न गयासुद्दीन तुगलक का इतिहास लिखा है जिसम हम गयासुद्दीन की धमनिठना याय और नैतिक सुधार, जनहितकारी काय, करनीति तानपूय, खुमर खा द्वारा लुटाय गय धन को वापस प्राप्न करन का प्रयास आदि के बारे म विस्तृत जानकारी प्राप्न हानी है। उसन सुलतान की निराकरण करने वालो की बटु आलाचना की है।

बरनी ने उलुग खा की दक्षिण विजय एवं जाजनगर की विजय का हान बहुत मक्षिप्त लिखा है। जाजनगर की विजय का वएन तो उमन दो पत्तियो म ही दिया। मगोनो के आक्रमणो को भी उसने मक्षप मे लिखा है। गागी खा ने गुजरात की पगघो जाति पर आक्रमण किया और इम जाति के द्वारा उमकी हत्या कर ली गई। इम घटना का वगन बरनी ने नहीं किया है और जानबुझकर उमने छिपाया है। इमका कारण यह हो सकता है कि वह पराघा जाति को नीच समझता था। लेकिन जय इम जाति की मुझ क्षत्र म विजय हुई ता उमन इस घटना को निम्नता उचित नहीं माना होगा। अफगानपुर के महल के धराशायी होन मे गयामुदीन तुगलक की मृत्यु हो गई परन्तु उरनी न इस घटना का बहुत मक्षिप्त लिखा है। इमलिये बरनी पर यह टोप लगाया जा सकता है कि उमन इम दुघटना का विस्तार मे वएन इमलिये नहीं किया क्याकि वह मुनतान फीरोजशाह तुगलक के पक्ष म था।

मुहम्मद बिन तुगलक - मुहम्मद बिन तुगलक का इतिहास लिखते समय उरनी न लिखा है कि "यदि मैं उमक राज्यकाल के प्रत्येक वर्ष का हाल लिख जा कुछ उम वर्ष म हुआ, उमका मविस्तार उन्नेख कर ता कई ग्रंथ हो जायेंगे। मैं इस इतिहास म मुलतान मुहम्मद की राज्य एवं शासन व्यवस्था का मक्षिप्त वगन किया है। उसने आगे लिखा है कि "प्रत्येक विजय के आगे पीछे घटने तथा प्रत्येक हान और घटना के प्रथम या अन्त म घटना पर ध्यान न दिया है क्योंकि बुद्धिमानों का शासन नीति एवं राज्य व्यवस्था मन्त्री कार्यों के अध्ययन मे शिवा प्राप्त होती है।

उरनी ने अपनी कृति के माध्यम से समकालीन उच्च वर्ग के लोगों का मार्गदर्शन किया है। उसन मुलतान फीरोजशाह के समय एक आत्म प्रस्तुत करने के उद्देश्य म "फतवाए जहांगीरी" नामक पुस्तक लिखी थी। बरनी न मुहम्मद बिन तुगलक का इतिहास मुलतान फीरोजशाह तुगलक के शासनकाल म लिखा। वह फीरोज पर आश्रित था। उसे फीरोज से बहुत सी आगायें थी लेकिन उमे बाफी बठिनाइया का सामना करना पडा। उसन मुनतान मुहम्मद बिन तुगलक के चरित्र का बडा विशद चित्रण किया है। बरनी स्पष्ट रूप से मुहम्मद बिन तुगलक के गुण दोषों का वगन करता है। एक और वह मुलतान की योग्यता, विद्वता बुद्धिमता, और धमनिष्ठा से बहुत अधिक प्रभावित था तो दूसरी ओर मुलतान द्वारा निर्गोप व्यक्तियों को दिये जाने वान दण्ड से वह दुखी था। उसने मुहम्मद बिन तुगलक के विराटभासी गुणों का मिश्रण देवकर उसे ससार का अदभुत प्राणी कहा है।

बरनी ने मुहम्मद बिन तुगलक का इतिहास निम्न पाच भागो म लिखा है

- 1- सुलतान के खरित्र की समीक्षा
- 2- प्रारम्भिक शासन प्रबंध
- 3- सुलतान की योजनाये
- 4- राज्य म विद्रोह तथा अशांति
- 5 मुहम्मद बिन तुगलक का अन्वामी खलीफा के साथ सम्बंध

बरनी ने अपनी पुस्तक की भूमिका मे सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के खरित्र की समीक्षा की है। अय स्थानो पर भी उसके खरित्र के बारे म लिखा है। बरनी न सुलतान के अत्याचारी बनने के कारणो पर भी प्रकाश डाला है। उसने लिखा है कि यह युवावस्था मे उर्बद बधि के प्रभाव म आन से निदयी बन गया था। उमने उन झालियो की भी आलोचना की है जा प्राण क भय से एव धन के लोभ के कारण सुलतान को सत्य बाते नही कहते थे।

बरनी ने लिखा है कि "हम जैसे कुछ कृतघ्न जो भी थोडा बहुत पडे लिखे थे उस विद्या को समझत थे जिससे मनुष्य को यश प्राप्न होना है। मसार के लोभ, लालच म थ पाखण्ड करते थे, सुलतान के विश्वासपात्र हाकर गरम क विरुद्ध हत्याकांड के सम्बंध मे सत्य बात सुलतान के समक्ष म नही कहते थे। प्राणो के भय से जो नश्वर है, धन सम्पति म स्नह जो पतनशील है, आतंकित रहत हैं और टके, जीतन, विश्वासपात्र बनने के लोभ म धम के आदेशो के विरुद्ध उसके आत्या की सहायता करते। उनम मे दूसरा का ता मुझे यान नही किंतु मैं देख रहा ह कि मुझ पर क्या बीर रही है। जो कुछ कठ चुता या कर चुता ह उसका बला मुझ इस बढावस्था म इस प्रकार मिल रहा है कि मैं मसार म लज्जित, अपमानित और पतित हो चुका ह। न मरा मूल्य है न मुझ पर कोई विश्वास करता ह। मैं दर दर की ठोकरे खाता ह, अपमानित होता रहता ह मैं नही समझता कि कयामत के दिन मरी क्या दुदगा होगी, वान वीन से कष्ट भोगन होग।"

बरनी न सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक की अच्छाई, सुराई, गान एव रक्तान का अछा बणन किया है। उमने सुलतान के प्रारम्भिक शासन प्रबंध क सम्बंध म खिराज की वसूली तथा कर की अधिकता के बारे म लिखा है। उसने इन सम्बंध म पूरा विवरण नही दिया है। बरनी ने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक की निम्न छ योजनाया का बणन किया है -

- (1) दोषात्र म कर बढि
- (2) राजधानी परिवर्तन
- (3) लोभ की मुद्रा
- (4) सुरामान विजय
- (5) सैनिको की भर्ती एव
- (6) कराचिल पर आक्रमण

चौथी तथा पाँचवी योजना एक ही है। अन्य योजनाओं का क्रमबद्ध रूप से बणन नहीं किया गया है। इसी प्रकार राज्य में हुए विभिन्न विद्रोहों का बणन क्रम से नहीं किया गया है। बरनी ने केवल चार घटनाओं की तारीखें दी हैं

- (1) मुहम्मद बिन तुगलक का सिंहासनारोहण 725 हि०
- (2) अजमेरी खलीफा का मनगूर प्राप्त होना 744 हि०
- (3) मुहम्मद तुगलक का गुजरात के युद्ध के लिये प्रस्थान 745 हि०
- (4) मुहम्मद तुगलक की मृत्यु 752 हि० ।

बरनी ने लिखा है कि "यद्यपि मुलतान मुहम्मद तुगलक के समय के पड़वत्र, विद्रोहों तथा अत्याचारों का उल्लेख क्रमानुसार नहीं किया गया है, तिघिया नहीं दी गई है, और न ही विस्तार बणन किया गया है किन्तु वे सब घातें लिख दी हैं, जिसे पाठक के उद्देश्य की पूर्ति हो सके। "उसने आगे लिखा है कि विद्रोहों का मुख्य कारण मुलतान का अत्याचार, निष्ठुरता, एक हत्याकांड था। उसके इतिहास से स्पष्ट है कि जनता का विद्रवास खो देने पर इस युग में भी राज्य बरना कठिन था। प्रजा में घातक फलावर राज्य अधिक समय तक अपने अधिकार में रखना सम्भव नहीं था।

बरनी ने 'तारीख ए फीरोजशाही में कुछ विद्रोहों का बणन नहीं किया है। जैसे - बहाउद्दीन गुगासिप का विद्रोह। यथार्थनी के अनुसार ये मुहम्मद तुगलक के समय का प्रथम विद्रोह था। इसी प्रकार उनसे मसऊद खा (मुहम्मद तुगलक का सीतेला भाई) के विद्रोह का बणन नहीं किया है। बरनी न दोआब का विद्रोह तथा उसके शासनकाल के अन्तिम वर्षों में श्याफ़ अशाफ़ि का बणन विस्तार से किया है। अकाल से जनता का पीड़ित होना, एक मुलतान द्वारा प्रजा की भलाई के लिये उठाये गये कामों का विस्तृत बणन किया गया है। बरनी ने मुलतान की कृषि उन्नति सम्बन्धी योजना का मजाक उड़ाया है परंतु उसकी कृति से मालुम होना है कि यह योजना इतनी असम्भव नहीं थी, जितनी लोगों ने समझ ली थी।

मुहम्मद तुगलक ने अजमेरी खलीफा के प्रति जिस प्रकार का मद्रतापूर्ण व्यवहार किया, उस पर बरनी तथा अन्य समकालीन इतिहासकारों ने आश्चर्य प्रकट किया है। परदेसियों के प्रति मुलतान का अकारतापूर्ण व्यवहार भी उचित लगता है। बरनी ने गयासुद्दीन एव मुहम्मद तुगलक की तुलना करते हुए लिखा है कि मुहम्मद तुगलक अपने पिता की अपेक्षा धर्म के क्षेत्र में अधिक स्वतंत्र था। गयासुद्दीन के दान की प्रशंसा एक समय तथा सतुलन का महत्त्व देते हुए मुहम्मद के दान की अपमय बताता है।

सुलतान फीरोजशाह तुगलक - ररनी न तारोख ए फीराजगाही म फीराजशाह के शासनकाल की प्रथम छ वष (1351 स 1357 ई०) की घटनाका का विवरण लिखा है। उमने 74 वष की आयु मे इस ग्रंथ की रचना की थी। उमको फिरोज तुगलक न आर्थिक सहायता नही दी गिस वजह से उमकी दरिद्रता म ही मृत्यु हो गई।

वरनी न फीरोजशाह के चरित्र, शासन प्रबंध, दानपुण्य, एव दरबार व प्रमुख साम तो का विवरण दिया है। उमन मुनतान की उत्थारना की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि मुहम्मद गौरी से नेकर उस समय तक हुए मुनतानो म से फीरोजशाह सर्वोत्तम सुलतान था। शायद वरनी अपनी रचना को बाटशाह के समक्ष प्रस्तुत कर इनाम, इकराम आदि उममे प्राप्त करना चाहता था ताकि उसकी गरीबी दूर हो जाय। वरनी न घटनाका का वरण करने के माथ माथ उन समस्याका का भी वरण किया है, जिनसे उसका सम्बंध था।

(ii) फतवाए - जहादारी - वरनी अपनी कृतियों के माध्यम से समकालीन उच्च वर्ग को मार्गदर्शन देना चाहता था और अपने समकालीन सुलतान फीरोजशाह के समक्ष एक आदेश प्रस्तुत करना चाहता था। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये उमने 'फतवाए जहादारी' नामक कृति की रचना की। इस पुस्तक म राज्य व्यवस्था सम्बंधी कुछ महत्वपूर्ण बातों का वरण किया गया है। वरनी महमूद गजनवी को आदेश बाटशाह मानता था और उमने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि प्रत्येक गुण जिसका वरण उसने 'फतवाए - जहादारी' में किया है महमूद में विद्यमान था। अत महमूद की सत्तान अर्थात् मुसलमान बादशाहों को उसका अनुसरण करना चाहिये।¹

वरनी न फतवाए जहादारी म आदश शासक के बारे मे अपनविचार व्यक्त किये है। चकि वरनी एक कट्टर मुसलमान था इसलिये उसकी दृष्टि म जो शासक काफिरा का विनाश करता था। वही आदश था। वसे वरनी ने आदश शासक सम्बंधी अनेक ऐसे विचार भी प्रस्तुत किये हैं जिनम शासन व्यवस्था की कुशलता और लोकप्रियता म वृद्धि सुनिश्चित है। वरनी के फतवाए जहादारी के विवरण को प्रतापसिंह न निम्न प्रकार से लिखा है।

1- बुद्धिमान वह है जो ईर्ष्या द्वेष रखने वाला और दुष्टों की धुतता तथा विश्वासघात से सुरक्षित रहे और उनके जाल म न फसे।

2 मुसलमानों के बाटशाहों को कुरान पर दृढ़ विश्वास होता है उन्हें लोगों की

1- रिजवी एस ए - तुगलककालीन भारत भाग (2) पृष्ठ "घ" (अनुक्ति ग्रंथों की समीक्षा)

पूतता, विश्वासघात, और अन्ध भ्रष्टों का भय नहीं होता। वादशाह अपने प्राणों को
अपने देग तथा राज्य को कुरान के पाठ द्वारा सुरक्षित रखता है।

3 - मुसलमान वा शाहों के कार्यों की मध्यस्थ और बुराई इस बात पर निर्भर है कि वे उन्हें किस तरह सम्पादित करते हैं और वादशाह के विचार उत्कृष्ट हैं या कम्युपित। यदि वादशाह का नबिय्य द्वारा प्रदत्त देवी पुस्तक पर दृढ़ विश्वास है तो उनके राज्य सम्बन्धी सभी कार्य अर्थात् धर्मोपदेशों के सम्पन्न होंगे और इससे प्रजा की आवश्यकताओं की पूर्ति होनी रहेगी। यदि वादशाह का मोहम्मद साहब के धर्म में दृढ़ विश्वास हो वह इनादत (उपामना) और रोजा करता हो, अधिव इनादत तथा रोजा नमाज न कर पान पर भी इस्लाम के सिद्धांतों की रक्षा में लीन हो और अन्ध लोगों द्वारा इस्लाम के सिद्धांतों का पालन कराता हो तो ऐसा वादशाह मन्तव्य का बुतुब (आधार) है।

4 - वादशाह का शरीफत का पालन करना चाहिये। उसे हर मूलतः म इस प्रकार का प्रवचन करना चाहिये कि उनके राज्य में कोई शरह द्वारा वर्जित कार्य कुत्तम मुल्ता न हो सके।

5 - वादशाह के "दीनपनाह" (इस्लाम की रक्षा करने वाला) होना चाहिये। यदि वादशाह राजा नमाज में बर्मी करें और बिनासप्रिय हो तो भी दीनपनाही के कारण शब्दनीय नहीं होता।

6 - वादशाह का स्वयं भोगविलास में निष्प रहने पर भी शरह के आदेशों का पालन कराना में कोई हिंसा नहीं करनी चाहिये। उस इस्लाम की वृद्धि का यथा सम्भव प्रयत्न करते रहना चाहिये। उस अपनी शक्ति ऐसी बानों में लगानी चाहिये जिससे इस्लामी प्रथाओं की उन्नति होनी हो। जो वादशाह दीनपनाही में कमी करते हैं अर्थात् इस्लाम की रक्षा में हिंसा करने हैं वे क्यामत में दण्ड के पात्र होते हैं। उस इस्लाम के समस्त 72 सम्प्रदायों में शरह के आदेश जारी करवाने चाहिये।

7 - वादशाह को चाहिये कि वह अपनी राजधानी नगरी प्रदेशों, और कस्बों में बठोर स्वभाव वाले मुहत्तसिर (शेर इस्लामी बातों को राखने वाले अधिकारी) और निष्पूर अमीर शाह (मुनतान की अनुपस्थिति में शीवान मजलिस का अध्यक्ष और काजी के फैसलों का पालन करने वाला) नियुक्ति करें ताकि दुराचारों की रोकथाम हो सके। जो लोग खुल्लम खुल्ला पाप तथा दुराचार करते हो। उन्हें बठोर दण्ड दें और पाप करने वाला को नाना प्रकार के कष्ट में रखें। मदिरा पान करने वाला गायकों तथा जुआ खेलेने वाला का पाप करने से रोके वादशाह

को समुचित षण्ड द्वारा नीचे नागों के बुर बायों की राक्षस बननी चाहिये। उह चाहिये कि व भागविनाम के गृहों का निमाण न होने के कारण यदि उनका निमाण हा चुका है तो उहे समाप्त करा दें। जा योग सुन्दर सुना के बड़े पाप करते हा उन्हें मुसलमाना व नगरो म रहन न दें। जा नाव छिप छिप कर यजित काय करते उनके राग म अधिक पूछनाछ करना उचित नहीं है। गुणमप से होने वात बायों की खोज तथा उनको स्पष्ट करान के प्रयत्न म प्राणाहो का अपनी शक्ति नष्ट नहीं करनी चाहिये।

8 बादशाह का धार्मिक पदो पर सावधानी म नियुक्तिया करनी चाहिये उसको ध्यान रखना चाहिये कि कोई यहूदी इसाई नीच तथा विर्मा उमके राज्य म अपने मिथ्या धम का प्रचार न कर मके। याय व निष्ण म अधिकारिया की नियुक्ति होनी चाहिये जो धमनिष्ठ हा क्योंकि तभी प्राणाह का नाम रोगन होता है।

9 प्राणाहो को समझना चाहिये की मुहम्मद साह्य के धम के विगधिया तथा शत्रुधो के विनाश मे इना अधिक पुण्य है कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं है।

10 बादशाहो का सत्परामग का महत्व समझना चाहिये। जिन प्राणाहो के पास उच्च बुद्धि नहीं होती वे अनुभव हितैषियों के परामग म राज्य व्यवस्था और शासन प्रवध कर सकते ह। मनुष्य अपनी कामना क अनुसार मनमाना काय करना चाहता है। प्राणाह की कामना म उमके अपार अत्रिकागे के कारण हजारो मन्त हाथिया की शक्ति होती है। यदि प्राणाह उम शक्ति और मस्ती को अपन वशवर्ती रखे तथा हितपी परामगानाधो के परामग के अनुसार काय करे तो उसे न केवल ईश्वर की दया प्राप्त होगी बल्कि उमकी राज्य व्यवस्था भी भली भाति पूण होगी। वा शाहो के महान बायों और मुदत नियमो की स्थापना राज्य के हितैषियों के परामगों पर अवलम्बित ह। 'बादशाहो का यह समझना चाहिये कि सत्परामग नामन प्रवध का पूजा है। ठीक राय को सत्त्व महत्व देना चाहिये। सत्परामग के काग्य वजीर बादशाह के समान हो जाता है और राज्य व्यवस्था सम्बन्धी सभी काय उमके मताुसार सम्पन होते ह। प्राणाह के लिये बुद्धिमान वजीर म षण्डकर गव की का वस्तु नहीं होती क्योंकि बुद्धिमान वजीर के बिना बादशाह के काय भलीभाति सम्पन नहीं हो पाते। ' प्राचीन बहावत के अनुसार बादशाह बुद्धिमान वजीर के बिना निराधर और बिना नमक की रोटी क समान होता है। '

11 - बादशाह का मत्सकप वाता होता चाहिये। मत्सकप बादशाही का मत्स तथा राज्य व्यवस्था का रूप है। मत्सकप राज्य व्यवस्था के लिये अनिवार्य है।

शाह की राज्य व्यवस्था तथा महान कार्यों में मत्सकल्प में राज्य में व्यवस्था नहीं होती।

12 - बादाशाही द्वारा समयानुसार आतक का प्रत्याग होना चाहिये। उह याय परगण हाना चाहिये। बादाशाही आतक के प्रदशन और याय से इस्लाम की उन्नती होती है। मुख्यवस्था और मुगलमन म्थापित होता है तथा विरोधियों और भ्रवजाकारी हवात्माहित हान हैं। परनी लिखता है कि "बादाशाही का अनिवाय गुण याय है।"

13 - बादाशाह को याय म्बधी सावधानी रखनी चाहिये। "यदि बादाशाह अपने सहायको तथा मित्रा के याय म् स्वाय में प्रेरित हो जाता है तो उनके काय खनने में पड जात है।

14 - बादाशाह के कार्यों में मतुलन बना रहना चाहिये। ऐम बादाशाह को ही पूग म् स बुद्धिमान कहा जा सकता है। जो विशेष व्यक्ति और सबसाधारण म जो व्यवहार करें वह अमत्तुलित न हो। (अर्थात् बादाशाही व्यवहार में मतुलन बना रहे) बादाशाह के दान पुण्य, उसके शरियो के म्मान आदि म कोई बात बजाड (अमत्तुलित) न हो। 'बादाशाह को पत्नी के वितरण म भी मतुलन बनाये रखना चाहिये। उमे यह ममभना चाहिय कि दरगार क पत्नी में बजीर से दारपाल तक मतुलन कायम रह।'

15 - बादाशाह को हगम (सेना तथा परिजन) की अधिकता और एकता प्रताय रखना चाहिये। जिम किमी को भी ईश्वर न राज्य व्यवस्था और धम की रक्षा द्वारा सम्मानित किया है (यानी बादाशाह को) उसे ममभना चाहिये कि बादाशाही करना, गामन प्रघ करना, त्रिविजय करना, समार को अपने अधीन कर लेना, विरोधियों तथा विद्रोहियों को कुचलना, भ्रवजाकारियों तथा आदेशों का पालन नहीं करने वाला को अपना आज्ञाकारी बनाना, भगडा करन वालो के भगडो का अत करना मुहम्मद साहब के धम के शत्रुओं का विनाश करना मच्चे धम को लीलो म स्पष्ट करना, इस्लाम के 72 सम्प्रदायों म गरह व आदेश जारी करना विधिमिया स इकराम प्रदग तथा विनायतें, तलवार के जोर में प्राप्त करना, इस्लाम के गाजिया योद्धाओं तथा गीन मुसलमानों के के नियम अयधिक धन सम्पत्ति एकत्र करना, दग तथा राज्य के शत्रुओं के विनाश के द्वार बन करना तथा उरिद रूप स बादाशाही एक गामन करना, हगम की अधिकता, शक्ति तथा दृढ़ता के निना सम्भव नहीं होता। बादाशाह को सेना की एवना सम्बन्धी नियमों और सेना रखन से मन्त्रपित आवन्त्यक गता की पूरी जानकारी रखनी चाहिये। सेना को बकार नहीं रखना चाहिये। यलिक ~~...~~ न

किसी काम में लगाये रगना चाहिये और यह मनुष्य रहे, इसका भी ध्यान रखना चाहिये । '

16 - बादशाह को राजार भाव समेत रखने चाहिये क्योंकि नभी मवसाधारण को मताप और मुख्य मिल सकता है । 'बादशाह को अपनी राज्य की दृढ़ता वा सना तथा सबसाधारण की दृढ़ता में सम्प्रथित समझना चाहिये । अनाल के समय प्रजा की सहायता के लिये बादशाह को तत्पर रहना चाहिये तथा ब्रय विद्रय पर नियन्त्रण रखना चाहिये ।

17 - बादशाह को समय की कीमत पहचाननी चाहिये । जो बादशाह समय की वचत नहीं करता और समय का मूल्य नहीं पहचानता उसके समान वा भी कुनघ्न नहीं हो सकता । जब तक बादशाह अपने समय का विभाजन नहीं करता प्रत्येक काय में व्यस्त रहने का समय निर्धारित नहीं करता, निश्चित काय को निश्चित समय पर नहीं करना तथा अन्य कार्यो में हाथ डालना है ता उसके जहाजानी के काय सम्पन्न नहीं हो सकते हैं ।

18 - काफ़ीरो का विनाश और अपमान बादशाह का कर्तव्य है । यदि बादशाह केवल किराज और जज़िया लेने से मनुष्य हा जाता है काफ़ीरा का विनाश नहीं करता तथा उन्हें मुसलमान नहीं बनाता ता वह बादशाही कर्तव्यो का उचित निर्वाह नहीं करता ।

19 - बादशाहो को अत्याचारियो का दण्ड करना चाहिये याय के लिये अदि कारियो की नियुक्ति करनी चाहिये और क्षमा तथा दण्ड के नियमो को समझना चाहिये । कृपा, प्रास्ताहन दान, कठोर दण्ड अपमान पदच्युति धन-संपति आदि उपायो से मु यवस्था स्थापित होती है । ये प्रजा के प्रति बादशाह के व्यवहार के तरीके हैं । बादशाहो का जानना चाहिये कि अपराधियो के अपराध कई प्रकार के होते हैं । मुमलमानो की हत्या करते समय बड़े सोच विचार की आवश्यकता है । मृत्यु दण्ड देते समय कभी गीमा में आगे नहीं जानना चाहिये एक व्यक्ति के अपराध के लिये दस व्यक्तियो की हत्या न करनी चाहिये । यदि बादशाह सप्सार में सिफारिश का द्वार बन्द कर देगा ता कयामत में उसके लिये भी सिफारिश के द्वार बन्द हो जायेंगे । सिफारिश के द्वार खुले रखने में आबो नाभ हैं ।'

20 - बादशाहो को समझना चाहिये कि महान काय जिना अविनियमो के जो कि जान और बुद्धिमगत हो सम्पन्न नहीं हो सकते । राज्य व्यवस्था का उद्देश्य वर्तमान का उपचार और भविष्य के लिये भलाई करना है । अतः राज्य के

के अधिनियम को बनाने का काम बिगो बमीने या दुष्ट व्यक्ति को नहीं सौंपना चाहिये। वादगाह को चाहिये कि वह ऐसे अधिनियमों की व्यवस्था करें जिससे न्याय में वृद्धि होती है। अधिनियमों के प्रयोग और उनको दृढ़ता के बिना राज्य व्यवस्था के काम में बाधाएँ उपस्थित होती हैं। राज्य व्यवस्था सम्बन्धी सभी कार्यों में काफी मोक्ष विचार और वाद विद्या के वास्तु हाथ डालना चाहिये। अधिनियमों को बनाने समय चार बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये। य अधिनियम गृह के आदेशों के विरुद्ध न हो अधिनियमों की और विशेष व्यक्तियों का आक्षेपण हो और मन्त्रपरिषद् में आना या मन्त्र हो तथा योगात्मकता का प्रसार हो। किसी को उनके प्रति घृणा न हो। अधिनियमों से सम्बन्धित धमनिष्ठ वादशाहों के उन्मूलन उपलब्ध हो अधिनीतया क्रूर वादगाहों के नियमों का पुनरुद्धार न हो। अधिनियमों में कोई बात मुद्रत के विरुद्ध न हो और इन पर आक्षेपण करने से अधिनियमों में आना या भला न होता हो। "जब तक अधिनियम निर्माता पूर्ण बुद्धिमान योग्य तथा अनुभवी नहीं होंगे, पिछले मुलताना के अधिनियमों से परिचित नहीं होंगे और उनकी बुद्धि भोगविलास तथा क्रोध से प्रभावित नहीं होगी अथवा सामाजिक सुख की अभिरक्षा करने होंगे उनके अधिनियम बनाने के कारण राज्य में उन्नी कठिनाईयाँ उत्पन्न हो जाने का भय है।"

21 - वादगाह में आभासिक रूप में उच्च साहस तथा श्रेष्ठता होनी चाहिये। हताग तथा बमीने के लिये राज्य करना सम्भव नहीं। वादगाहों की सभसे उन्नी आक्षेपण श्रेष्ठता की अभिरक्षा है श्रेष्ठता, बजसी, तथा कृपणाता द्वारा उत्पन्न नहीं हो सकती। वादगाहों को स्तम्भों पर आधारित है। कृपा एवं क्रोध। हताग व्यक्ति न तो कृपा प्राप्त कर सकता है और न ही क्रोध। बजस व्यक्ति प्रजा के पाम जो उत्तम वस्तुएं देखता है अथवा जिन उत्तम वस्तुओं के विषय में सुनता है उनका जालच करने लगता है। साहसहीनता के कारण जिन प्रकार सम्भव होता है प्रजा की उत्तम वस्तुएं तथा धन सम्पत्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करता है जो कठिन काम उपस्थित होते हैं, उनमें धन खर्च नहीं करता अपितु अपनी शक्ति मजदूरी अथवा चार करने में लगाता है। साहसी वहीं कहा जा सकता है जो बाहू तथा आंतरिक गुणों में अथवा योगों से श्रेष्ठ हो। यह श्रेष्ठता साहसहीन लोगों का प्राप्त नहीं हो सकती।

22 - वादगाहों को शांत होना चाहिये अभिमानों होना तथा किसी बात की चिन्ता न रखने से राज्य में वृद्धि में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। बुद्धिमान वादगाह रोगों का उपचार शीघ्रता शीघ्र करते हैं कभी कभी ऐसा होता है कि यदि राज्य में महल की दस श्रेष्ठ भी अस्मद्वयस्त हो जाये तो ममस्त सेना के प्रयत्न से भी वे ठीक नहीं होती। यदि दो श्रेष्ठों में ही गडबडी हुई हो और उनको और शीघ्र ध्यान दे

दिया जाय तो उसका उपचार हो जाता है। महामारी, अन्धास्र आदि के समय बादशाह को चाहिये कि यह प्रजा की गिराज और जजिया म बन्नी करने महायत्ना करें। यथासम्भव दरिद्रों और भिखारियों को राजस्व में म्हायता दें। ध्यापारियों को अन्न प्रदनों से अन्नान्न लान के लिए अन्न दे तथा अन्न मन्व पर अन्नान्न भिखारों। कहना न होगा कि बतमान म सरकार द्वारा गन्ने की मन्व दुकानों की व्यवस्था में बरनी की व्यवस्था भी बनान मिलनी है। बरनी के अनुसार राज्य म अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं। यथा-प्रजा में अत्यधिक धन प्राप्त करने का प्रयास किया जायें। वर्तमान म अधिकाधिक टैक्स लगान (कठोरता और मृत्यु दण्ड म अधिवृत्ता हो जाये, गिराज अधिन्न दिया जाये आदि। इन अवस्थाओं म सेना और प्रजा बादशाह से घृणा करने लगती है। विद्रोह होने लगते हैं और बादशाह के आदेशों की अवज्ञा को प्रोत्साहन मिलता है। बादशाह को चाहिये कि इन रोगों का समय रहते उपचार करें तथा इनसे बचें। राज्य म अन्न गम्भीर दुष्घटना इस प्रकार होती है कि कोई क्षत्रिणात्मी शत्रु बादशाह के राज्य पर अधिभार प्राप्त करने का प्रयत्न आरम्भ कर दें। दुर्भाग्यवश कतिपय पड़ोसी देशों का खैया भारत के लिए ऐसा ही रहा है। राज्य के लिये महान् दुष्घटना है जिसका तुरन्त उपचार किया जाना चाहिये। शत्रु के सेनापतियों और विश्वासपात्रों के विनाशकारी प्रभाव को को युक्तिपूर्वक जैसे उपहार तथा नाना प्रकार की वस्तुएं भेजकर) धूस या कूटनीति द्वारा समाप्त कर देना चाहिये। अपनी सेना को सुदृढ बनाना चाहिये अपने साधनों और अन्नान्न आदि म अधिवृद्धि का प्रयत्न करना चाहिये। शत्रु के प्रवेश मार्गों को नष्ट कर देना चाहिये। पुलों को जुड़वा देने चाहिये और जलाशयों का खाली करा देना चाहिये शत्रु से बचने का अन्न साधन यदि उपयुक्त हो उससे सम्बन्ध स्थापित कर लेना है। यदि शक्तिशाली शत्रु से बचना किसी प्रकार सम्भव न हो तो बादशाह को चाहिये कि राजधानी को छोड़कर अन्न किसी प्रदेश में चला जाये। (जैसा कि बतमान म निर्वाहिन (सरकारें कायम हो जाती है) किमी भी आक्रमण की अवस्था में बादशाह को अपनी राजधानी तथा किले की रक्षा करनी चाहिये ताकि उसकी और प्रजा के विशेष व्यक्तियों की रक्षा हो सके। महान युद्धों म बहुत उडा खनरा होता है अत यथा सम्भव बड़े युद्धों में हाथ नहीं डालना चाहिये। युद्ध तराजू के दो पलडों के समान होता है। एक पलडे का भारी होना चाहे वह थोडा ही क्या न हो उस पलडे को भारी ही रखना है और ससार छिन भिन हो जाता है। वश तथा परिवार का विनाश हो जाता है और वे दूसरों के अधिन हो जाते हैं। बरनी न इस चेतावनी में मानवता को महायुद्धों से बचने की चेतावनी स्पष्ट रूप से गजती है।

23 - बादशाह को अत्यधिक मान से बचना चाहिये और राज सम्बन्धी कार्यों में ईश्वर का अनुसरण करना चाहिये क्योंकि वह ईश्वर का प्रतिनिधि तथा खलीफा होता है। बादशाह में विरोधाभासी गुणों की आवश्यकता है। "बादशाह में जो सभी का हाकिम तथा 'गामक' है क्रोध तथा कृपा एवम् तथा दया, कठोरता तथा नम्रता, अभिमान तथा आश्रय जो एक दूसरे के विरुद्ध गुण है पूणरूप से विद्यमान होने चाहिये। यदि बादशाह में केवल क्रोध ही हो और दया न हो तो भ्रवज्ञाकारी प्रजा की क्या रक्षा हो जायगी यदि उममें केवल दया ही दया हो और कठोरता न हो तो विद्रोही, विरोधी उपद्रवी तथा भ्रवज्ञाकारी विरोध तथा विद्रोह एक भ्रवज्ञा से बाज नहीं आ सकते। कठोरता के स्थान पर बादशाह को दया प्र शित नहीं करनी चाहिय और न दया के स्थान पर कठोरता। ईश्वर का प्रतिनिधि एक खलीफा होने के योग्य यही व्यक्ति होता है जिसमें स्वाभाविक रूप से विरोधाभासी गुण पाये जाते हैं।

24 - बादशाही का अर्थ प्रभुत्व है। प्रभुत्व के कारण ही वह बादशाह कहलाता है बादशाह और प्रभुत्व सम्बन्धी बरनी के विचारों में हमें प्राधुनिक "सावभोमिकता के अर्थ होने हैं। बरनी लिखता है कि "बादशाही का अर्थ प्रभुत्व है। चाहे कोई व्यक्ति किसी इक्लीम पर जबरनस्ती आक्रमण द्वारा प्रभुत्व कर ले चाहे वह उसे अपने अधिकार में ले ले, चाहे मुतगान्दिलब हो, चाहे उसका कोई अधिकार न हों प्रभुत्व के कारण वह बादशाह कहलाता है। यदि बादशाह के पुत्रा विद्वान्पान्त्रो, स्त्रियों तथा दाम्पत्यो में न कोई अधिकार प्राप्त करने और बादशाह के लिये उनकी रातो तथा इच्छा का उरलघन सम्भव न हो तो प्रभुत्व की स्थिति उटी हो जाती है। आदेश देने वाला व्यक्ति आदेश का पालन करने वाला प्रभुत्वमम्पन व्यक्ति संभव न जाता है। राज्य में प्रजा के गुण उत्पन्न हो जाते हैं। यदि कोई बादशाह पर पूण अधिकार प्राप्त करने तो इस उमका अन्त नहीं हो जाता। बादशाह पर धर्म तथा मजहब के विरुद्ध बातें मिलाने वालों, जादू कीमिया, कामुन, औपधियो की शिक्षा न्न वाला का प्रभुत्व हो जाता है। बादशाह को व प्रभावित कर लेते हैं और अपने धर्म का प्रचार करने लगते हैं। वे बादशाह को माग भ्रष्ट कर देते हैं।"

यदि हम बरनी के प्राग्ग गामक के बारे में दिये गये विचारों में से मजहबी सबीणता सम्बन्धी विचार निबाल दें तो नि सदेह ये विचार किसी भी शासन व्यवस्था के लिये प्राग्ग सिद्ध हो सकते हैं।

1 प्रतापसिंह मध्यकालीन भारत (पृष्ठ 515 से 521 तक)

समीक्षा

वरनी एक बट्टर मुनी मुममलान था जिनके विचारों की छाप उस रचनाओं में स्पष्ट रूप में देवन का मिलती है । यह मत है कि उसने जो कुछ लिखा है वह अपनी जानकारी के आधार पर लिखा है । उसने लिखा बहुत बदी हैं वो भी सही नहीं हैं । फिर भी उसने घटनाओं का एक ही विलक्षण तरा से वर्णन किया है और तीनों व्यक्तियों को ह ।

वरनी की निष्पक्षता और ईमानदारी पर सन्देह प्रकट करते हुए इलियट एव डाउसन ने लिखा है कि 'जियाउद्दीन वरनी अथ अनन इतिहासकारों के भाति अपने समकालीन शासकों के आदेशों के अनुसार लिखा करता था इसलिये वह ईमानदार इतिहासकार नहीं है । उक्त ही महत्वपूर्ण घटनाओं को छोड़ दी गई है या उनका साधारण मानकर छोड़ा सा स्पष्ट किया है । अलाउद्दीन के राज्यकाल में मुगलों के कई आक्रमण हुए, परन्तु उसने उनका उल्लेख नहीं किया है । मुहम्मद तुगलक ने भीषण हत्या और वधमानी से राज्य प्राप्त किया था । इसका भी उल्लेख नहीं किया गया है । मुहम्मद तुगलक को अपने समकालीन मुलतानो से निकट सम्बन्ध था । इसको ध्यान में रखकर ही यह बात छिपाई गई है । मुगलों के आक्रमण के विषय में यह कहा जा सकता है कि एशिया और यूरोप के पश्चिमी लेखकों ने भी कई बड़े महत्वपूर्ण आक्रमणों का वृत्तांत नहीं लिखा है । परिश्रम ने उनका वर्णन किया है और वरनी पर वह यह आरोप लगाता है कि उसने इस सत्य को छिपाया है । फरिश्ता की जानकारी के साधन निःसन्देह उत्तम थे । उसकी पुस्तक की प्रशंसा की जाती है । जियाउद्दीन वरनी के इतिहास में मुलतान की स्तुति ही का गई है जिससे भिन्न होता है कि वरनी ने जान-बूझकर इन आक्रमणों का वृत्तांत नहीं लिखा है । डी० गुडगनीज डी० हरजिलाट और प्राइस ने जिन लेखों को उद्धृत किया है वे भी इन आक्रमणों का उल्लेख नहीं करते ।¹

इलियट एव डाउसन ने भारत का इतिहास तृतीय खण्ड नामक पुस्तक में वरनी के अनेक उदाहरण दिये हैं । डा० रिजवी ने भी वरनी की वृत्ति तारीख ए फीरोजशाही के अधिकांश भाग का हिस्सा अनुवाद किया है ।

वरनी की वृत्ति निःसन्देह अत्यन्त भ्रष्टान्वित है जिनमें वाद के इतिहासकारों को प्रेरणा दी है । 17 वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण इतिहासकारों जैम-निजामुद्दीन अहमद, बत्तायनी फरिश्ता हाजी उल्-वीर आदि ने वरनी के इतिहास

का अवलोकन करने के बाद अपनी रचनाएँ लिखी हैं। बरनी ने तारीख ए फीरोज
शाही एव फतवाए-जहादारी के अतिरिक्त इनायतनामा ए इलाही, हसरतनामा,
सना ए-मुहम्मदी, सलावत-ए-खबीर आदि ग्रन्थ लिखे हैं परन्तु बरनी की सर्वाधिक
महत्वपूर्ण पुस्तक "तारीख-ए फीरोजशाही" है जो उसके पाण्डित्य और विद्वाना
का अमर मय है ।



शम्स-ए-सिराज अफ़ीफ़ : तारीख-ए-फीरोजशाही

जहा से बरनी की तारीख ए फीरोजशाही समाप्त शानी ३ वही ए अफ़ीफ़ की तारीख ए फीरोजशाही प्रारम्भ होनी है। अफ़ीफ़ न इस कृति में केवल फीरोज तुगलक का 1357 ई० म 1388 ई० तक का इतिहास मबिस्ता लिखा है।

अफ़ीफ़ ने अपनी पुस्तक की भूमिका म लिखा है कि मुलतान फीरोज शाह तुगलक के १६ वीं अभियान की वापसी के समय उसकी आयु 12 वर्ष थी। इस आधार पर आधुनिक इतिहासकारों ने अफ़ीफ़ का जन्म 13०0 ई० का माना है किन्तु अभी तक सभी विद्वान इस बात पर एक मन नहीं हैं कि फीरोज तुगलक 1361 ई० म ही १६ वीं अभियान में वापस आया था। अफ़ीफ़ का पिता सिराजुद्दीन अफ़ीफ़ फीरोजशाह के दरबार म आठ वर्षों पर काय कर चुका था। वह दीवाने बजारत में भी काय कर चुका था। इसके अतिरिक्त उसके पिता ने मुलतान के साथ बाजनगर और नगरकाट के अभियानों म भी भाग लिया था।

अफ़ीफ़ स्वयं दीवान बजारत में काय कर था। इससे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि उसने दरबारी मामलों का वलन अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर लिखा है। मुलतान के बहुत नज़दीक होने के कारण ही उसने अमीरों तथा प्रशासन के बारे में निम्न विवरण दिया है।

अफ़ीफ़ ने तारीख ए फीरोजशाही के अतिरिक्त कुछ अन्य ग्रंथों की भी रचना की है जिसके बारे म उसने अपनी पुस्तक में लिखा है। वे रचनाएँ अब उपलब्ध नहीं हैं। अफ़ीफ़ तारीख ए फीरोजशाही नामक ग्रंथ की रचना 1411 12 ई० म कर चुका था। इस पुस्तक म पाँच भाग हैं। प्रत्येक भाग में 18 अर्थात् 180 श्लोक हैं परन्तु पाँचवें भाग में केवल 15 अर्थात् 150 श्लोक हैं। इससे यह पता चलता है कि यह पुस्तक अपूर्ण रह गई है। ऐतिहासिक महत्त्व के आधार पर यह पुस्तक पाँच भागों में विभाजित कर सकते हैं -

- 1- फीरोजशाह का चरित्र
- 2- फीरोजशाह के अभियान

- 3- शासन प्रबंध का विवरण
- 4- फीरोजशाह की धार्मिक नीति
- 5- फीरोजशाह के दरबारियों की जीवनी का विवरण

1 फीरोजशाह तुगलक का चरित्र

अफीफ ने फीरोजशाह तुगलक के चरित्र के गुणों और दोषों का अच्छा विवरण दिया है। उसने लिखा है कि सुलतान बहुत दयालु और धर्मपरायण व्यक्ति था। "अफीफ ने फीरोजशाह के धार्मिक विचारों की काफी प्रशंसा की है क्योंकि सुलतान और वह दोनों ही शेख निजामुद्दीन औलिया के भक्त थे। अफीफ ने फीरोजशाह की दयालुता का वर्णन करते हुए लिखा है कि "सुलतान अक्सर अरगधिया को क्षमा कर दिया करता था और उमन खिदरो के लिये अन्नको सस्थापित दिल्ली तथा साम्राज्य के अन्नक भागों में खोती थी। सुलतान को दानपुण्य आदि में बड़ी रुचि थी तथा वह मुसलमानों का बड़ा पुनर्निर्माता था जिन्हें अनेकों उपाहरण उमन पुस्तक में दिये हैं।"

अफीफ ने अपनी कृति में फीरोज तुगलक के बारे में यहाँ तक लिखा है कि "वास्तव में सुलतान एक मूर्ख था जो अन्न मिर पर राजमुकुट पहिन था। किंतु उसकी यह प्रशंसा सही प्रतीत नहीं होती क्योंकि उमन सुलतान की प्रशंसा के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखा है। अफीफ की रचना से पता चलता है कि फीरोजशाह तुगलक एक कुशल सैनिक नहीं था। उसने जितने भी अभियान किये उनमें या तो वह अमफल रहा अथवा शत्रुओं से समझौता कर लिया। फीरोजशाह तुगलक का सौभाग्य ही था कि उसके समय में मंगोलों ने आक्रमण नहीं किया।

2 फीरोजशाह के अभियान

जब फीरोजशाह शासन प्रभु बना तब दक्षिणी भारतवर्ष के राज्यों ने दिल्ली के सुलतान की अधिनता मानने से इंकार कर दिया। बंगाल एक मिथ स्वतंत्र राज्य बन चुके थे। फीरोजशाह ने दक्षिण के किमी भी राज्य पर अधिकार करने का प्रयास नहीं किया। बंगाल, कागडा एवं मिथ के अभियानों में वह बिना विजय प्राप्त किये ही यह सोचकर वापस आ गया कि युद्ध में अमन्य मुसलमानों की मध्य में ही हत्या होगी। इसमें स्पष्ट है कि उसमें कुशल सनानायक के गुण नहीं थे। उसने 38 वर्ष के शासनकाल में केवल तीन, या चार अभियान किये। इसका परिणाम यह हुआ कि सेना कमजोर हो गई और साम्राज्य में अराजकता एवं अस्थिरता के चिह्न उदित होने लगे।

3. शासन प्रबंध का विवरण

अफीफ ने अपनी पुस्तक में सुलतान के समय के शासन प्रबंध का अच्छा

विवरण दिया है। उमन लिखा है कि उमने साम्राज्य में अत्याचार और रिक्वा गरीबी का बोलमाला था। वनक स नेकर उम पचाधिकारी तक सभी रिस्वतगार थे। अफीफ ने सुलतान की राजस्व नीति सिचाई विभाग, एव उमने द्वाय रनवाई गई नहरा का अ छा बणन किया है। अफीफ की पुस्तक इमनिय महत्व रखती है क्योंकि हम केन्द्रीय गामन व अन्तगन अनेकों विभागों के गामन प्रयथ के बार में वनक उमी की पुस्तक में जानकारी प्राप्त होती है।

4 फीरोजशाह की धार्मिक नीति

अफीफ ने फीरोजशाह की धार्मिक नीति के बारे में लिखा है कि 'सुलतान राजा नमाज का पढा पाठ था। दरबार तथा महल में भी मन्व दरबार के बड़े बड़े वाजियो और विद्वाना के साथ रहता था। उमने अवन समय में गराव विरुद्ध जितने कर थे उनको ममाप्त कर दिया। उमने दिल्ली व ब्राह्मणा जिनमें जजिया नहीं लिया जाता था वना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त दिल्ली तथा साम्राज्य में अनेको एम मुसलमान व सम्प्रदाय थे जो कट्टर मुन्नी मुसलमानों के बड़े विरोधी थे। जैसे गया इस्नामाइली तथा बिहार के अय सम्प्रदाय के लोग, सुलतान ने उन्हें बंदी बनाकर उनकी हत्या करवा ली। इमी सत्तम में उसने दिल्ली के एक ब्राह्मण का उल्लेख किया है जिसको जीवन आय में सुलतान ने इमलिये जलाया कि उमने इस्लाम धर्म स्वीकार करना नामजूर कर दिया।'

अफीफ के बणन से पता चलता है कि फीरोजशाह एक कट्टर मुन्नी शासक था परंतु अमीर खुसरो ने अपनी पुस्तक 'सियरुल अलिया में लिखा है कि सुलतान शरा के कई नियमों का पालन नहीं करता था। उमने एक स्थान पर लिखा है कि एक बार जब कुछ वाजी सुलतान से मिलने के लिये आये तो उन्होंने देखा कि सुलतान गराव के नशे में धुत होकर अपनी शया पर वस्त्रहीन पडा हुआ था। अतः अफीफ का यह कहना कि फीरोजशाह एक आदश मुसलमान शासक था, उचित प्रतीत नहीं होता। अय धर्मों के लोगों के प्रति उसके अत्याचार का विवरण हम अय पुस्तकों में भी मिलता है।

5 फीरोजशाह के दरबारियों की जीवनी का विवरण

अफीफ ने अपनी कृति के पाचवें भाग में सुलतान के दरबार के सामंतों की जीवनी का बणन दिया है जिसे पता चलता है कि उन सामंतों की दरबार में कैसी स्थिति थी। इससे हमें दरबारी राजनीति और सुलतान के स्वभाव के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

रिजवी न लिखा है कि "यह (अफीफ) मुन्तान फीरोजशाह की धम
 पिठना तथा बौद्धता से अत्यधिक प्रभावित था। वह स्वयं अपने समकालीन
 मुस्लिमों का मुस्लिम का धार मुन्तान फीरोजशाह को उमन एवं धार्मिक मुसलमान
 शासक के रूप में उजागर किया है। उमन केवल युद्ध तथा अभियानों का ही
 उन्मुख नहीं किया है अपितु मुन्तान फीरोजशाह के राज्यपाल की अथ
 महत्वपूर्ण घटनाएँ तथा सामन प्रबंध का भी विवरण दिया है। मुन्तान के
 राज्यपाल निर्माण कार्य, भवनों, नहरों इत्यादि के निर्माण में वह अपने
 समकालीन की भाँति प्रभावित था। उमका विवरण मुन्तान फीरोजशाह के
 मुख्य अधिकारियों व विषय में भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। उमके इतिहास में
 समकालीन सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति के विषय में भी स्पष्ट सबके मिलते
 हैं। यह अपने इतिहास में मुन्तान फीरोजशाह तथा उमके अधिकारियों का
 विवरण देते हुए वही वही इतिहासकार की निष्पक्षता का नून जाता है और
 इस और विशेष ध्यान नहीं देता। उमन अपने विवरण काव्यमयी भाषा में प्रस्तुत
 करण का प्रयत्न किया है। अतः उमकी प्रणामा एवं शब्दों के उन्मुख से ऐतिहासिक
 निष्पक्ष निबालना कठिन हो जाता है। फिर भी मुन्तान फीरोजशाह के
 समकालीन इतिहासकार होने के कारण उमके विवरण की उम्मा नहीं की
 जा सकती।¹

अथ के दोष -

अथ के प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं -

- (1) घटनाओं का वर्णन क्रमबद्ध रूप में नहीं किया गया है।
- (2) उमक न के एसी घटनाएँ का वर्णन भी किया है जिनका ऐतिहासिक
 दृष्टि में कोई महत्व नहीं है।
- (3) अफीफ का निष्पक्ष इतिहासकार नहीं कहा जा सकता क्योंकि उमने निष्पक्ष
 इतिहासकार की भाँति अपनी पुस्तक नहीं लिखी है।
- (4) उमने अपनी कृति काव्यमयी भाषा में लिखी है इसलिए उमकी प्रणामा एवं
 शब्दों का पढ़ने के बाद ऐतिहासिक निष्पक्ष निबालना कठिन हो जाता है।

समीक्षा

इन दोषों के होते हुए भी अफीफ के विवरण की उम्मा नहीं की जा
 सकती क्योंकि वह मुन्तान फीरोजशाह का समकालीन इतिहासकार था। उमने
 घटनाओं का वर्णन बहुत विस्तार से किया है। उमके इतिहास में उम समय की
 सामाजिक एवं धार्मिक दशा व वारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसका महत्व

इसलिये भी ग्रॉथ्फु के बयोकि बाद के इतिहासकारो ने भी उस समय का इतिहास अफीफ की पुस्तक को आधार बनाकर लिखा है ।

डा० ईश्वरी प्रसाद न अफीफ की कृति के बारे मे लिखा है, "अफीफ न बरनी जैसी न तो बौद्धिक उपलब्धि है और न ही इतिहासकार की योग्यता, सूक्ष्म तथा पैनी दृष्टि ही, अफीफ एक घटना को तिथीक्रम से लिखने वाला सामान्य इतिहासकार है जिसन प्रशसात्मक दृष्टि से अपने विचार व्यक्त किये हैं । वह अत्यन्त अतिशयोक्तिपूर्ण शैली मे सुलतान की प्रशसा करता है । उसमे इतनी अतिशयोक्ति है कि फीरोज ने सत्कार्यों के वरण को पढकर सर हेनरी इलियट न उसकी तुलना अकबर से कर डाली है । ¹

1- डा० ईश्वरी प्रसाद - भारतीय मध्ययुग का इतिहास, पृष्ठ 27



सुलतान फीरोजशाह तुगलक फतुहाते फीरोजशाही

तुगलक बग के एतिहासिक स्त्रोता में फीरोज तुगलक द्वारा लिखित पुस्तक 'फतुहात ए फीरोजशाही' महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह बहुत संक्षेप में लिखी हुई है। सुलतान ने इसे पुस्तक के रूप में लिखकर दिल्ली की जामा मस्जिद में मीनार पर खुदवा दिया था जो अब नष्ट हो चुकी है। इस रचना के माध्यम से सुलतान ने अपने को एक धर्मपरायण शासक सिद्ध करने का प्रयास किया है। इसके प्रतिरिक्त इसमें उमन अपने द्वारा बनाय गये कानूनों और रचनात्मक कार्यों का अच्छा विवरण दिया है।

निजामुद्दीन ने अपनी कृति 'तज्जुबत अकबरी' में फीरोजशाह की इस रचना के बारे में लिखा है कि 'सुलतान ने अपने राज्यपाल की घटनाओं को स्वयं संकलित करके फतुहाते फीरोजशाही नामक पुस्तक की रचना की थी। निजामुद्दीन ने फीरोजशाह की इस पुस्तक को देखा था और अपनी कृति में फीरोजशाह का इतिहास लिखते समय वह इसमें काफी लाभान्वित भी हुआ था। उमन लिखा है कि 'सुलतान फीरोजशाह ने फीरोजशाह के निकट एक अष्टावार गुम्बद के आगे और इस पुस्तक के आठ अर्थात् पत्थर पर खुदवा दिया है।' (तज्जुबत अकबरी)

निजामुद्दीन ने फीरोज की पुस्तक में ने राजनीति राजस्व व्यवस्था और जनहित कार्यों के कई उदाहरण अपनी कृति में दिये हैं। किंतु अब इस गुम्बद का पता नहीं, और न ही पूरी पुस्तक ही कहीं उपलब्ध हुई है। अफ्रीक में भी सुलतान की इस रचना के बारे में अपनी कृति में लिखा है।

इस रचना का मूल्यांकन डा० रिजवी ने इस प्रकार किया है - 'फतुहात फीरोजशाही 1885 ई० में देहली से प्रकाशित हुई थी और इसकी एक हस्त लिखित प्रतिया भी मिलती हैं। किंतु इसमें से सुलतान फीरोजशाह के राज्यपाल की घटनाओं का अधिक विवरण नहीं है। केवल राजनीति, अर्थ व्यवस्था शासन प्रबंध, तथा सांस्कृतिक निर्माण कार्यों का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है। इसमें फीरोजशाह ने अपने कारनामों का जो विवरण दिया है, उससे पता चलता है कि <

वह घमनिष्ठ मुन्नी मुसलमान के रूप में जीवन व्यतीत करने तथा गामन प्रदत्त
 करने भी उगी ढाँचे में ढालने का प्रयत्न करता था। हिन्दू, मुसलमान तथा इस्लाम
 के शत्रु पिरकों से उसे कोई सहानुभूति नहीं थी। शरा के विरुद्ध बहुत सी बातों
 को राजा हिन्दुओं के भाव तथा दोनों जातियों के घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण
 मुसलमानों के जीवन का विशेष भ्रम बन गई थी और जिनका शरा के बखित
 पूजारी अथवा वादगाह अथवा तब भी कभी निराकरण न करा सके, रोकने का
 मुलतान फीरोजशाह न भी यथाम्भव प्रयत्न किया। यद्यपि मुलतान फीरोजशाह
 का उद्देश्य इस विवरण से तो यही था कि वह यह लिखा कि किस प्रकार उमर
 शरा को उप्रति प्रदान की। किन्तु उसके विवरण से उमर समय की सामाजिक दशा
 की भी भाँकी मिल जाती है। जबकि हिन्दुस्तान में मुसलमानों ने अपने वातावरण
 से प्रभावित होकर बहुत सी प्रथाओं का, जो इस्लाम में स्वीकृत नहीं अंगीकार
 कर लिया था और इस्लाम की अपेक्षा देश के हित के विषय में सोचने लगे थे।¹

समीक्षा

मुलतान फीरोजशाह तुगलक ने इस पुस्तक को मस्जिद में इमलिय
 खुदवाया था ताकि जनता उमर की धार्मिक भावनाओं से परिचित हो सके। अतः
 अधिकांश इतिहासकारों का यह मानना है कि यह पुस्तक विश्वमनीय नहीं है
 परन्तु यह मत सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि अथ इतिहासकारों ने अपने ग्रन्थों
 में उसमें लिये गये तथ्यों की पुष्टि की है। अलीफ न भी इस पुस्तक के प्रारंभ में
 अपनी कृति में लिखा है इस ग्रन्थ से हमें फीरोज तुगलक की धार्मिक कट्टरता के
 बारे में जानकारी प्राप्त होती है। समकालीन ग्रन्थ होने के कारण इसका
 ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्व है।

1— रिजवी, एस ए ए — तुगलककालीन भारत भाग () पृष्ठ 6



ख्वाजा अबु ब्रक इसामी: फुतूह-उस-सलातीन

इसामी मुहम्मद बिन तुगलक का ममबालीन था। उसका जन्म 711 हि० (1311-12 ई०) के लगभग हुआ था। उसने फुतूह उस सलातीन की रचना 27 रमजान 750 हि० (9 दिसम्बर 1349 ई०) को प्रारम्भ की और 6 रबी उस मन्वल 751 हि० (14 मई 1349 ई०) को पाच मास नौ दिन में इसे पूरा कर लिया। उसने फारसी पद्यों में यह पुस्तक लिखी है। इसको "शाहनाम-ए-हिन्द" भी कहते हैं। इस ग्रन्थ में सुलतान महमूद गजनवी के समय से लेकर सुलतान अनाजरीन बहमनशाह तक के शासनकाल का विवरण है।

इसामी ने लिखा है कि "मैंने जो कुछ लोगों से सुना एव पुस्तकों में पाया उस इस पुस्तक में लिखा। प्राचीन कहानियों की सत्यता के अन्वेषण में मैं बड़ा परिश्रम किया। हिन्दुस्तान के वाग्मियों का हाल, बुद्धिमान मित्रों द्वारा जान कराया। सभी विषयों में इतिहास पढ़ा।" 1

इसमें स्पष्ट होता है कि इसामी ने जो कुछ लिखा है वह यही छानबीन के साथ लिखा है 'इसके द्वारा पता चलता है कि बहुत से ग्रन्थ, जो इसामी को उपलब्ध थे, अब अप्राप्य हैं अतः यह रचना बहुत महत्वपूर्ण है।' 2

वरनी की ओर इनामी ने सुलतान गयामुद्दीन तुगलक के राज्यकाल की घटनाओं का वर्णन विस्तारपूर्वक लिखा है। सम्भवतः इसामी से प्राप्त जानकारी के आधार पर उलूग खा (सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक) के तेलगाना पर आक्रमण के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं। उलूग खा का जाजनगर पर आक्रमण एव मंगोल आक्रमण का भी उसने विस्तार से वर्णन किया है। गाँधी का गुजरात पर आक्रमण पराजय की वीरता तथा गाँधी की हत्या, का इसामी ने अच्छा वर्णन किया है। वरनी ने सम्भवतया इस घटना का जान बूझकर छिपाया था।

1- रिजवी एम ए ए - तुगलकवालीन भारत, भाग (1) पृष्ठ 6

2- रिजवी एम ए ए - " " " " " "

गयासुदीन तुगलक १ खुगरो द्वारा मुत्तय गये धन को पुन प्राप्त करन का प्रयास किया था उगी व अतगत उसन इमामी के पूयजो व १ ग्राम भी जत कर लिय थे । इमामी का मानना था कि उन धामो का उग सूचि म मम्मिचित नही किया जा सकता था । अत उन इन काय का आनामना की है । अतान गयासुदीन तुगलक के नान की काफी प्रगगा की है । अत इमामी के पूर्वजा व ग्रामा का छोना जाना पूणतया अर्थाय वमाना कटिन है ।

मुलतान मुहम्मद बिन तुगलक १ जय दिल्ली मे अगिरी राजधानी स्थानातरित की ती इमामी भी अपन दाग के माव दिल्ली मे अगिरी गया । रास्ते म उसके तादा की मृत्यु हो गई । अत लोगो व साथ वह भी कट भागना हुआ देवगिरी पहुचा । अत वह मुहम्मद तुगलक स भयकर नाराज था । इस कारण उसका मुलतान के प्रति शोद्ध घडा स्वाभाविक ह । इमामी के अनुसार अफगानपुर के महल की दुषटना निम्न दा कारणो से हुई थी -

1- हाथियो को पीडाना

2- उलुग खा ने पडमत्र रचकर ऐसा महन बनवाया कि मुलतान जैसे ही उसके नीचे बैठे, वह छत पिना किमी प्रयास व गिरे जाय ।

बरनी ने मुहम्मद बिन तुगलक व राज्यकाल के प्रारम्भ का कुछ घटनाश्री का वणन नही किया है उनका वणन इमामी न किया है । पण वर विजय तब गुगास्प व विद्रोह का वणन अय समकालीन ग्र था म नही मिलता । इमामी न गुगास्प व विद्रोह का वणन विस्तारपूर्वक लिखा है । इस सम्बध म इनबनुता का विवरण इमामी से मिलता है ममकालीन इतिहासकारी म केवल इमामी ही ऐसा इतिहासकार है जिसन मधियाना की विजय का वणन किया है । उनने बहराम आयवा के विद्रोह के सम्बध म कुछ ऐसी बातो का वणन किया है जो समकालीन इतिहास क ग्रो म नही मिलती ।

यद्यपि इमामी कलि था परंतु उसमे ऐतिहासिक घटनाश्री को शुद्ध एव तिविक्रम से लिखने की आन्वयजनक क्षमता थी । ' मुहम्मद तुगलक के राज्यकाल मे उसे अत्यत कट और पीडा का सामना करना पडा था । अय सब लोगो की भाति उसे भी दौलतावाद जान और उन लम्बी यात्रा के कट उठान के लिये बाध्य होना पडा था । सम्भवत इसीलिये वह मुहम्मद तुगलक का कटु आलोचक है और उसे एव ऐसे अत्याचारी शासक के रूप म चित्रित करता है जिसे अपनी जनता के दुख दद की कोई चिन्ता नही थी । उसने मुलतान के निष्ठुर कृत्यो को अपनी आखों से देखा था और वह स्वयं उसके कुशासन और विद्रोहो से उत गया था । ' 1

इसामी ने दिल्ली से देवगिरी पहुँचने के पश्चात् मुलतान के विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं की। जहाँ कहीं भी मुलतान का नाम आता है, उसका क्रोध उबल पड़ता है। उसने अभी विद्रोह का समय दिया है तथा विद्रोहियों की बाणी प्रशंसा की है तथा मुलतान की महायत्ना करने वाला का वह भ्रष्टाचारी की महायत्ना करने वाला कहता है। मुलतान की आज्ञा का पालन करने वालों एवं उसका विरोध न करने वालों की भी वह आज्ञा देना चाहता है। उसने लिखा है कि "यदि दहली जाने उमने आज्ञा का पालन नहीं करते तो वे इनके कष्ट में नहीं पड़ते। हम लोगों का इसी प्रकार का फल भागना पड़ता है जो कोई भ्रष्टाचारी पर गया करता है तो वही उमका मिर मिट्टी में मिला देता है। लोगों ने एक उपद्रवी की भयना आदगाह बना दिया और उमी समय से मुद्र नहीं किया। यदि कोई मरतार उम उपद्रवी के विरुद्ध किसी प्रदेश में अपनी पताका उठाता है तो उदृत में अयोग्य उम उपद्रवी (मुलतान) की महायत्ना करने लगते हैं और उम व्यक्ति का साथ नहीं देते। यह दुष्ट भ्रष्टाचारी (मुलतान) हमारे भय में प्रकाल तथा भ्रष्टाचार उत्पन्न कर रहा है। यदि हम सब लोग संगठित हो जायें और उम पर आक्रमण कर दें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, यदि उसका मिर मिट्टी में मिला जाय।'

इस प्रकार राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये उत्साहित करने की शिक्षा इसामी ने अनावा अय किमी इतिहासकार न गायन ही दी होगी। डॉ० रिजवी के अनुसार 'इसामी ने मुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध आधाधुध दोषारोपण किये हैं।'

इसामी ने साने के सिक्का के बारे में लिखा है कि इस नई मुद्रा के कई कुप्रभाव दृष्टिगोचर हुए। अन्वामी खलीफा के द्वारा अधिकार पत्र मिलान में पहले मुलतान में गुज्रवार और ईदों की नमाज पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसका कारण इसामी ने निम्न प्रकार में किया है - "उमने इस्लाम के नियम त्याग दिये थे और कुफ प्रारम्भ कर दिया था। उमने अजान बन्द करवा दी थी। मुलतान रात में उमने घुला करते थे। उमने जुम्मा की जमाअत (नमाज) भी रकवा दी थी।'

परन्तु इसामी का यह कथन सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि इन्वन्तूता उस कथन की पुष्टि नहीं करता है। इन्वन्तूता ने लिखा है कि मुलतान मुहम्मद बिन तुगलक धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था और नमाज नहीं पढ़ने वाले व्यक्तियों की वह हत्या करवा देता था। प्रत्येक वर्ष ईद के अवसर पर दरबार में सानगर समारोह आयोजित किये जाते थे। इसामी ने हिन्दुस्तान की प्रशंसा की है तथा

(1) रिजवी एम ए एम तुगलक कालीन भारत भाग प्रथम पृष्ठ ४६

अलाउद्दीन खिलजी से मुहम्मद तुगलक की तुलना की है। उसने अलाउद्दीन खिलजी की काफी प्रशंसा की है और मुहम्मद बिन तुगलक की घोर निन्दा की है। इसामी सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक से नाराज था। अतः उसके द्वारा सुलतान के चरित्र के बारे में जो कुछ लिखा गया है, उसे एकत्र सही नहीं माना जा सकता।”

डा० रिजवी ने लिखा है कि “इस काल से सम्बन्धित इसामी की कृति का सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग अक्षिण का इतिहास है। सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरी के शासन सम्बन्धी सभी अधिभार अपने गुरु कुतलुग खा को प्रदान कर दिये थे। कुतलुग खा की वीरता तथा योग्यता की बरती न बड़ी प्रशंसा की है। इसामी भी उसके गुणों से बड़ा प्रभावित था। कुतलुग खा द्वारा अनेको विद्रोहों को शांत किये जाने का उल्लेख इसामी ने बड़े निष्पक्ष भाव से किया है। हसन कागू द्वारा बहमनी राज्य की स्थापना तथा बहमनी राज्य का प्रारम्भिक हाल, इसामी ने बड़े विस्तार से लिखा है। बहमनी राज्य के अमीरों की उसने बड़ी प्रशंसा की है। उनके कारनामों का उसने बड़ा विशद चित्रण किया है। उसने अपनी रचना सुलतान अलाउद्दीन बाहमनशाह को समर्पित की। वह उसे देवगिरी का मुक्तिदाता समझता था।”

डा० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि “इसामी की प्रवाहमयी शैली प्रभावोत्पादक है किंतु इन सबसे अधिक प्रभावोत्पादक है उनकी उपयुक्तता।”

ग्रन्थ के दोष (1) इसामी ने अपनी कृति में घटनाओं की तिथियाँ बहुत कम दी हैं इसलिये तिथियों के लिये हमें अन्य रचनाओं पर निर्भर रहना पड़ता है। (2) इसामी तुगलक वंश के सुनतानों से रूठे थे। अतः उसने उनकी बहुत बुराई की है।

मूल्यांकन इन दोषों के बावजूद भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि ऐतिहासिक दृष्टि से उसकी कृति का बहुत अधिक महत्व है। उस समय में तो कोई बान्शाह की बुराई कर सकता था और न ही उसके खिलाफ लिख सकता था। परन्तु हम उसके इतिहास से सुलतानों के आलोचकों का मत भी जान सकते हैं।

इसामी ऐतिहासिक घटनाओं को मानवीय गतियों द्वारा प्रेरित नहीं मानता था। उनका यह मानना था कि “इतिहास में जो कुछ होता है वह ईश्वर की इच्छा से होता है तथा उस पर मनुष्य मात्र का कोई वजन नहीं है।”

1- रिजवी एस ए एस तुगलक कालीन भारत, भाग प्रथम पृष्ठ 8

2- डा० ईश्वरी प्रसाद - भारतीय मध्य युग का इतिहास, पृष्ठ 27

9 | इब्नबतूता : किताब-उल-रहला

इब्नबतूता तानजीर का निवासी था। पूर्वी देशों के लोग उसे शम्सुद्दीन के नाम से पुकारते थे। "वह अरब तथा अरबी बोलने वाले मुसलमान यात्रियों की विस्तृत श्रृंखला की एक बड़ी था। जो मध्यकाल में समय समय पर भारतवर्ष से आते रहें और जिन्होंने भारतवर्ष के विषय में अपनी यात्राओं के विवरणों तथा भूगोल एवं इतिहास की पुस्तक में कुछ लिखा। वह चौदहवीं शताब्दी का बड़ा ही महत्वपूर्ण यात्री था।"

इब्नबतूता 1325 ई० में तानजीर से मक्का के लिये रवाना हुआ। 15 अगस्त 1331 ई० का मक्का पहुंचा। इसके बाद 1333 ई० में वह कई स्थानों का भ्रमण करता हुआ दिल्ली पहुंचा। मुहम्मद तुगलक के दरबार में उसका अच्छा सम्मान था। सुलतान ने उसे 1342 ई० में चीन में राजदूत बनाकर भेज दिया। मराको के सुलतान अबु इनायान मरीनी ने इब्नबतूता को विषय प्रस्तावित किया था। जिन जिन देशों को उसने देखा था, उनका हाल लिखने का उसे आग्रह किया। इब्नबतूता की यात्राओं का संकलन 756 हि० (1355-56 ई०) में पूरा हुआ। एक हस्तलिखित पौथी के अनुसार इस यात्रा को 'तुहफत उन-नुजार' की गणना में अमरमार अजाईबुल अफसार "नाम दिया गया।"

इब्नबतूता मुहम्मद तुगलक के दरबार में 8 वर्ष तक रहा था। उसने भारत के भूगोल, शासन प्रबंध, डाक व्यवस्था, और सुलतान के दरबार आदि का विस्तृत विवरण दिया है। डा० एस ए ए रिजवी ने इब्नबतूता के विवरण को संक्षिप्त रूप से निम्न प्रकार लिखा है -

भौगोलिक विवरण - इब्नबतूता ने भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति, यहाँ जनवायु, फल-फूल वनस्पति, पशुधन तथा वेशभूषा और रहन सहन कृषि एवं व्यापार के विषय में विस्तार से लिखा है। वह जिन नगरों में भी पहुंचा उनका उसने बड़ी गहन दृष्टि से अध्ययन किया। उसकी यात्रा के विवरण के द्वारा भारतवर्ष के अनेक समकालीन नगरों के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त हो

जाती है। इब्नबतूता। इन्होंने का ज्ञान उच्च विस्तार में विस्तार है। नगर की चार दीवारी, विभिन्न द्वार देहली की जाया मस्जिद, इन्होंने की मन्ना, तथा देहली नगर के उच्च हाजा या उच्च ही विस्तार उन्नत किया गया है। उनके भौगोलिक ज्ञान का मूल आधार उमका व्यक्तिगत निरीक्षण है और वह किसी ग्रन्थ में इस सम्बन्ध में प्रभावित नहीं हुआ है। आरम्भ में ही उमन विभिन्न नगरों की दूरी तथा उमन की चरित्र का उन्नत किया।

शासन प्रबंध - इब्नबतूता का सम्बन्ध ग्रामों के शासन प्रबंध तथा जाय व्यवस्था और वस्त्र (धर्म मस्याम्रा) के इतजाम में विशेष रूप में रहा। उमका यात्रा के विवरण में समकालीन ग्रामों के शासन प्रबंध पर भी प्रकाश पड़ता है जिसकी चर्चा अथ समकालीन इतिहासिक ग्रन्थों में कम ही मिलती है।

मुलतान तथा उच्च पशाधिकारियों की गतिविधि से वह पूर्ण रूप से परिचित था। अतः उमन उनके कृत या एव उमन सम्बन्धित राजकीय मस्याम्रा का उन्नत विस्तार से किया है। उमके पयटन लेख द्वारा अनेकों पारिभाषिक शब्दों के विषय में भी ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इसलिये कि अथ समकालीन इतिहासकारों ने, जो इसी शासन प्रबंध में रहते चले आये थे उन शब्दों की व्याख्या की आवश्यकता नहीं समझते थे। किन्तु इब्नबतूता ने मध्यकालीन भारतीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वाला की कठिनाई का बहुत कुछ निवारण कर दिया है। केन्द्र के शासन प्रबंध की दृष्टि के ज्ञान के साथ साथ उसकी यात्रा के विवरण के लेख से यह भी पता चलता है कि देहली से थोड़ी ही दूर पर जलाली में किस प्रकार अव्यवस्था थी और इब्नबतूता को अपनी जलाली की यात्रा में कितने कष्ट भोगने पड़े। यद्यपि डाक का प्रबंध बड़ा ही उचित था और बड़े ही द्रुतगामी समाचारवाहक राज्य के भिन्न भागों में फैले हुए थे। किन्तु फिर भी ग्रामों में अधिक शांति नहीं थी। इब्नबतूता ने उच्च बड़े अधिकारियों के घस लन की चर्चा की है क्योंकि घस के कारण उम स्वयं कुछ समय कष्ट भोगने पड़े और उमका क्रण जिमकी अग्यगी का मुलतान द्वारा प्राप्त हो चुका था, अग्य नहीं हो सका।

दरबार - इब्नबतूता मुलतान के दरबार से विशेष रूप से सम्बन्धित था। उमन दरबार की प्रत्येक वस्तु को बड़ी गहन दृष्टि से देखने तथा दरबार की प्रथाओं को समझने का विशेष रूप से प्रयत्न किया है। वह मुलतान के जुलूम में भी सम्मिलित होता रहता था। अतः उमन जो कुछ भी माधारण तथा विशेष अवसर पर होने वाले दरबारी और मुलतानों के जुलूमों के विषय में लिखा है। उम मध्यकालीन भारतीय इतिहास का अमर अथाय समझना चाहिये।

दार्ढ्य प्रबंध - इब्नबतूता जब हि दुम्नान पहुँचा तो यह देखकर कि किस प्रकार

साधारण से साधारण वान मुसतान तब तेजी से पहुँचाई जाती थी, बड़ा प्रभावित हुआ। उसने मुसतान के डान की व्यवस्था का उन्मुख बड़े विस्तार से किया है। उमन राज्य के गुप्तचरों का हाल भी लिखा है और एनुलमुल्क के विद्रोह के सम्बन्ध में बताया है कि किस प्रकार लोगो के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित बातें भी मुसतान के पास पहुँच जाती थी और लोगो के अपराध किसी प्रकार दिये नहीं रह सकने थे।

समकालीन राजनीतिक घटनायें - इब्नबतूता ने अपनी यात्रा के विवरण में देहली के पूर्ववर्ती मुसतानो का इतिहास इस देश के विद्वंसनीय लोगो से सुनकर लिखा है। उसके ज्ञान के पूर्व मुसतान मुहम्मद बिन तुगलक के राज्यकाल में जो घटनायें घटी थी, उनकी भी उसने बड़ी विंगत चर्चा की है। देहली के विनाग का उमन बड़ा ही मार्मिक ढंग में उल्लेख किया है। बहाउद्दीन के विद्रोह तथा कम्पिला के राय का उमकी महायता हतु अपना सबन्ध बलिदान कर देने का हाल तथा विंगनू खा के विद्रोह एवं उमकी हत्या की चर्चा इन्बतूता ने बड़ी विस्तृत रूप से की है। बराचिल की दुषटना, माबर तथा अक्षिण के अय विद्रोहो का हाल भी इब्नबतूता ने लिखा है। एनुलमुल्क के विद्रोह के समय वह स्वयं उपस्थित था। उमके विवरण द्वारा पता चलता है कि किस प्रकार मुसतान मुहम्मद बिन तुगलक युद्ध के समय अपने राज्य के हितयिया में परामर्श किया करता था। विद्रोहो के अतिरिक्त उम समय के अकाल का हाल इब्नबतूता ने बड़े विस्तृत रूप से दिया है।

मुसतान मुहम्मद बिन तुगलक का चरित्र - इब्नबतूता ने मुसतान मुहम्मद बिन तुगलक के चरित्र का गहन अध्ययन किया था। मुसतान द्वारा उसे विशेष प्रोत्साहन प्राप्त होना रहता था। मुसतान उम पर बड़ी कृपा दृष्टि रखता था। इब्नबतूता की यात्रा के विवरण से पता चलता है कि किस प्रकार मुसतान मुहम्मद बिन तुगलक परदगिया का सम्मान किया करता था और उन्हें अत्यधिक इनाम प्रदान करता रहता था। मुसतान जिस प्रकार यागियो में मिलता जुलता और योग मिद्धियो में रुची लता, उसका भी उन्मुख इब्नबतूता ने किया है। सम्भवतया इसी आधार पर इसामी ने उमकी कटु आलोचना की है। इब्नबतूता मुहम्मद बिन तुगलक की यागप्रियता से बड़ा प्रभावित था। उसके यात्रा विवरण में पता चलता है कि याग के सम्बन्ध में मुसतान मुहम्मद बिन तुगलक को अपना निकटतम सम्बन्धिया तथा उच्चपदाधिकारियो को भी कठोर दण्ड देने में कोई मकान नहीं होता था। मुसतान की यागप्रियता के साव-साथ जब इब्नबतूता उमके अत्यधिक अत्याचारो एवं हत्याकाण्ड को देखता था तो उसे बड़ा ही आश्चर्य होता था। जियाउद्दीन बरनी की तारीख ए फीरोजशाही के समान इब्नबतूता के

यात्रा विवरण से भी मुलतान मुहम्मद बिन तुगलक का चरित्र एवं जटिल सम्प्रा-
बन्धन गया है। दोनों ही उनके विरोधाभासी गुणों का स्खर स्वयं लिखा पढ़ा
हैं। इब्नबतूता की यात्रा के विवरण के द्वारा भी मुलतान मुहम्मद बिन तुगलक
की महत्वाकांक्षाओं पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

आलिम तथा सूफी - इब्नबतूता स्वयं एक धार्मिक व्यक्ति था। उस अपने धर्म
से बड़ा ही प्रेय था। उनमें अपनी यात्रा के विवरण में जिन सूफियों का उल्लेख
की, इनके विषय में भी उनमें अपने पयटन लेख में चर्चा की है। वह देहली के
समकालीन आलियों के सम्पर्क में भी आया और उनमें उनके विषय में भी अपनी
यात्रा के विवरण में विभिन्न स्थानों पर लिखा है।

सोगो का रहन-सहन - इब्नबतूता ने भारतवर्ष के रीतिरिवाज लोगों के
रहन सहन, तथा वेलाभूषण का भी उल्लेख किया है। मुसलमानों के विवाह की
भारतीय प्रथाओं का इब्नबतूता ने बड़ा ही विस्तृत विवरण दिया है। उनमें मुलतान
मुहम्मद बिन तुगलक की बहिन के अमीर सैफुद्दीन के विवाह का हाल बड़ा
विस्तार से लिखा है। वह अमीर सैफुद्दीन का घनिष्ठ मित्र था। अतः उसे इस
विवाह के सम्बन्ध में साधारण से साधारण बात का ज्ञान था। मुसलमानों में
सकलान्नीन मृतक क्रियाएँ क्या क्या थीं और उनका पालन किस प्रकार होता था
यह सब इब्नबतूता को अपनी पुत्री के मृतक सम्पर्क के अवसर पर स्वयं देखा
का मौका मिल गया था।

मनोरजन तथा आमोद प्रमोद - इब्नबतूता भारतवर्ष के विभिन्न भागों में
नाना प्रकार की दावतों तथा भोजों में सम्मिलित हुआ था। शाही भोजन का
प्रबन्ध तथा साधारण भोजना के नियम भी उसने विस्तार से लिखे हैं। भोजन
तथा मिठाइयाँ के विस्तृत उल्लेख भी इब्नबतूता ने यात्रा विवरण द्वारा प्राप्त हो
जाते हैं। पान खान का महक तथा उसकी विशेषता का उल्लेख भी इब्नबतूता ने
किया है। भारतवर्ष के कुछ नगरों राजारों तथा उनका पहल पहल, सजावट,
और तस्मन्वधी अथवा बानों का उल्लेख इब्नबतूता के विवरण में पाया जाता है।
मुलतान के अभियानों के उपरान्त राजधानी में लौटने के समय और विशेष
अवसरों पर किस प्रकार मनोरजन तथा नगर किस प्रकार सजाया जाता था
इनका भी इब्नबतूता की यात्रा विवरण में बड़ा विस्तृत विवरण दिया है। मुस्लिमों
के गायन नृत्य एवं धर्म मंगीता तथा नृत्य का हाल भी यात्रा विवरण में ज्ञात
होता है। दीलताशान के गायकों तथा गायिकाओं के बड़े बाजार का भी इब्नबतूता
ने विवरण दिया है।

व्यापार - जब इब्नबतूता को राजदूत बनाकर चीन की ओर भेजा गया तो
उसने विभिन्न स्थानों के व्यापारों का भी अध्ययन किया। भारतवर्ष के समुद्रीय

तट के बन्दरगाहों के व्यापार, नौकाओं, जहाजों तथा अन्य दंगा के व्यापारियों से सम्पर्क का हाल भी इन्नबतूता ने बड़े विस्तार से दिया है। नारियल, वाली मिच तथा बन्दरगाहों में उत्पन्न होत वाली अन्य वस्तुओं का भी उल्लेख इन्नबतूता ने किया है।

इन्नबतूता का चरित्र - इन्नबतूता की यात्रा से बड़ी शक्ति थी। उसने समार के बहुत बड़े भाग की यात्रा की और वह नाना प्रकार के लोगों के सम्पर्क में आ चुका था। प्रत्येक नई बात को गहन दृष्टि से दखन तथा गम्भीरतापूर्वक उस पर विचार करने की उसकी आदत सी पड़ गई थी। वह बड़ा ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का था। यदि उसमें यह गुण न होता तो सम्भवतया छोटी छोटी और साधारण बातों का ज्ञान जो हम उसकी यात्रा विवरण के द्वारा प्राप्त हो जाता है, न प्राप्त हो सकता। वह बड़ा स्पष्ट बक्ता था और अपने हृदय की किसी बात को छिपाना न जानता था। उस अपनी त्रुटियों का भी स्पष्ट रूप से उल्लेख कर देने में किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव न होता था। वह बड़ा अपव्ययी था। मुलतान द्वारा उसे जो कुछ भी प्राप्त होता, वह उसे गीमातिगीम उड़ा देता। ऋण लेता तो उसके स्वभाव का एक भग बन गया था। मुलतान ने इस हेतु उसे एकादर नेतावनी भी दी। उसने अपनी यात्रा का विवरण बड़ी ईमानदारी से दिया है। यह सम्भव है कि पिछली घटनाओं के सम्बन्ध में जो कुछ उसे अपने सूत्रा से ज्ञात हुआ, उसका कुछ भाग निराधार हो। जिसे उसने जिना किसी निरीक्षण के स्वीकार कर लिया हो। किन्तु उस पर घटनाओं को तोड़, मरोड़ कर उतार करने का दोष नहीं लगाया जा सकता। जो बातें उसके अपने ज्ञान तथा स्वनिरीक्षण पर आधारित हैं। उनके विषय में तो यह कहा जा सकता है कि सम्भव है उसे समझने में भून हुई हो किन्तु उसे झूठा सिद्ध करना बठिन है” ।

निष्कर्ष - इन्नबतूता की एक अछे इतिहासकार का दर्जा प्राप्त है क्योंकि उसने स्वनिरीक्षण के आधार पर घटनाओं का वर्णन किया है। उसने अपने विवरण में घटनाओं की तिथियाँ बहुत कम दी हैं। फिर भी तुगलक वंश के इतिहास के लिये वह एक बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है।

1- रिजवी, एस ए ए - तुगलकवालीन भारत, भाग (1) पृष्ठ ६ एवं ७ ।

=* =

यहिया बिन अहमद तारीख-ए-मुबारकशाही

इस ग्रंथ में मुहम्मद गौरी के शासनकाल से संबंध बना के तीसरे मुलतान मुहम्मद तक के शासनकाल का वर्णन मिलता है। मुलतान फीरोज़ और उसके उत्तराधिकारियों के इतिहास के सम्बंध में यहिया बिन अहमद की यह रचना विशेष महत्वपूर्ण है। संघर्ष वर्ग के इतिहास की जानकारी का एवमात्र समकालीन ग्रंथ यही है और बाद के निजामुद्दीन अहमद, बदर्युनी आदि इतिहासकारों ने भी संघर्ष वर्ग के इतिहास के लिये इसी ग्रंथ को अपना आधार बनाया। लेखक का पिता अहमद और अहमद का पिता अब्दुल्ला सरहिंदी था। सरहिंद पहले सिहरिंद कहलाता था और इसी नाम का उसने उपयोग किया है।¹ इसीलिये लेखक को यहिया बिन अहमद सिहरिंदी कहते हैं।

यहिया ने अपने ग्रंथ में खुद के बारे में कुछ नहीं लिखा है। श्री के० के० बामू ने "तारीख ए मुबारकशाही" का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। इसके प्राक्वचन लेखक सर जे० एन० सरकार ने लिखा है कि केवल यहिया शीमा मत का अनुयायी था जबकि ग्रंथ इतिहासकार सुधी मत के अनुयायी थे। इसलिये उसका इतिहास काफी दिलचस्प हो गया है। हमें यह पता नहीं चलता कि सर जे० एन० सरकार को यह बात किस स्रोत से ज्ञात हुई है क्योंकि न तो यहिया न ऐसा सकेत अपने ग्रंथ में दिया है और न ही किसी बाद के इतिहासकार ने इस सम्बंध में कुछ लिखा है।

यहिया ने अपने इतिहास की भूमिका में मुहम्मद साहब की प्रशंसा के उपरांत जिस प्रकार चारो खलीफाओं की प्रशंसा की है उससे पता चलता है कि वह शीमा नहीं था और सर जे० एन० सरकार का यह निष्कर्ष भ्रममात्र ही प्रतीत होता है² ।

यहिया बिन अहमद न अपनी कृति को गैर वंश के शासक मुइज्जुद्दीन अयुब फतह मुबारकशाह (1421-1433 ई०) को समर्पित की। ऐसा प्रतीत

1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 5

2- रिजवी एम ए ए - उत्तर तैमूरवानीन भारत, भाग (एक) पृष्ठ छ

होता है कि लेखक ने कुछ ग्रन्थों को आधार बनाकर ही अपनी कृति लिखी होगी परन्तु ये ग्रन्थ ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते हैं। यहिया ने गयासुद्दीन तुगलक के बारे में लिखा है कि वह दयालु, यामप्रिय, योग्य, बुद्धिमान बादशाह था। दिन में पाचों बार नमाज जमाअत के साथ पढ़ता था। सोने के समय की नमाज जब तक वह नहीं पढ़ लेता था, अन्त पुर में नहीं जाता था।

यहिया ने लिखा है कि अमीरों, मलिकों, इमामों, सयदों, काजियों, आदि की सब सम्मति से गयासुद्दीन तुगलक का 26 अगस्त 1321 ई० को राज्याभिषेक हुआ। उसने अमीरों, और मलिकों को पद, सम्मान, तथा अर्पण प्रदान की। इसके अतिरिक्त अपने सम्बन्धियों को भी उच्च पद पर नियुक्त किया एवं उपाधिया प्रदान की। इससे हमें गयासुद्दीन के तेलगाना जाजनगर एवं लखनौती अभियान के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। यहिया बिन अहमद ने गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बारे में लिखा है कि "जब वह अफगानपुर पहुँचा जहाँ एक महल में जो दरवाजे आम के लिये शीघ्रताशीघ्र बनवाया गया था और गीला था, दरवार किया और आदेश दिया कि जो हाथी लखनौती के विध्वंस के द्वारा प्राप्त हुए हैं उन्हें एक साथ दौड़ाया जाय। महल गीला था। पर्वत रूपी डीलडोल वाले हाथियों के दौड़ने के कारण महल हिल गया और गिर पड़ा। मुलतान गयासुद्दीन तुगलक ग्राह एक अग्र्य मनुष्य के साथ महल के नीचे दब गया और शहीद हो गया। यह घटना फरवरी माच 1325 ई० में घटी।"

तारीख ए-मुबारकग्राही से पता चलता है कि 1326-27 ई० में मुहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरी की ओर प्रस्थान किया। इसके अतिरिक्त गशास्य बहराम शायब, मलिक निजाम (बडा का सूबेदार) एनुलनुल्क एवं तगी आदि के विद्रोह के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। यहिया ने मुहम्मद तुगलक की वर बुद्धि, राजधानी का दिल्ली में देवगिरी स्थानांतरण मात्रैतिक मुद्रा का प्रचलन, एवं कराचल पर आक्रमण आदि योजनाओं का विस्तृत वर्णन किया है। 'उसने मुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के बारे में लिखा कि 'जब उसके अत्यधिक अत्याचार के कारण उसके राज्य के काय तथा शासन प्रबंध में विघ्न पड़ गया तो मुलतान इसी मोच में शरण हो गया।' इसी वजह से उसकी 20 माच 1351 ई० में मृत्यु हो गई।

यहिया बिन अहमद ने तैमूर के आक्रमण के पश्चात् देहली सरतनन की दुर्दशा का वर्णन करते हुए लिखा है कि "तैमूर के चले जाने के उपरांत देहली के आसपास तथा उन समस्त स्थानों में, जहाँ से होकर उसकी सेना गुजरी थी, महामारी तथा कुछ लोगों की भूखमरी के कारण मृत्यु हो गई। देहली दो मास

तक बड़ी ही श्रद्धावस्थित तथा शोचनीय दशा में रही । ”

• तारीख ए मुबारकग़ाही में तुसरतशाह का राज्य प्राप्ति¹ हतु प्रयास महमूद का कश्मीर पर¹ आक्रमण, तानार खा द्वारा नासिरुद्दीन महमूदग़ाह का उपाधि धारण करना, महमूद द्वारा देहली पर अधिकार¹ मुबारकग़ाह का 20 मई 1421 ई० को राज्याभिषेक एवं उसकी विजयों के बारे में विस्तृत विवरण है ।

डा० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि “यहिया एक सजग इतिहासकार है, जिसकी शैली अतिरजना और विशेषणों से मुक्त है । वह सीधे सादे ढंग से लिखता है । फीरोज तुगलक के राजस्व की घटनाओं का वर्णन करने के उपरान्त वह यह कहता है कि इसकी परवर्ती सामग्री उसके व्यक्तिगत अनुभवों तथा विद्वत्सनीय व्यक्तियों द्वारा प्राप्त जानकारी पर आधारित है । तारीख ए मुबारकग़ाही केवल एक मौलिक समकालीन रचना है जो सैयद बग की जानकारी के लिये उपयोगी है । अथ अन्य चीजों के लिये लेखक नई जानकारी प्रदान करता है । वह मुहम्मद तुगलक के राज्यकाल के विषय में कुछ तिथियाँ देता है जिसमें यह बात होता है उसने परती की तारीख ए फीरोजग़ाही के अतिरिक्त अन्य ग्रंथों का भी अवलोकन किया होगा । उसने घटनाओं का बड़ी इमानदारी से वर्णन किया है और फीरोज की मृत्यु के उपरान्त होने वाले उपद्रवों के लिये उसका ग्रंथ अत्यंत प्रामाणिक है । उसने उन समय के गति भंग करने वाले विद्रोहों का विस्तार से वर्णन किया है । ”

डा० रिजवी ने तारीख ए मुबारकग़ाही का अनुवाद किया है । इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास चतुर्थ खण्ड में इसका अधिकांश अनुवाद किया है । गायकवाड आरिक्टल प्रेमाला ने इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कर दिया है । निष्कर्ष - यहिया बिन अहमद का ग्रंथ एतिहासिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि फीरोज तुगलक के उन्नाधिकारियों और सैयद मुबतानो के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला यह एक मात्र ग्रंथ है । उसने घटनाओं का ब्रह्म बद्ध रूप से वर्णन किया है ।

मेरे निजामुद्दीन औलिया ने गयामुद्दीन तुगलक का विरोध किया था ।

इस घटना का सबसे प्रथम वर्णन यहिया ने अपने ग्रंथ में किया। या" के इतिहास-कारों ने उसी का अनुसरण किया है। उसने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के समय घटित घटनाओं की तिथियाँ भी दी हैं।

यहिया बिन अहमद ने सैयद सुलतानों के उत्थान और पतन का विस्तृत विवरण दिया है। यदि यहिया का ग्रंथ हम उपलब्ध नहीं होना तो सम्भवतः 1380 से 1434 ई० तक के इतिहास से हम वंचित रह जाते और 55 वर्षों में घटित घटनाओं का भ्रमण के गभ में ही समायी रहती।

निजामुद्दीन और फरिश्ता ने यहिया बिन अहमद के विवरण को पटा बटाकर लिख दिया है। यद्यपि वह सैयद सुलतानों पर आश्रित था परन्तु उसने अपने ग्रंथ में उनकी अनावश्यक प्रशंसा नहीं की है। इसके अतिरिक्त उनकी कृति में हमें निष्पक्षता के दशन होते हैं।



अहमद यादगार : तारीख-ए-सलातीन-ए-अफगानी

अहमद यादगार ने " तारीख ए-सलातीन ए अफगानी " में लिखा है कि वह सूर यादगारो का प्राचीन सेवक था। उसकी कृति से पता चलता है कि उसका पिता गंजर के तीसरे पुत्र अस्वरी का बजोर था। अहमद यादगार ने तारीख-ए-सलातीन ए अफगानी अथवा तारीख ए गाही की रचना अफगान शासक दाउद बिन मुलेमानशाह के आदेशानुसार की। इस कृति का उगम काय जहागीर के राज्यकाल में पूरा हुआ। इसमें 1451 से 1554 ई० तक लगभग 103 वर्ष तक का इतिहास है। इसमें मुलतान बहलोल लोदी, इब्राहिम लोदी, शेरशाह, इम्नामशाह, फीरोज़शाह, आदिलशाह, इब्राहिम सूर, सिक्तर शाह आदि शासकों की उपलब्धियों का विवरण है। इस प्रकार यह लोदी एवं सूर वंश के इतिहास जानने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

यद्यपि लखन का मुख्य उद्देश्य अफगान मुलतानों का इतिहास लिखना था परन्तु उमन गंजर, हुमाय तथा अकबर के शासनकाल की घटनाओं का वर्णन भी किया है। उसने अपनी कृति में बहुत सी अलौकिक घटनाओं का विवरण भी दिया है। कुछ घटनाएँ तो पूर्णतः 'वाक्यान्त' मुश्किलों से ली गई प्रतीत होती हैं। अहमद यादगार ने 'तारीखे निजामी' और मादेजुल अखबार को आधार बनाकर अपनी कृति की रचना की है।

अहमद यादगार ने लिखा है कि सिक्तर लोदी की बचिता में हचि थी। मुलतान इब्राहिम लोदी का अपने भाई जलालुद्दीन से विश्वासघात, उसके द्वारा खालियर विजय, अमीरो के प्रति उमन की नीति इस्लाम खा के विद्रोह का दमन रागा मंगा में युद्ध, हुसैन खा द्वारा राणा मागा से मरिय एवं आजम हुमायूँ का खालियर में बुलाकर उसकी हत्या करवाना आदि घटनाओं का विवरण उमने अपनी कृति में लिखा है। मुलतान बहलोल लोदी के शहजादे तथा अमीरो की मामावली भी तारीख ए सलातीन ए अफगानी में दी हुई है।

ग्रन्थ के दोष -

इस ग्रन्थ के प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं -

(1) इस ग्रन्थ में वर्णित घटनाएँ अधिक विश्वसनीय नहीं मानी जा सकती क्योंकि

लेखक ने मुनी सुनाई बातें अधिक लिखी हैं। उदाहरणार्थ - अहमद यादगार ने लिखा है कि शेरशाह और महारथ जमींदार के बीच हुए युद्ध का कारण श्याम मुदर नामक हाथी था जबकि युद्ध का दूसरा ही कारण था। ऐसा मालुम होता है कि अहमद यादगार ने शेरशाह के शासनकाल की अनेक घटनाओं का वर्णन करने से पूर्व आवश्यक जांच पड़ताल नहीं की।

(2) उमन घटनाओं की तिथियां बहुत कम दी है।

इन दोषों के होते हुए भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उसने अपनी वृत्ति में शेरशाह के कुछ छोट छोटे अभियानों का वर्णन किया है जो अथर्व किसी अथर्व में उपलब्ध नहीं होते हैं। अहमद यादगार ने लिखा है कि मुहम्मद तुगलक की भांति शेरशाह ने भी तावे की मावेतिक मुद्रा चलाई थी, जो सफल हुई।



12 | नियामत तुल्ला: मखजन-ए-अफगान

स्वाजा नियामत तुल्ला ने भी अफगान सुलतानो का इतिहास लिखा। अफगान शासकों का इतिहास जानने के लिये इसका ग्रंथ काफी महत्वपूर्ण समझा जाता है। यह जहागीर (1605-1627 ई०) के समय का प्रसिद्ध इतिहासकार था। "मखजन ए अफगानी और तारीख ए खानजहा लोदी (तारीख खानेजहानी) को प्रायः अलग अलग ग्रंथ माना जाता है। किन्तु वास्तव में यह एक ही ग्रंथ है। तारीख में खानजहा लोदी (जहागीर के बड़े प्रसिद्ध सरदारों में से एक) के सम्मरण भी हैं। इसी से इसका यह नाम पड़ा। इसमें जहागीर का भी थोड़ा सा इतिहास है। किन्तु और सभी तरह से यह मखजन की ही आवृत्ति मालूम पड़ती है।" ¹

नियामत तुल्ला जहागीर के दरबार का वाक्यानवीस था। उसने नवाब खानजहा लोदी की आज्ञा से 1018 हि० में यह ग्रंथ लिखना आरम्भ किया। भारत में अफगानों का यह एक सामान्य इतिहास है जो सुलतान बहलोल लोदी के समय से आरम्भ होकर रवाजा उनमान की मृत्यु तक (1612-1613 ई०) की जानकारी देता है। जबकि अफगान सत्ता पूरी तरह समाप्त हो गई और उन्होंने जहागीर को आत्मसमर्पण कर दिया। ²

पुस्तक की भूमिका में उन ग्रंथों की सूची दी गई है जिनकी सहायता से लेखक ने अपने इतिहास का संकलन किया। कुछ प्रमुख ग्रंथों के नाम ये गिनाये हैं - तारीखें तबरी, तारीखें गुजि, तारीखें असनाफ अल खलायक, मजमअल असाव तारीखें निजामशाही अकबरनामा, तारीखें शेरशाही वाकियाते मुश्ताकी, तारीखें इब्राहिमशाही, तारीखें जहाक्शाय जुबैनी मतलउल अन्वार, मअ्नादने अल्लगर, अहमदी नियामत तुल्ला ने पुस्तक को सात भागों में लिखा है। प्रत्येक भाग का विषय इस प्रकार है ³

- 1- इलियट एंड डाउसन - भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 56
- 2- निगम एस वी पी (डा०) - सूरवंश का इतिहास पृष्ठ 89
- 3- निगम एस वी पी (डा०) - सूरवंश का इतिहास पृष्ठ 89

- भाग - 1, अफगानों का प्रथम म नियाम और वहाँ के निरन्तर अफगानिस्तान म नियाम ।
- भाग - 2, अफगानों के पूर्वज यानि युव यानि का इतिहास ।
- भाग - 3, भारतवर्ष म लोरी मुसलमानों का इतिहास, यानि लोरी म इब्राहिम लोरी तक ।
- भाग - 4, शेरशाह सूरी और उसके उत्तराधिकारियों का इतिहास ।
- भाग - 5, खानजहाँ लोरी और उसके पूर्वजों का इतिहास ।
- भाग - 6, अफगानों की जातियों का वर्णन ।
- भाग - 7, तुर्कीन मुहम्मद जहांगीर का इतिहास 1605 ई० स 1613 ई० तक । समाप्ति अफगान सत्ता का जायन चरित्र जो भारतवर्ष म दसे ।

समयजन ए अफगानी और तारीख ए खानजहाँ लोरी एक ही ग्रन्थ के दो नाम हैं । इतिहास एव डाउसन न इस सम्बन्ध म लिखा है कि 'शेरशाह के इतिहास के बारे में तारीख ए-खानजहाँ लोरी म उनना ही विस्तार है जितना समयजन-ए-अफगानी में । केवल खान एव और हाजी खा की प्रामाणिक दो लम्बी कविताएँ अधिक् है और शेरशाह के कुछ नियम भी अधिक् हैं । जा राज्य के अंत म लिगे गय है । इसमें वही क्रम है जा समयजन म है । किन्तु इसमें उससे अधिक् अंतर है और उसकी अपेक्षा निम्नस्तर का है । इस भाग म उनमें तारीख ए शेरशाही अर्थात्, तारीख निजामी, भाग म ए अकबर, और अकबर नामा से उद्धरण लिय है । ऐसा प्रतीत होता है कि मानों लख की इस बात का निश्चय नहीं है कि वह किस ग्रन्थ का अनुसरण करें क्योंकि कई स्थल इसमें परस्पर विरोधी है । इस्लामशाह का इतिहास टीन शाऊनी से मिलता जुलता है और समयजन से बिल्कुल नहीं मिलता । अफगानी का राज्य ठीक समयजन जैसा है । गुजाबल, बाजराहादुर ताज और इमान निरानी के सम्बन्ध में जा कुछ लिखा गया है वह भी एसा ही है । पूर्व म अफगान राज्य का अगला इतिहास और नीचे तक चला गया है और बंगाल के राज और 1021 हि० तक का पूरा इतिहास लिया गया है । माधुप्रो के इतिहास का वही स्तर नहीं है । यह भी लगभग अक्षरग यही है, किन्तु कुछ जीवनीया जैसे खानजा माहिया काबू की जीवनी का विस्तार स वर्णन किया गया है । समयजन का कुछ भाग इसमें से निवान दिया गया है और कुछ और बातें जो भद्दी और अर्था जैसी है वे इसमें लिय दी गई हैं । इन से डाक्टर लीज की प्रति से लेकर जो कुछ अपने नोटों में जोड़ा है लगभग वही मेरी प्रति में भी पाया जाता है । इससे स्पष्ट है कि दोनों एक ही हैं । दोनों में जहांगीर की जीवनी दी गई है । " ।

अफगानों का इतिहास यद्यपि मुगलों के समय में लिखा गया तथापि इसका ऐतिहासिक महत्व कम नहीं है। शेरशाह का इतिहास विशेषकर "तबकत ए अकबरी" और तारीखे शेरशाही के आधार पर लिखा गया है। नियामत तुल्ता के इतिहास से हम पता चलता है कि राजा टोडरमल शेरशाह का एक विशेष अधिकारी था और उसी के निर्देशन में रोहतास पश्चिमी नामक दुर्ग का निर्माण किया गया।¹

1— निगम, एस डी पी (११०) - मूरवश का इतिहास, पृष्ठ 10

—*—

तारीखें दाऊदी के लेखक अब्दुल्ला के बारे में बहुत कम सूचना प्राप्त है। "इस इतिहास में तारीख नहीं है और लेखक ने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा है। परंतु प्रसंगवश उसने अपना नाम अब्दुल्ला लिखा है और सम्राट जहागीर के नाम का उल्लेख किया है। इसलिये यह पुस्तक इस सम्राट के राज्यारोहण के पश्चात् लिखी गई होगी। यह राज्यारोहण 1605 ई० में हुआ था।" 1

अब्दुल्ला ने वाक्यान्ते मुस्ताफी, तारीखें औरगाही एवं तबक़ाते अकबरी को आधार बनाकर अपना ग्रंथ लिखा है। परंतु सम्भव है कि लेखक ने दुसरे ग्रंथों का भी सहारा लिया है जो अब प्राप्त नहीं होते हैं। अब्दुल्ला ने अपनी इतिहास की भूमिका में लिखा है कि "यह इतिहास उन राजाओं का वृत्तान्त है, जो मर चुके हैं। केवल वृत्तान्त ही नहीं है बल्कि यह एक प्रकार का विज्ञान है जो युद्ध का विकास करता है और विनाश के लिये उपाहरण प्रस्तुत करता है। इस विनीत व्यक्ति ने अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग उपदेशमय उपाहरणों से परिपूर्ण इतिहास के अध्याय में व्यतीत किया है और वृत्त से शासकों के समय की परिस्थिति की जांच की है। अब उनको विश्व हुआ कि हिन्दुस्तान के अफगान सुलतानों के राज्य का वृत्तान्त इधर उधर लिखे हुए रूप में मिलता है। और उस समय के राजवंशों में उनकी गणना है। अतः मैंने विवश होकर सब शक्तिमान ईश्वर की सहायता से इन वृत्तान्तों को जिनमें एकत्र करने की योजना बनाई। मैंने काय करना शुरू किया और थोड़े समय में ही इसे पूर्ण कर लिया। मैंने बहलाल लोनी के शासन से जो अफगान राजवंश का प्रथम सुलतान था, यह ग्रंथ शुरू किया और मुहम्मद अली सूरी तथा दाऊदशाह तक जो इस वंश का अंतिम शासक था लाकर समाप्त किया और इसका नाम "तारीख ए-दाऊदी" रखा।" 2

अब्दुल्ला ने अपनी इतिहास में कहीं पर भी अपनी नाम नहीं लिखा है। केवल एक घटना के सम्बन्ध में अब्दुल्ला शब्द का उल्लेख है। जिससे यह माना

1- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 329

2- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 329

जाता है कि इतिहासकार का नाम शम्सुल्ता रहा होगा। शम्सुल्ता ने यह ऐसा कि अफगान सुलतानों के बारे में लोग धीरे धीरे भूलते जा रहे हैं। इसलिये उन्हें अपने इतिहास की रचना की जितनी 'बाबेघाते मुस्ताफी' के समान इसमें भी अतीति, कहानियों की भरमार है। ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश कहानियों को सम्भवतया 'बाबेघाते मुस्ताफी' से ही प्राप्त की गई है।

शम्सुल्ता ने तिपियों के बारे में कई गलतियाँ की हैं। अफगान सुलतानों का इतिहास निजामुद्दीन अहमद ने तबक़ाते अकबरी में लिखा है उसे अधिक विश्वसनीय माना जा सकता है।

शम्सुल्ता ने अपना ग्रन्थ जहागीर के समय में लिखना प्रारम्भ किया था। परन्तु लखन का काम पूरा हो जाने पर उसने अपनी कृति बगाल के प्रान्त अफगान सुलतान दाऊद बिन मुलेमान शाह (1572-76 ई०) को समर्पित की थी।

शम्सुल्ता ने लिखा है कि 12 जून 1446 ई० को सुलतान बहलोल लोदी का राज्याभिषेक हुआ था और उसने सुलतान बहलोल लोदी, गाजी की उपाधि धारण की थी। वह (बहलोल लोदी) वीर, दानी, धर्मनिष्ठ और दयालु था। बहलोल लोदी धरा के नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करता था। अपनी अधिकांश समय आलिमों और फकीरों के साथ बिताता था। वह 'याय' भी स्वयं करता था। शम्सुल्ता ने बहलोल लोदी के बारे में लिखा है कि "सुलतान बहलोल 'यायकारी' बुद्धिमान, कार्यकुशल किसी को हानि न पहुँचाने वाला, कृपालु, दयालु और प्रजा का पोषक था। धन सम्पत्ति तथा नये परगने जो कुछ, उसे प्राप्त होते वह उन्हें सेना में बाँट देता था। कोई भी वस्तु अपने पास न रखता और खजाना एकत्र न करता था। वह बनावट से सूय तथा बड़े सरल स्वभाव का बालशाह था।"

तारीखे ग़ज़दी से पता चलता है कि बहलोल लोदी अपने अमीरों के प्रति बहुत अच्छा व्यवहार करता था। यदि कोई अमीर उससे नाराज हो जाता तो वह ईश्वर के पाम जाता एवं अपनी तलवार कमर से खोलकर उसके सामने रख देता। इसके पश्चात् वह उसे निवेदन करता कि "यदि आप हमें इन कामों के योग्य नहीं समझते हो तो किन्हीं अर्थों को इस काम के लिये चुन लें और हमें जो कुछ अर्थ काम प्रदान करें, दें।"

शम्सुल्ता ने बहलोल लोदी सभी अमीरों और सैनिकों के साथ बराबर व्यवहार करता था। यदि कोई अमीर बीमार हो जाता तो वह उसका आराम पूछने के लिये जाता।

या अब्दुल्ला ने बहलोल लोदी के अमीरों और पुत्रों के नामों का उल्लेख किया है और मुलतान हर्षत और बहलोल लोदी के बीच हुए युद्धों का विवरण भी दिया है। इनमें कुछ विचित्र घटनाओं का भी वर्णन किया गया है जिनका ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कोई महत्व नहीं है।

अब्दुल्ला ने लिखा है कि मुलतान सिक्न्दर का राज्याभिषेक 18 वर्ष की आयु में हुआ। उस समय उसने गाजी की उपाधि धारण की। उसने सिक्न्दर के चरित्र के बारे में लिखा है कि "मुलतान सिक्न्दर बड़ा प्रतापी, सहनशील, शानी तथा सादर सम्मान एवं गौरव वाला बाल्याहू था।

तारीखे दाऊदी से पता होता है कि सिक्न्दर ने अपने राज्य के सभी प्रदेशों में मस्जिदों का निर्माण करवाया था। कृषि उन्नत अवस्था में थी। प्रजा सुखी तथा समृद्ध थी। लोग आराम में जीवन व्यतीत कर रहे थे। व्यापार उन्नत अवस्था में था। जो बाफिर इस्लाम बखूल कर लेता था, उसे वह सम्मान दिया करता था और विद्रोह करने वालों को या तो मृत्यु दण्ड दे देता था या फिर राज्य में निर्वासित कर देता था। उसने इस्लाम धर्म का प्रसार किया। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये उसने बाफिरों के समस्त मस्जिदों, का खण्डन करवा दिया था और हिन्दुओं की मूर्तियाँ बगाईयों को दे दी ताकि वे उन्हें बाट बनाकर मास तोलते समय उनका प्रयोग करें। उसने मथुरा में हिन्दुओं के दाढ़ी एवं सिर मुँडवान पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। सक्षेप में उसने उनकी समस्त प्रथाओं को बर्न कर दिया।

इस प्रकार अब्दुल्ला ने सिक्न्दर लोदी की धार्मिक नीति का अच्छा वर्णन किया है। उसने सिक्न्दर की न्यायप्रियता एवं साम्राज्य की सम्पन्नता की काफी प्रशंसा की है। इसी प्रकार उसने मुलतान इब्राहीम के राज्याभिषेक, उसकी प्रारम्भिक बठिनाईयों, अमीरों का विद्रोह एवं इब्राहिम द्वारा उनका दमन, ग्वाजियर पर अधिकार, आदि घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया है।

तारीखे दाऊदी से पता चलता है कि मुलतान इब्राहीम ने 8 वर्ष तथा कुछ महीने तक शासन किया। इब्राहीम लोदी की मृत्यु से साथ ही अफगान राज्य का कुछ समय के लिये अस्त हो गया। अफगान 74 वर्ष तक शासन करते रहे। (बहलोल लोदी से इब्राहीम लोदी तक) इसके पश्चात् उनका अस्त हो गया।

तारीखे दाऊदी इसलिये महत्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि "उसने

शाह से सम्बन्धित अनक घटनाओं और तथ्यों ऐसा वा उल्लेख किया है, जो अ यत्र नहीं मिलते ।”

ग्रन्थ के दोष

इस ग्रन्थ के प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं -

- (1) अब्दुल्ला ने घटनाओं का वर्णन क्रमबद्ध रूप से नहीं किया है ।
- (2) उसने घटनाओं की तिथियाँ बहुत कम दी हैं ।
- (3) उसने अपनी कृति में किस्से और कहानियाँ अधिक लिखे हैं ।

इन कमियों के बावजूद भी उसकी कृति ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि इससे बहलोल लोदी से लेकर ग़ज़नाह तक के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त होती है ।

1- निगम, एम बी पी (डा०) मुरवाण का इतिहास पृष्ठ 7

= * =

सीरत ए फीरोजशाही रचना 1370 ई० म सुलतान फीरोजशाह तुगलक के समय म की गई थी। इस पुस्तक का लेखक कौन था, अभी तक पता नहीं चल सका है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि पुस्तक गुमनाम है। पुस्तक को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक ने घटनाओं का वगन व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उसका शाही दरबार से निकटतम सम्पर्क था। सुलतान फीरोजशाह का उम सरक्षण प्राप्त था। अतः इस ग्रन्थ को एक विश्वमनीय सूचना का स्त्रोत माना जा सकता है।

एना अनुमान किया जाता है कि गायक सरख न इसकी रचना सुलतान फीरोजशाह के आदेश पर की थी। पुस्तक अलवारिक भाषा में लिखी हुई है। इससे पता चलता है कि लेखक बहुत बड़ा विद्वान था। यह पुस्तक सरल भाषण और धारा प्रवाह पद्धति से लिखी हुई है। जिसे पढ़ने से साहित्यिक आनंद प्राप्त होता है। इसकी एक पाण्डुलिपि वाकीपुर पुस्तकालय में उपलब्ध है। पुस्तक के अंत में एक पद्य लिखा हुआ है जिससे पता चलता है कि इस पुस्तक की रचना 1370 ई० में की गई थी।

इस पुस्तक में चार अध्याय हैं - प्रथम अध्याय में फीरोजशाह के शासन काल की उपलब्धियों का वगन श्रमशुद्ध रूप से किया गया है। इसके प्रारम्भ में सुलतान केघाटटा में सिंहासनारोहण से लेकर सिंध अभियान तक की घटनाओं का विस्तृत वगन है। यह पुस्तक सुलतान फीरोजशाह के बगल, सिंध, जाज-नगर और नगरकोट के अभियानों पर अच्छा प्रकाश डालती है। इसके अतिरिक्त जाजनगर की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के बारे में अच्छा वगन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में सुलतान फीरोजशाह की उदार नीति का विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें जानवरों, पक्षियों एवं उनकी आदतों का विस्तृत वगन है।

तृतीय अध्याय में फीरोजशाह की राजस्व नीति एवं उसके द्वारा निर्मित भवनों का वगन है। इसमें सुलतान फीरोजशाह द्वारा निर्मित नहरों का भी उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में विभिन्न हथियारों, गोलाबारूक एवं ज्योतिष सम्बन्धी बातों का विवरण दिया गया है। इसमें उस समय युद्ध के काम आने वाले हथियारों का भी वर्णन है। यह पुस्तक उस युग की शिक्षा पर अच्छा प्रकाश डालती है।

मूल्यांकन - इस पुस्तक से मुल्तान फीरोजशाह तुगलक के शासन के प्रारम्भिक वर्षों के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है। लेखक ने फीरोजशाह की उपलब्धियों का वर्णन करते हुए उसकी वाणी प्रशंसा की है।

इस पुस्तक से हमें उस युग की प्रशासनिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक जीवन के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि बरनी के इतिहास में जो कमियाँ थी, उसे इस पुस्तक ने पूरा कर दिया है।



आइनुल मुल्कमुल्तानी विद्वान व्यक्ति था। वह बिलजी बग के गामको के दरगार मे उच्च पत्रो पर काय कर चुका था। परतु मुलतान फीरोजगाह तुगलक के समय वह वित्त मंत्री था। गम्स मिराज अफीक न अपनी कुनि तारीमे फीरोजगाही म आइनुलमुल्क मुल्तानी के पत्रो के सक्लन का उल्ख करत हुए उनकी बहुत प्रगमा की है। उनम लिखा है कि 'आइनुलमुल्क मुल्तानी ने उहूत सी पुस्तकें मुहम्मदशाह तथा फीरोजगाह के राज्यकाल म लिखी। उनमे से एक तगस्मुले एनुलमुल्की हैं जो कि ससार म बडी प्रसिद्ध ह। वह बहुत बडा विद्वान था। खर है कि आइनुलमुल्क की अय रचनायें अय पूरगत अप्राप्य है। इ गाय माहरु की एक प्रति एशियाटिक सोसायटी बंगाल के हस्तलिखित पुस्तकों संग्रहालय म मिलती है।'

मुलतान फीरोजगाह तुगलक न अपने अमीरो दरवारियों, विद्वानो, अधिकारियो धार्मिक व्यक्तियों को जो पत्र लिखे थे, वे इस पुस्तक म हैं। इस पुस्तक म ऐसे पत्र 133 हैं। इन पत्रा का सक्लन इमलिये किया जाता था ताकि पत्र लिखन की शैली के बारे म जानकारी प्राप्त हो सके। मुगलकाल मे इग प्रकार के सक्लन बहुत बडी मर्या मे हुए थे।

अधिकार पत्र कवितामयी एव जटिल भाषा म लिखे हुए ह। इन पत्रो की भूमिका म विभिन्न प्रकार के उदाहरण, धार्मिक कथाओ आत्मविश्वा, एव दान गस्त्र सम्बन्धी समस्याओ का बणुन इमलिय किया जाता था ताकि पत्र पढने वाला प्रभावित हो।

इलाये माहरु की पुस्तक स तुगलक बग के गामकों के बारे मे अच्छी जानकारी प्राप्त होती है। इस दष्टि स यह एव अत्य न महत्वपूर्ण वृति है। विशेष रूप से मुहम्मदबिन तुगलक और फीरोज तुगलक का इतिहास जानने के लिय महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसम अफगानपुर दुषटना म हुई गयामुदीन तुगलक की मृत्यु का प्रच्छा बणुन किया गया है। यह पुस्तक फीरोजगाह तुगलक के शासन काल की बड ऐसी घटनाओ पर प्रकाश डालती ह जिसका बणुन अय समकालीन इतिहासकारों ने नही किया है। फीरोजशाह के कुछ सैनिक अभियानो के बारे में

तो केवल इनी पुस्तक में जानकारी प्राप्त होती है। इमने प्रतिरिक्त इमम महहित पत्रों से फीरोजशाह के समय हुए मंगोल आक्रमणों के बारे में पता चलता है। अफीक और सीरत ए फीरोजशाही दोनों में इमका वर्णन नहीं है। बरन्ती न मंगोल आक्रमणों का विवरण बहुत मक्षिप्त रूप से दिया है। इमने प्रतिरिक्त फीरोजशाह के जाजनगर के अभियान के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

यह पुस्तक तुगलक काल की प्रशासनिक व्यवस्था पर अच्छा प्रकाश डालती है। इमके राजनीतिक और प्रशासनिक अधिकारियों के बीच सम्बन्धों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। ये पत्र उस समय की सामाजिक, आर्थिक और शासन प्रवृत्तियों पर अच्छा प्रकाश डालते हैं।

इन्वन्वृत्ता के अनुसार मुलतान के आदेश के बावजूद भी बिना प्रयत्न किये हुए व्यक्ति को उसका धन प्राप्त नहीं होता था। आइनुलमुल्क मुल्लानी के पत्र इस बात की पुष्टि करते हैं। इन्वन्वृत्ता में लिखा है कि उसे अपने भूगतान को प्राप्त करने के लिये धन देनी पड़ती थी।

इस बात की पुष्टि आइनुल मुल्क के पत्रों से नहीं होती। परन्तु इन पत्रों से पता चलता है कि उसे देहली के अधिकारियों को किस प्रकार प्रभावित करना पड़ता था। ये पत्र उस समय के अधिकारियों के पारस्परिक सम्बन्धों पर भी प्रकाश डालते हैं। इस पुस्तक में मत पत्रों को लिखे जाने की तिथियाँ नहीं दी हुई हैं।

समीक्षा

इसकायें माहिर ऐतिहासिक ग्रन्थ की अक्षा साहित्यिक ग्रन्थ अधिक है। आइनुल मुल्क मुल्लानी ने कई स्थानों पर अपने स्वामी मुलतान फीरोजशाह की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा की है। फिर भी यह ग्रन्थ तुगलक वंश का इतिहास और विशेष रूप से फीरोजशाह तुगलक के शासनकाल का इतिहास जानने के लिये काफी महत्वपूर्ण है।

भाग (२)

सुगल काल

के

प्रमुख

इतिहासकार

बाबर की आत्मकथा तुजुक - ए - बाबरी " बाबरनामा " अथवा "बाबर मस्मरणा आदि कई नामों से प्रसिद्ध है। यह एक बहुमूल्य ग्रंथ है जिससे हम बाबर के जीवन तथा शासनकाल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इस ग्रंथ के आधार पर बाबर को आत्मकथा लिखनेवालों का गिरोमणी माना गया है।

समय में बहुत ऐसे कम ग्रंथ होंगे जिन्हें बाबरनामा अथवा तुजुक ए - बाबरी के समान प्रसिद्धि प्राप्त हुई हो।¹ बाबरनामा से पता चलता है कि वह दिन भर अत्यधिक थका दम वाली यात्राओं के उपरांत भी इसकी रचना किया करता था। ऐतिहासिक दृष्टि से बाबरनामा एक बहुमूल्य ग्रंथ है। लेनपूल ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "तुजुक ए बाबरी" ही केवल एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें दी गई सामग्री की पुष्टि के लिये ग्रंथ प्रमाणा की विशेष आवश्यकता नहीं है।² इस आत्मकथा में बाबर ने अपने शासनकाल से लेकर मृत्यु के पूर्व तक की घटनाओं का विवरण दिया है। यह पुस्तक बाबर के चरित्र, कार्यों और सफलताओं पर अच्छा प्रकाश डालती है। इससे 16वीं शताब्दी के भारत की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इससे अतिरिक्त मध्य एशिया के सम्बन्ध में भी बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। डेनिशन रॉस ने इस बारे में लिखा है कि "बाबर के "आत्म मस्मरणा" को सभी समयों के साहित्य में सर्वाधिक सम्मोहनकारी और रोमांटिक रचनाओं में स्थान दिया जाना चाहिये।"³

बाबर ने बाबरनामा में संतिय के महत्व का विशेष रूप से महत्व दिया है। उसने लिखा है कि "इस इतिहास में मैं इस बात पर दुःख रहा हूँ कि हर घात जो निपू, और जो घटना जिस प्रकार घटी हो, उसका ठीक ठीक उसी प्रकार उन्हेस कर"। इस कारण यह आवश्यक हो गया कि जो कुछ अच्छा बुरा बात हुआ, उसे लिख दूँ।

1- रिजवी, एस ए. ए - बाबरनामा, पृष्ठ 9 (हिन्दुस्तान के मध्यकालों में बाबरनामा "बाकफात बाबरी" के नाम से प्रसिद्ध रहा था।)

2- लेनपूल - बाबर, पृष्ठ 13

3- डेनिशन रॉस - वेस्टर भ्रान बाबरइन "दी केंम्बीज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया भाग

बाबर ने इस बात का पूरा रूप से ध्यान दिया है। बाबरनामा के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उसने किसी भी घटना को छिपाने का या उस पर पर्दा डालने का प्रयास नहीं किया है। इलियट एव डाउसन १ बाबरनामा क ऐतिहासिक एव साहित्यिक महत्व के बारे में लिखा है कि, 'बाबर की आत्मजीवनी सच्चाई के साथ लिखी हुई है और उतम वनमान आरम जीवनीयों में से एक है। यह संपूर्ण की आत्मजीवनी से, जो मिथ्याचार से भरी हुई है, बड़ी अच्छा है। यह जहागीर के आडम्बरमय आत्मबृत्तात से भी दबकर है और "एकमपादिनेन प्राप जेनोवन" से किसी भी धान में घटिया नहीं है। यह मीजर की आत्मजीवनी से कुछ कम दर्जे की है। यह दाता सात्त्विकी में बराबर है। परन्तु उस प्रसिद्ध ब की अपेक्षा इसमें धनी अनुभूति कम होती है। मन्नाट जहागीर न लिखा है कि इस ग्रंथ में उसने तुर्की भाषा में कुछ परिच्छेद बढ़ाय हैं। इसी भाषा में बन्नाट हाकिम ने जब वह सन् 1609 में उससे आगरे में मिला था तो बाबर की थी।'

पुनश्च "वर्तमान लोग इस बात पर सहमत हैं कि बाबुल और उसके आसपास के प्रदेश का तथा फरगना का और हिन्दुकुश के उत्तर के देशों का जो बलन उसने लिखा है उससे बढकर सच्चा और वापकता की दृष्टि से कोई दूसरा बलन नहीं है। "परन्तु उसका लिखा हुआ सबसे महत्वपूर्ण विवरण जो हमको प्राप्त हुआ है, हिन्दुस्तान का है।"

सेद है कि उसके 47 वर्ष तथा 10 मास के जीवनकाल में से लगभग 18 वर्ष का ही विवरण मिलता है और वह भी बीच बीच में झूठा है।

बाबर की हस्तलिखित पोथी

सम्भवत बाबर न दो पोथियाँ बनायीं की होगी। पहली पोथी दैनिकी की रूप में रही होगी जिसमें वह दैनिक घटनाओं का बतलात उसी रात में अथवा पीछे ही जब उस समय मिलता होगा, लिखना जाता होगा। तदुपरांत उसने दैनिकी के प्रारम्भिक भाग में उचित संशोधन करके, प्रत्येक वर्ष का विवरण लेखों के रूप में लिखना प्रारम्भ कर दिया होगा। इस प्रकार उसके ग्रंथ की कम से कम दो पोथियाँ रही होंगी। अब इन दोनों पोथियों का पता नहीं, (ए एम चंवरौज) दायाँ के दाता पोथियाँ नष्ट हो चुकी हैं और अब उनके मिलने की कोई सम्भावना नहीं है।

1- इलियट एव डाउसन भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 165, 1

2- इलियट एव डाउसन-भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 166-67

बाबरनामा की भाषा और शैली -

बाबर जो भाषा बोलता था और जिस भाषा में उसने बाबरनामा की रचना की वह बंग गार्ई तुर्की है। भाषा में फारसी तथा घरबी के शब्द बहुत यही मन्था में मूल रूप में ले लिए गये हैं।¹ शब्द सरल और प्रभावशाली हैं तथा वाक्य स्पष्ट है। बाबर इन बातों को लेखनकला का बहुत बड़ा गुण समझता था इसलिए हुमायूँ के पत्रों की धालीपना करते हुए उमने लिखा था कि "तेरे पत्रों का प्रस्पष्ट होना का कारण यह है कि ये जटिल होते हैं। भविष्य में तू उन्हें जटिल बनाये बिना निम्न और सरल और स्पष्ट शब्दों का प्रयोग कर। इस प्रकार तेरे और तेरे पत्र पठन वालों के श्पष्ट में बनी हो जायगी।"²

बाबरनामा के पृष्ठ नष्ट होने के कारण

बाबर बभी किसी अभियान हेतु, बभी घाक्रमण हेतु एवं बभी सैर करने के लिये हुमेगा एवं स्थान से हमारे स्थान की यात्रा किया करता था। ऐसे समय में भी वह लिखने पढ़ने की मामूली धपन साथ रखता था। यद्यपि वह इन यात्राओं के समय काफी सावधानी बरतता था फिर भी यहाँ कोई पृष्ठ नष्ट हो जाए तो हमम भादचय की कोई ज्ञात नहीं है। हमने प्रतिरिक्त 1512 ई० में हिसार के समय उसका पूरा शिविर नष्ट हो गया था। परंतु इन समय बाबरनामा के पृष्ठ नष्ट हुए या नहीं यह कहना कठिन है। लेकिन 25 मई 1529 ई० में तुपान के समय का धरण करने हुए बाबर ने लिखा है कि इस समय उसकी पाहलुलिपि को काफी क्षति पहुँची थी। सम्भवत इस घयसर पर जो क्षति पहुँची होगी उसकी उसने पूति भी कर ली होगी।

बाबरनामा के अनुवाद -³

बाबरनामा के फारसी अंग्रेजी एवं हिंदी भाषा में अनुवाद हो चुके हैं।

(1) फारसीभाषा में अनुवाद

(1) बाबरनामा का सबसे प्रथम फारसी भाषा में अनुवाद शेख जैब कफाई एवाफी ने किया था जो कि बाबर का सद्दशा। उमने बाबरनामा के केवल हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग का अनुवाद किया था।

(2) बाबरनामा का दूसरा फारसी अनुवाद मिर्जा पायदा हसन गजनवी ने किया था।

1- रिजवी, एस ए ए - बाबरनामा, पृष्ठ 15,

2- बाबरनामा, पृष्ठ 289, रिजवी, वही पृष्ठ 15

3- रिजवी एस ए बाबरनामा पृष्ठ 18-20

(11) सबसे प्रसिद्ध फारसी अनुवाद अब्दुरहिम खाने खाना बा है। जिसने अबुल फजल के अकबरनामा के लिये अकबर के आदेशानुसार अनुवाद काय प्रारम्भ कर दिया और इसे पूरा करके नवम्बर 1589 ई० अंतिम सप्ताह में अकबर को काबुल में ले जाकर समर्पित किया।

(2) अकबरनामा के अंग्रेजी और हिन्दी अनुवाद -

- (i) विलियम असकिन ने बाबरनामा के फारसी अनुवाद का अंग्रेजी में भाषांतर किया।
- (ii) ले ईडन ने तुर्की भाषा में लिखी हुई तुजुक-ए-बाबरी का अंग्रेजी में भाषांतर किया।
- (iii) मिसेज वेवरीज ने बाबरनामा की तुर्की भाषा में निम्नलिखित हस्तलिखित पोथी का अंग्रेजी में भाषांतर किया। अतः यह अधिक प्रामाणिक माना जाता है।
- (iv) डा० मथुरालाल शर्मा ने तुजुक ए-बाबरी का हिन्दी में संक्षिप्त रूप से अनुवाद किया है।

ईश्वर में अदृष्ट विश्वास - बाबरनामा से पता चलता है कि बाबर का ईश्वर में अदृष्ट विश्वास था। उसने बाबरनामा में कई ऐसे उदाहरण दिये हैं जिससे इस बात की पुष्टि होती है। अपने सिंहसमारोहण के बाद की प्रथम घटना का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि "पवित्र तथा महान् ईश्वर अपनी पूरा शक्ति से बिना किसी मनुष्य के सहसा के मेरे समस्त कार्य उचित रूप से सम्पन्न कराता आ रहा है। यदि समस्त सत्कार की तलवारें चने तो भी एक नस तक नहीं बट सकती यदि ईश्वर की ईच्छा न हो।"

ईश्वर में दृढ़ आस्था के कारण वह कभी डुखी नहीं होता था। कई बार उसे शत्रुओं की ऐसी सेना में युद्ध करना पड़ा जिसकी सेना की संख्या उसकी सेना से कहीं अधिक थी। परन्तु उसने ईश्वर पर विश्वास कर युद्ध में भाग लिया। 1507-08 ई० में कंधार के युद्ध में मुकीम के विरुद्ध प्रस्थान करते समय उसने इसी विश्वास का प्रवचन किया था। बाबरनामा में उसने लिखा है कि "चाहें थोड़े हो, चाहे बहुत, शक्ति देने वाला ईश्वर है। उसके दरबार में किसी की कोई शक्ति नहीं।"

मुलतान इब्राहीम लोनी की पराजय के बारे में उसने लिखा है कि "इस सौभाग्य को न तो हम अपनी शक्ति एवं बल और न अपने परिश्रम तथा साहस का परिणाम समझते हैं अपितु इसे ईश्वर की महान् शक्ति एवं अनुकम्पा मानते हैं।"

बाबर का चरित्र - बाबरनामा के प्रथमयन से बाबर के चरित्र पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। बाबर ने अपनी भूरी घीर शीशों का अपनी कृति में खुलकर बखाना किया है। उसने यदासम्भव अपनी गलती को छिड़ाने का प्रयास नहीं किया है। मिहामनारद होन के पश्चात् उसे काफी कठिनायियों का सामना करना पड़ा। परन्तु उसने धैर्य नहीं खोया और साहसपूर्वक उनका सामना किया। उसने लिखा है कि "क्याकि मुझे राज्य पर अधिकार करन तथा वादशाह बनने की आकाशा थी। अत मैं एक या दो बार की अज्ञापना से निराग होकर बैठा नहीं रह सकता था।"

हिरात से बाबुल लौटने समय पक्लीम यात्रा में बाबर को भयंकर बूट उठाना पड़े। उसने लिखा है कि "भाग्य का कोई ऐसा बूट घबरा हाति नहीं है जिस मैंने न भोगा हो, इस बूट हृदय ने सभी को सहन किया है। हाय कोई ऐसा बूट जिसे मैंने न भोगा हो।"

' किंतु वह किसी भी कठिनाई के समय हताग नहीं हुआ। इसके साथ ही साथ उस अपने मित्रों का इतना अधिक ध्यान था कि उसने उनसे पृथक् होकर अपने लिये किसी सुरक्षित स्थान पर पड़ना स्वीकार नहीं किया। इसी यात्रा में जब उसे आग्रह किया गया कि वह दरफ से दखने के लिय गुफा में प्रविष्ट हो जाय तो उसने सोचा कि जब उसके कुछ आत्मी दरफ तथा तूपान में फसे हुए तो यह नैस हो सकता है कि वह उस गरम स्थान में शरण ले। जो कुछ बूट घबरा कठिनाई होगी उसका वह मुकाबला करेगा। इस अवसर पर फारसी की एक लोकाक्ति ने कि 'मित्रों के साथ मरना ईद के समान होता है' उसके साथ ही और भी बड़ा दिया। "

बाबरनामा

बाबर का सरल स्वभाव था। यद्यपि वह बाग्शाह था परन्तु कई बार तो वह अपने मित्रों के घर पर रीति व्यतीत कर देता था। इतना ही नहीं कई कई बार वह नागरिकों के घरों में भी सो जाता था। उसे 12 वय की आयु से ही भयंकर कठिनायियों का सामना करना पड़ा था। परन्तु उसने हर समय साहस और वीरता का परिचय दिया। जब वह अपने साथियों के साथ तुर्कमान हजारा से मुकाबला करने के लिये रवाना हुआ तो उसने बिना कबच पहन हुए नेतृत्व किया। उसने लिखा है कि "हमारे ऊपर से बाण उड़ उड़ कर जाने लगे।

युसुफ अहमद चिन्ता प्रकट करते हुए प्रत्येक से कहता था कि तुम लोग इस प्रकार नगे ही जा रहे हो, हमने दो बाणों को तुमारे सिर पर से गुजरते हुए देखा है। मैं न कहा चिन्ता मत करो। ऐसे गृह से बाण भरे सिर से गुजर चुके हैं।”

बाबर तैरने की कला में प्रवीण था। उसने केवल 33 हाथ मारकर गंगा नदी को पार कर लिया था। विजय प्राप्त करने के बाद वह गन्तुओं के प्रति उदारतापूर्वक व्यवहार करता था। बाबर ने इब्राहिम को पराजित करने के पश्चात् उसकी माता के प्रति अक्षय्य व्यवहार किया था। जब इब्राहिम की माता ने घोड़े से बाबर को विष पिलवा दिया तभी उसने इब्राहिम के परिवारवालों के साथ कठोरतापूर्वक व्यवहार किया था।

निरीक्षण की अद्भुत क्षमता - बाबर में निरीक्षण एवं जिज्ञासा की अद्भुत क्षमता थी। उसने भारत तथा बाबुल के पशु-पक्षी एवं धनस्पति आदि का जिस ढंग से वर्णन किया है उससे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि उसमें निरीक्षण शक्ति की अद्भुत क्षमता थी।

वह प्रत्येक वस्तु का बारीकी से निरीक्षण करता था। उसने भैलम नदी पार करने के पश्चात् 11 मार्च 1519 ई० को एक कुएँ पर रहूट देखा। जिसमें वाल्टिया लगी हुई थी। जिनके माध्यम से पानी कुएँ से बाहर निकाला जा रहा था। बाबर ने कुएँ से पानी निकलवाकर पानी निकालने की विधि के बारे में कई प्रश्न किये तथा बार बार पानी निकलवाया। बाबर को जो बात उचित नहीं लगती थी, उसे वह स्वीकार नहीं करता था।

प्राकृति के सौन्दर्य का वर्णन - बाबर ने भारत के घास के मैदानों पर्वतों वृक्षों के सौन्दर्य एवं प्राकृतिक मजीब वर्णन किया है सेव के एक छोटे से वृक्ष न शरद ऋतु में बहुत सुन्दर रूप धारण कर लिया था। उस सम्बन्ध में बाबर ने लिखा है कि “वह वृक्ष इतना सुन्दर बन गया था कि यदि कोई चित्रकार उसका चित्र बनाना चाहता तो भी सम्भव नहीं था।”

महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के चरित्रों का अध्ययन -

बाबर ने अपने अमीनों एवं महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का मरिपित एवं सजीव वर्णन किया है जिससे हम उन व्यक्तियों की जीवनीयों एवं चरित्र के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। उसने उनके रूप रंग, वेग भ्रूण आचार व्यवहार गुण अंगुण का भी वर्णन किया है। बाबर का वर्णन इतना सक्षिप्त एवं सजीव है कि पाठक जब बाबरनामा पढ़ता है तो उसे यह महसूस होने लगता है कि जैसे यह घटनाएँ उसके सामने घटित हो रही हों।

समालोचनायें - वाबर ने अपने समय के कवियों तथा साहित्यकारों की चर्चा की है एवं उनकी कृतियों पर विचार व्यक्त किये हैं। मौलाना अब्दुरहमान जामी उसका समकालीन फारसी कवि तथा प्रसिद्ध साहित्यकार था। उसके बारे में उसने केवल 4-5 वाक्य लिखे हैं। जिनसे उसकी ऐतिहासिक कृति का महत्व स्पष्ट हो जाता है। अली शेर नवाई तुर्की साहित्य के लिये प्रसिद्ध था। वाबर ने उसकी कृतियों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उनकी भूरी भूरी प्रशंसा की है। मुसतान मेहमूद मिर्जा उस समय का प्रसिद्ध कवि था। वाबर ने उसकी कविताओं के बारे में लिखा है कि "उसने एक दीवान की रचना कर ली थी, किंतु उसके शेरों में कोई रम न था। इस प्रकार की कविता से कविता न करना अच्छा होता है।"

वाबर का हिन्दुस्तान वर्णन

वाबर के हिन्दुस्तान पर आक्रमण के कारण -

जब वाबर का काबुल पर अधिकार हो गया, तो उसके सामने प्रमुख समस्या यह थी कि उसने साथ काबुल आने वाले कबीलों तथा जट्यों के जीवन निर्वाह की व्यवस्था किस प्रकार से की जाय। उसने लिखा है कि "काबुल एक छोटा सा देश है यह तलवार का देश है, लेखनी का नहीं है। यहाँ से इतने सब कबीलों वालों के लिये धन प्राप्त करना असम्भव था। अतः यह उचित ज्ञात हुआ कि इन कबीलों के परिवार वालों के लिये खान सामग्री प्राप्त कर ली जायें। तदुपरान्त वे सुगमता से सेना के साथ इधर उधर घावों पर जा सकेंगे।"

वाबर तैमूर का उत्तराधिकारी होने के कारण हिन्दुस्तान के पश्चिमी भाग पर अपना वैधानिक अधिकार मानता था। उसने लिखा है कि "क्योंकि मेरी हादिक इच्छा सबदा हिन्दुस्तान पर अधिकार जमाने की ही रही है और यह विभिन्न देश भीरा, खुशआब, चीनाव तथा चीनीऊत किसी समय तुर्कों के अधिन रह चुके हैं। अतः मैं उन्हें अपना ही समझना था और उन्हें शांतिपूर्वक और चाहे युद्ध करके, जिस प्रकार भी सम्भव होता अपने अधिकार में करना निश्चय कर लिया था। इन कारणों से इन पहाड़ियों के प्रति सद्व्यवहार परम आवश्यक था। अतः यह आदेश दिया गया कि इन लोगों के गल्लों तथा मवेशियों को किसी प्रकार भी कोई हानि नहीं पहुँचाई जाय। यहाँ तक कि इनके सूत के एक टुकड़े तथा टूटी हुई मुई को भी कोई हानि नहीं पहुँचाई जाय।"

लूट रहे थे जब इस बात का पता चला तो उसे उसने कुछ और सैनिकों की भीरु जाने का आदेश दिया और उनसे कहा कि वे उनमें से कुछ की हत्या कर दें तथा कुछ के पाक बान बटवाकर उन्हें शिविगो के चारों ओर डुमवायें ।

हिंदुस्तान पर विजय करन के बाद जो लोग कायुल जाना चाहते थे बाबर ने उनको जाने से रोका और उनसे कहा कि "राज्य एवं विजय बिना साधन तथा अस्त्र-गस्त्र के सम्भव नहीं । बादशाही तथा शासन बिना सेवका तथा अग्निस्थ राज्य के प्राप्त नहीं हो सकते । कई वर्षों के सघष, कठिनाईयो, लम्बी चोड़ी यात्रा अपने आप तथा अपनी सेना की रणक्षेत्र में झौंककर एवं घोर युद्ध के उपरांत हमने ईश्वर की कृपा से शत्रुओं की इतनी बड़ी सख्या को इस आशय से पराजित किया कि ऐसे विस्तृत प्रदेशों तथा राज्यों को अपने अधिकार में कर लें । अब आज क्या हो गया है, और कौन सी ऐसी विपत्ति आ गई है कि उस देश को जिसे प्राणों की बाजी लगाकर विजय किया है अकारण छोड़कर चले जायें । क्या हमारे भाग्य में यही लिखा है कि हम सबदा काबुल में दरिद्रता एवं कष्ट भोगते रहें । अब आज से मेरे किसी हितैषी को ऐसी बात न बरनी चाहिये कि तु जिस विमी में शक्ति नहीं है और उमने जाना निश्चित कर लिया है तो उसे फिर रुकना नहीं चाहिये । सम्भवत उसके सहायक भी उसके आक्रमणों को केवल लूटमार एवं धन-एकत्र करने का साधन समझते थे । किंतु उसने हिंदुस्तान पर राज्य करना निश्चय कर लिया था उसे मुलतान मेहमूद गजनवी । सरीखे वाग्शाह पर आच्य होता था, जो हिंदुस्तान तथा खुरासान को विजय करने का वाद भी गजनी को ही अपनी राजधानी बनाये रहें ।

बाबर में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता

बाबर में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी । हिंदुस्तान की विजय में उनमें योग्य समर्थन एवं योग्य नेतृत्व की योग्यता को भली भाँति प्रदर्शित किया था ।

बाबर ने 1507-08 ई० में पाच हजार घुडसवारों को रोक कर अपना योग्य नेतृत्व का परिचय दिया था । उनमें अरबों और तुर्कों की सैन्य संचालन की विधि को ध्यान पूर्वक देखा और भविष्य में उसका प्रयोग किया । सेना के प्रस्थान के समय वह बहुत सावधानी बरतता था । उनमें सिवानकोट से दाशौर की यात्रा के समय सतकता का परिचय दिया । इस समय सोच समझकर ही वह भाग दस्ता था । बाबर में घुलत सैनिक तथा योग्य मनावानक व गुण भोज्य थे । सतक वह धन्य सैनिकों की कठिनाईयो का घामानी में समझ जाता था ।

पानीपत के युद्ध का वणन करते हुए बाबर ने लिखा है कि सेना बालों

म से कुछ लोग बड़े भयभीत तथा चिन्तित थे । भय तथा चिन्ता का कोई कारण नहीं था । बाबर ने जो कुछ भाग्य में आत्काल से लिख लिया है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता । यद्यपि ठीक बात तो यही है । किन्तु भय एवं चिन्ता के कारण कि जो लोग भयभीत एवं चिन्तित थे वे अपने घरों से 2-3 मास की यात्रा की दूरी पर पड़े हुए थे । हमारा मुवाबला एक अपरिचित वीर एवं लोगों से था नातो हम उनकी भाषा समझते थे और न वे हमारी । उसने हिन्दु स्नान के अफगानों की शक्ति एवं उनके मैन्य संचालन की योग्यता को भली भाँति समझ लिया था । उसे हिन्दुस्नान पर आक्रमण करने के लिये अफगानों की कमजारी न ही प्रोत्साहन दिया । बाद में भी उसने आलम खा तथा इब्राहिम क युद्ध का वृत्तांत देण्ड वालों से अफगानों की शक्तियों एवं सैन्य संचालन की योग्यता का भली भाँति अनुमान लगा लिया होगा ।

पानीपत के युद्ध के पूर्व ही बाबर ने खरख मुहम्मद सारखान से कहा था कि " इब्राहिम की उजबेगो से तुलना करना उचित नहीं है क्योंकि इब्राहिम न अभी तक अनुशासन रह होकर युद्ध नहीं लड़ा है ।

बाबर ने खानवा के युद्ध में अपनी मैन्य संचालन की अद्भुत योग्यता का परिचय दिया था । बाबर का जिन अफगानों पर विश्वास नहीं था उन्हें उसने दूर दूर भागो में भेज दिया । केवल विश्वासपात्र अफगानों को ही अपने पास में रखा मन्तियों में आतंक छा जाने पर भी बाबर निराश नहीं आ । उसने साहस का परिचय देते हुए सेना में आगा का संचार किया । उसने खानवा युद्ध से पूर्व मन्त्रि-गण का त्याग, मुसलमानों को तमगा कर से मुक्त करना एवं रण क्षेत्र से न भागने की शपथ अपने मन्तियों को दिलाकर अपनी दूरगतिता एवं योग्य सेना-नायक के गुणों का परिचय दिया ।

तोपखाना - बाबर के पास कुशल तोपखाना एवं बंदूकें थीं । जिन पर उन्हें पूरा भरोसा एवं विश्वास था । बाबरनामा के अनुसार बाबर ने उर्दू का सर्व प्रथम प्रयोग 6 जनवरी, 1519 ई० में किया था ।

बाबर ने अपने तोपखाने एवं बंदूकों की सहायता से पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम की एक लाख सेना को कुछ ही घंटों में तहम-नहस कर दिया । इस युद्ध में गादियों को बची खाल की रस्मियों में जोड़ दिया गया था । इब्राहिम के युद्ध में उस्ताद भली कुली ने अपनी कुशलता का पूर्ण परिचय दिया था ।

बाबर जानता था कि तोपखाने की उन्नति से ही वह निरन्तर विजयें

प्राप्त कर सकता है। इसलिये इस सम्बन्ध में रोज नये प्रयोग होते रहते थे। बाबर ने बयाना पर अधिकार करने के लिये उस्ताद अलीकुली को एक बड़ी तोप ढालने का आदेश दिया। उसने 22 अक्टोबर 1526 ई० को नई तोप तयार की परन्तु यह बाबर के उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकी। अतः अलीकुली खान आत्म हत्या करने का निश्चय किया। परन्तु बाबर ने उसको प्रोत्साहन देने के लिये खिलमत प्रदान की और इस प्रकार उसे इस भेष से मुक्ति दिलाई।

बाबरनामा से बाबर की राजनीति पर प्रकाश

बाबरनामा से बाबर के राजनीतिक विचारों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। बाबर का मानना था कि व्यवहार में अच्छे नियमों का सभी को पालन करना चाहिये, चाहे उह किसी ने भी बनाया हो। बाबर समस्त मुख्य अभियानों से पूर्व परामश के लिये बैठक बुलाता था और लोगों के परामश को ध्यानपूर्वक सुनता था। काबुल विजय करने से पहले उसे शासन प्रबंध का अधिक अनुभव नहीं था।

बाबर ने लिखा है कि "हम लोगो उस समय फसल तथा उत्पत्ति का कोई कोई ज्ञान नहीं था और यह मालगुजारी अधिक थी। इस कारण देश की अत्यधिक हानि उठानी पड़ी। वह जिस प्रदेश के लोगो को विजय करता वहाँ के स्थानीय शासन प्रबंध को प्रथाओं का पालन करना प्रारम्भ कर देता था।"

बाबर का यह मानना था कि कर वसूल करते समय किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करना चाहिये। अधिनता स्वीकार करने वाले के साथ बैसा ही व्यवहार करना चाहिये जैसा कि मोस्को के साथ किया जाता है। परन्तु अधिनता स्वीकार नहीं करने वालों का शक्ति के द्वारा दमन करना चाहिये। बाबर का व्यवहार व्यापारियों के प्रति सहानुभूति का था। वह उन्हें किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाने के पक्ष में नहीं था।

पानीपत के युद्ध से पूर्व एवं उसके पश्चात् बाबर को जो कुछ भी धन सम्पत्ति प्राप्त हुई थी, उसका अधिकांश भाग उसने अपने सैनिकों में बांट दिया था। आगर के सजाने को भी उगम लोगो में बांट दिया और काबुल तक भेटी भेजी। जब लोग बाबर को "कल दर" कहते थे, तो उसे काफी प्रसन्नता होती थी। हिन्दुस्तान में भी उसने प्रचलित शासन पद्धति का अनुसरण किया। बाबर ने अकनानादार एवं गिबनार नियुक्त किये जिनका मुख्य कार्य प्रदेश में शांति एवं व्यवस्था बनाये रखना था। बाबर ने दानपुत्र्य एवं निर्माणकार्यों पर इतना अधिक ध्यान दिया कि उसके राजकीय में धन का सदा अभाव रहा था।

बाबर के समय में भी डाक प्रणय बहुत कुशल था । वह राजदूतों के प्रति प्रशस्त व्यवहार करता था । उसकी छपन पूर्वजों के राज्य एवं मध्य एशिया की राजनीति में बड़ी रुचि थी । भारत पर अधिकार करने के बाद भी वह अपने पूर्वजों के राज्य को नहीं भूल सका । हुमायूँ को लिखे हुए पत्र से उसकी नीति के बारे में पता चलता है । किन्तु बाबर ने ख्यात्रा बला का जो पत्र लिखा था उसमें उमर लिखा है कि उसकी इच्छा शीघ्र ही शान्तल पहुंचन की है ।

बाबर ने लिखा है कि " हिन्दुस्तान के मामले थोड़े बहुत मुलभते जा रहे हैं । परमेश्वर से आशा है कि यहाँ के बाय नीध सम्पन्न हो जायेंगे । ईश्वर न चाहा तो इन कार्यों के मुख्यवस्थित होने ही में उस और शुरत प्रस्थान कर दूगा ।

इसी पत्र में बाबर ने ख्यात्रा बला को कुछ बाय करने के लिये लिखा था । इनम खजाना एकत्र करने को अधिक महत्व दिया था । इस पत्र से पता चलता है कि बाबर इस समय तक शासन प्रबंध एवं व्यवस्था के बारे में काफी पान प्राप्त कर चुका था ।

बाबर के पूर्व हिन्दुस्तान का राज्य -

बाबर ने इब्राहीम लोदी और अपने छोटीयों के राज्य के बारे में लिखा है । बाबरनामा से भी यह पता चलता है कि अफगानों के विद्रोह कहा-कहा पर हुए और बाबर ने उनका दमन किस प्रकार से किया । इसके अतिरिक्त उसने बंगाल, मालवा, गुजरात, दक्षिण एवं मेवाड़ आदि राज्यों के बारे में लिखा है । बाबरनामा से तुर्कों एवं अफगानों की सैन्य व्यवस्था के बारे में भी पता चलता है । अपने इब्राहीम लोदी की सैन्य व्यवस्था के बारे में लिखा है कि " हिन्दुस्तान में यह प्रथा है कि ऐसे महान सवटों के अवसरों पर धन देकर इच्छानुसार सेना तैयार की जाती है । "

बाबरनामा से पता चलता है कि उस समय विभिन्न प्रान्तों से कितना राजस्व कर वसूल होता था । बाबरनामा इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भाईने कुरी के अतिरिक्त अकबर के पूर्व के इतिहासों में राजस्व के सम्बन्ध में कुछ भी प्रथम बखान नहीं है । बाबर ने लिखा है कि हिन्दुस्तान के समस्त शिवालिक नारीगर एवं अशिक हिन्दु ही हुमा करते थे । तुर्कों को राजस्व कर वसूल करने में काफी कठिनाई होती थी । अलाउद्दीन के समय राजस्व सम्बन्धी प्रथम बहुत कठोर थे । बाबर ने लिखा है कि हिन्दुस्तान के जंगलों में लोग जाकर छिप जाते थे जो विद्रोह करने वाले होते थे या फिर भागते थे ।

हिन्दुस्तान की भौगोलिक स्थिति का वर्णन -

बाबर ने हिन्दुस्तान की भौगोलिक स्थिति का भी वर्णन किया है। उसने काबुल से पानीपत एवं देहली तक के समस्त मुख्य स्थानों के महत्व को स्पष्ट करते हुए विस्तृत रूप में उनका वर्णन किया है। भारत की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए उसने हिन्दुस्तान की स्थिति, उत्तरी पर्वत, घाटवली, एवं नदियों का विवरण दिया है।

बाबर ने हिन्दुस्तान के हाथी, गड्डे, जंगली भैंस, नीलगाय, मृगों, ग्रान्थि पशुओं का वर्णन करते हुए उनके स्वभाव के बारे में भी लिखा है। उसने बाबर, नवल एवं गिलहरी की भी चर्चा की है। मोर, तोते शाहमुग, सारस, नीलकण्ठ, कीयम चमगाण्ड, ग्रान्थि पक्षियों का भी वर्णन किया है। जल जंतुओं में मेण्डक, घड़ियाल और मछलियों के बारे में लिखा है।

बाबर ने रत्नों में ग्राम, की प्रशंसा की है। उसने आम, केले, इमली, जामुन और खुरम नारियल, ताड़ चिरोजी, ग्रान्थि के बारे में विस्तृत रूप से लिखा है। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष की ऋतुओं, सप्ताह के दिन समय विभाजन तैल का भी उसने विवरण दिया है।

बाबर के निर्माण कार्य -

बाबरनामा से पता चलता है कि उसने कई स्नानाघर, बाग, तालाब, कुएँ, एवं क़िल्लों का निर्माण करवाया। फतेहपुर सीकरी घोलपुर ग्वालियर बयाना ग्रान्थि स्थानों पर कई भवनों का निर्माण करवाया। उसके द्वारा बनवाये गये भवनों में से पानीपत की बड़ी, मस्जिद एवं सुम्बल की ज़ामा मस्जिद आज भी मौजूद हैं।

बाबरनामा की श्रुतियाँ

- (1) बाबर ने उड़ीसा, खानदेश, सिंध कश्मीर आदि राज्यों के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है।
- (2) बाबर ने जो कुछ भी लिखा है, वह बहुत संक्षिप्त है, उसे कुछ विस्तार में लिखना चाहिये था।
- (3) पहले भाग की शैली से पिछले भागों की शैली निम्न कोटि की है।
- (4) बाबर की आत्मकथा में 1483-93, 1503-04, 1508-19, 1520-25 1529-30 आदि वर्षों की घटनाओं का वर्णन हमें प्राप्त नहीं होता।
- (5) बाबर ने बाबरनामा में गलत तथ्य भी प्रस्तुत किये हैं। उदाहरण स्वयं

बाबर ने लिखा है कि पानीपत के युद्ध में उसके पास केवल 12,000 सैनिक थे परंतु आधुनिक लोग काय से यह स्पष्ट हो गया है कि उसके पास 25,000 सैनिक थे।

बाबरनामा का मूल्य किंमत ५७० रुपये

इन वृत्तियों के होने के बावजूद भी बाबरनामा एक महत्वपूर्ण रचना है। बेवरीज के गब्बो ने "बाबर" की आत्मकथा 'एक प्रमत्त्य प्रय' है जिसकी तुलना, सेंट थॉमसटाइन, प्रौर हमो की स्वीडिश पत्रो तथा गिबन और युटन की आत्म-कथाओं से भी जा संभवती हैं। "लेनपूल ने लिखा है कि 'बाबर के वंश की शक्ति तथा गान समाप्त हो चुकी हैं, परंतु उसके जीवन का विवरण का लका उपहास करता हुआ प्रसर है।"

1- लेनपूल ; बाबर पृष्ठ 7

2 | मिर्जा हैदर : तारीख-ए-रशादी

मिर्जा हैदर मुहम्मद हुसैन गुरगान का पुत्र था। उसका जन्म 905 हि० (1499-1500 ई०) में हुआ था और मृत्यु 958 हि० (1551-52 ई०) में हुई थी। मुहम्मद हुसैन का बादशाह बाबर की मौसी से विवाह हुआ था। इस प्रकार मिर्जा हैदर बाबर का चचेरा भाई था। वह कलम और तसवार दोनों का धनी था। बादशाह तथा बादशाह म एक सैनिक अधिकारी के रूप में उसने अपनी उच्च सैनिक प्रतिभा का परिचय दिया था।¹

कामरान के सैनिक अधिकारी के रूप में मिर्जा हैदर ने लाहौर में बड़ा प्रयत्न शासन प्रस्थापित किया। चौसा की पराजय के बाद हुमायूँ जब भागता पहुँचा तो मिर्जा हैदर ने भाइयों को मिलान का काफी प्रयत्न किया किन्तु सफलता नहीं मिल सकी। मिर्जा हैदर हुमायूँ से इतना प्रभावित हो गया कि अब वह हुमायूँ के साथ रहने लगा। कन्नौज के निकट गंगा तट के युद्ध में उसने हुमायूँ का साथ दिया। लाहौर में उसने हुमायूँ के खोए हुए राज्य को पुनः अधिकार में लाने की योजना बनाई किन्तु सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। हुमायूँ की अनुमति पाकर नवम्बर 1540 ई० में उसने काश्मीर को जीत लिया। जब हुमायूँ ने काबुल को विजय कर लिया तो उसने हुमायूँ के नाम का खुतबा पढ़वा दिया। 1551 - 52 ई० में काश्मीर वालो ने रात्रि में एक छापा मारा जिसमें उसकी मृत्यु हो गई।²

मिर्जा हैदर की 'तारीखे रशादी' का अंग्रेजी अनुवाद एन० इलियस तथा ई० डेनीसन राय ने किया जिस वजह से मिर्जा हैदर को काफी प्रसिद्धि प्राप्त हुई और इसका बहुत अधिक प्रयोग हुआ है। यह दो भागों में विभाजित है -³

1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 104

2- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग - 1)
समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 9

3- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग 1)
समीक्षा सम्बन्धी वही पृष्ठ 16

(i) प्रथम भाग काश्मीर में 952 हि० (1546 ई०) में तैयार हुआ। इसमें मुगलस्तान एवं फारस के मुगल शासकों-मुगलक तिमूर मिहासनारोहण 748 हि० (1347-48 ई०) से अकबर की मह प्रथ समर्पित हुआ, के समय तक का इतिहास है।

(ii) दूसरे भाग में उन घटनाओं का विवरण जो कि इतिहासकार के जीवन काल 948 हि० (1541 ई०) तक घटी।

“उन वर्षों के इतिहास के अध्ययन के लिये जिनके पृष्ठ “बाबरनामा” से लपट हा गये हैं। इस इतिहास की जगह सम्भव है। इसने प्रतिरित बाबर के पूर्वजों एवं बाबर से सम्बन्धित अन्य घटनाओं का भी उसी बड़े रोचक ढंग से उल्लेख किया है। हुमायूँ के कन्नौज के युद्ध एवं हुमायूँ तथा उसके भाईयों के सम्बन्ध के इतिहास और काश्मीर तथा तिब्बत के वृत्तान्त ने इस ग्रन्थ को बहुमूल्य बना दिया है।”

मिर्जा हैदर न बाबर एवं उसके पूर्वजों के बारे में विस्तृत रूप से बखान किया है। उसने बाबर की छद्म छद्मियों एवं उसके द्वारा ली गई भेटों की बाफ़ी प्रशंसा की है तथा उसने प्रति आभार व्यक्त किया है। उसकी वृत्ति मध्य एशिया की राजनीति पर प्रकाश डालती है।

मिर्जा हैदर ने हुमायूँ के इतिहास से सम्बन्धित निम्नांकित महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया है - 2

() मिर्जा कामरान द्वारा कांधार पर अधिकार।

(1) मिर्जा कामरान का मिर्जा हैदर को लेकर आगरा लेकर आगरा पहुंचना मिर्जा कामरान की लाहौर से वापसी।

(3) कन्नौज के समीप गंगा तट पर हुमायूँ तथा शेरशाह का युद्ध। मिर्जा हैदर कन्नौज के युद्ध में शाही सेनाओं के एक भाग का रक्षक था इसलिये उसने स्वयं के निरीक्षण के आधारे पर कन्नौज के युद्ध का बखान किया है। अन्य समकालीन लेखक न युद्ध का इतना विस्तृत विवरण नहीं दिया है।

(4) हुमायूँ का पलायन तथा लाहौर में सब भाईयों का एकत्र होना और मिर्जा कामरान द्वारा विरोध।

1- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग 1)

समीक्षा संबंधी पृष्ठ 17

2- रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग - 1) वही पृष्ठ 17

(5) मिर्जा हैदर द्वारा काशीर विजय

मिर्जा हैदर हुमायूँ के निकटतम व्यक्ति जो मगधा और कुछ समय तक उसके साथ रह चुका था। अतः उसके द्वारा हुमायूँ के चरित्र एवं प्रवृत्तियों के बारे में दिया गया विवरण काफी महत्वपूर्ण है।

मिर्जा हैदर न घटनाओं का सजा साक्ष्यक बलान प्रस्तुत किया है। जोड़े से वाक्यों में घटना को पूर्ण रूप से लिख देना उसकी इच्छा की सबसे बड़ी विशेषता है। यद्यपि घटनाओं का बलान सक्षेप में किया है किन्तु उसकी गैरी इतनी साक्ष्यक है कि हमारे सामने एक स्पष्ट तस्वीर उभर आती है।

— * —

गुलबदन बेगम : हुमायूनामा

गुलबदन बेगम जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर की पुत्री थी। उसकी माता कताम दिलशर बेगम था। उसका जन्म लगभग 1523 ई० में हुआ था। जब वह दो वर्ष की थी तब हुमायूँ की माता माहम बेगम ने उसे मोद ले लिया था। नवम्बर 1525 ई० से बाबर काबुल से हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त करने के लिये अपनी सेना के साथ खाना हुआ, उस समय गुलबदन बेगम की अवस्था दो वर्ष की थी। इस समय बाबर अपने परिवार को काबुल में ही छोड़कर गया था। 1529 ई० में बाबर के परिवार का काफिला आगरा पहुँचा। इस प्रकार लगभग 3 वर्ष तक गुलबदन बेगम को अपने पिता से अलग रहना पड़ा।

1530 ई० में बाबर की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् माहम बेगम का अधिक समय अपने पुत्रों की देखभाल में व्यतीत होने लगा। हुमायूँ के एक पुत्र "अलकमान" का जन्म हुआ था किन्तु शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई इस कारण माहम चिन्तित रहती थी। इसलिये उसने हुमायूँ का विवाह मेवा जान से करवा दिया। जिससे हुमायूँ को एक पुत्र की प्राप्ति हुई। इस अवसर पर माहम ने जो तैयारियाँ करवाई, उनका गुलबदन बेगम न विस्तार से बखाना किया है।

27 अप्रैल 1534 ई० को जब माहम की मृत्यु हुई तब गुलबदन बेगम को काफी दुःख हुआ। उसने लिखा है कि "मुझे बड़ा गीक, नैराश्य एवं घोर कष्ट हुआ। रातदिन में विलाप किया करती थी। हजरत बालशाह ने आकर कई बार मुझे तसल्लीदी और मेरे प्रति कृपा एवं न्याय प्रदर्शित की। मेरी आका (माहम बेगम) जब मैं दो वर्ष की थी तो मुझे अपने महल से ले गई और पालन पोषण किया। जब मैं दस वर्ष की हुई थी तो उनका निधन हो गया। मे एक वर्ष और अपनी आका के महल में रही। जब मैं 11 वर्ष की हुई और हजरत बालशाह धौलपुर पहुँचे तो मे अपनी माता के पास चली गई।"

हुमायूँ ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् अपनी बहिनों, भाइयों, एवं माताओं के प्रति स्नेह प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया था परन्तु गुलबदन बेगम ने लिखा है कि हुमायूँ ने अपनी माता माहम बेगम की मृत्यु के पश्चात् इन सभी के प्रति अत्यधिक स्नेह प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया था।

हुमायूँ के हृदय में गुलबदन बेगम के प्रति विशेष स्नेह था। चौसा युद्ध की पराजय से लौटने के बाद उसने गुलबदन बेगम के प्रति अपना स्नेह निम्न शब्दों में व्यक्त किया था "गुलबदन। मैं तुम्हें बहुत याद करता रहता था और कभी कभी पछताते हुए कहता था कि काश। तुम्हें अपने साथ ले जाता। जिस समय हिलचल मची तो मैंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि "ईश्वर को धन्य है कि मैं गुलबदन को साथ न लाया।"

। गुलबदन बेगम की कृति से यह मालुम नहीं होता कि उसने विवाह कर लिया परंतु जब हुमायूँ चौसा के युद्ध से पराजित होकर आया तो उस समय शायद उसका विवाह हो चुका था। उसके पति का नाम खिज्र द्वाजा खा था जो कि एक प्रभुत्वशाली सरदार था। जब कामुरान आगरा से पंजाब की ओर खाना हुआ तब वह महत्वपूर्ण मुगल अमीरों को अपनी ओर मिलाने लगा और गुलबदन बेगम को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध अपने साथ ले लिया। मम्भवत इसका कारण यह रहा होगा कि खिज्र द्वाजा खा एव उसके भाईयो का सहयोग उसे प्राप्त हो जायेगा। गुलबदन बेगम कामुरान के साथ नहीं जाना चाहती थी इसलिये उसने हुमायूँ को लिखा कि 'हजरत स मुझे यह आशा न थी कि इस तुच्छ को अपनी सेवा से पृथक् करेंगे और मिर्जा कामुरान को सोप देंगे।'

। किन्तु हुमायूँ ने उसे सतोष देते हुए पत्र लिखा था कि 'मरी स्वयं की इच्छा न थी कि तू मुझसे पृथक् हो किन्तु जब मिर्जा ने अत्यधिक आग्रह किया एव विनम्रपूवक प्रार्थना की तो यह परमावश्यक हो गया कि तुम्हें मिर्जा को सोप दूँ, कारण कि इस समय हम भी युद्ध में सलग्न हैं। यदि ईश्वर न चाहा तो युद्ध के समाप्त होते ही सबप्रथम तुम्हें बुलवा रागा।''

हुमायूँ का तीज के युद्ध में पराजित होकर लाहौर पहुँचा। उस समय भी हुमायूँ के भाईयो ने उसका साथ नहीं दिया। भाईयो के मतभेद से गुलबदन बेगम बहुत दुःखी थी। उसने कहा कि "बाग। वह सब भाईयो को एकत्र देख सकती।' समय में 1548 ई० में कश्मीर में जब भाई युद्ध समय में लिये। संगठित हो गये तो इस खुशी में हुमायूँ ने एक बहुत बड़े जदन का आयोजन किया।

मिर्जा कामुरान ने गुलबदन बेगम के प्रति कभी अनुचित व्यवहार नहीं किया और हमेशा उसके प्रति विशेष स्नेह व्यक्त करता रहा। हुमायूँ ने जब

हिंदुस्तान पर पुन अधिपार कर लिया तो उमरो अपनी बगमों का भारत पंचन का प्रादश दिया परन्तु इमी बीच उसकी मृत्यु हो गई और बेगमों का काफ़ीना भारत के समय में भारत पहुँचा। गुलबदन बेगम भी इसी शक्ति में थी।

दुमायनामा की रचना गुलबदन बेगम ने अरब के कहने से 1580 ई० और 1600 ई० के बीच में की। गुलबदन बेगम ने लिखा है कि "जिस समय इरकत इरानम मकानी (बाबर) परतागामी हुए, उस समय वह आठ बप की थी। पर उनसे विषय में उमे बहुत कम स्मरण रह गया था किंतु गाही आदेगा आर उमन जो कुछ सुना अथवा जा कुछ याद रह गया था उसे लिपिबद्ध किया है।" 1

गुलबदन बेगम ने अपनी कृति को दो भागों में लिखा है।

- (i) प्रथम भाग में बाबर का इतिहास।
- (ii) द्वितीय भाग में हुमायूँ का इतिहास।

बाबर के इतिहास के बारे में गुलबदन बेगम ने लिखा है कि "उसे बाबा इरकत आगाह ने अपनी "बाबेनामा" में अपना इतिहास लिख दिया है। पर उनका इतिहास केवल आगीर्वाँ हेतु लिपिबद्ध किया जा रहा है।"

दुमायनामा से बाबर के बारे में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। गुलबदन बेगम ने अपनी कृति में बाबर की दानशीलता, स्वजन एवं परिवार के प्रति उसका प्रेम का अछा शिखरण किया है। बाबर के सम्बन्ध में कुछ घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये गुलबदन बेगम की रचना विशेष महत्व रखती है। डॉ० रिजवी ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "हुमायूँ से बाबर को जितना अधिक स्नेह था, उसका मार्मिक विवरण सब प्रथम 'हुमायूँ नामा' में ही हुआ है और अकबरनामा में उसे अधिक विस्तार से लिखा गया है। गुलबदन बेगम के कृतान्त से पता चलता है कि बाबर की मृत्यु का कारण वही विष था जो इब्राहीम की माता ने उसे 21 अगस्त 1526 ई० को दिया था। अपनी दशावस्था में भी बाबर को हिंदाल की कितनी प्रतीक्षा थी और यह जानने के लिये हिंदाल कितना बड़ा हो गया है, वह कितना उत्सुक था। इसका पता केवल दुमायूँनामा से ही चलता है। इस प्रकार बाबर के सम्बन्ध में गुलबदन बेगम ने अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर जो कुछ भी लिखा है।

1- रिजवी एस ए ए — मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग - प्रथम) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 26

यद्यपि वह बड़ा संक्षिप्त है किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण है और यदि उसमें इसकी रचना न की होती तो अरब के विषय में हमारी जानकारी कितनी अधुरी रह जाती इसका अनुमान केवल "हुमायूनामा" के अध्ययन से ही लगाया जा सकता है।¹

गुलबदन बेगम की कृति का दूसरा भाग अधिक महत्वपूर्ण है जिसमें हुमायू का इतिहास है। प्रो० के० आर० कानूनगो के शब्दों में "मुझे यह पुस्तक बहुत उपयोगी लगी है - विशेषकर हुमायू के जीवन और तिथियों के बारे में। यह बेगम एक दो बातों के सिवाय अरब बातों में विद्वत्सनीय है।"

डा० रिजवी ने गुलबदन बेगम के हुमायू के इतिहास को निम्न तीन भागों में विभक्त किया है। इसमें उन्होंने गुलबदन बेगम के जानकारी के सूत्रों का हवाला दिया है।

(1) गुलबदन बेगम की अपनी जानकारी पर आधारित हुमायू के सिंध की और प्रस्थान तक का तथा हुमायू के काबुल पहुंचने के समय मिर्जा कामरान के अंधे बनाये जाने तक का इतिहास।

(2) हमीदाबानो बेगम द्वारा वर्णित सिंध से इरान तक की यात्रा और काबुल विजय की घटनाएँ।

गुलबदन बेगम की मृत्यु 7 मई 1603 ई० को हुई थी।

गुलबदन बेगम के हुमायू के इतिहास का कितना महत्व है। इसकी पुष्टि में डा० रिजवी के निम्न तीन उद्धरण दिये जा रहे हैं²

हुमायू के पंजाब तथा सिंध की ओर पलायन के पूर्व की जिन घटनाओं का गुलबदन बेगम ने उल्लेख किया है उनमें अभियानों एवं अरब राजनीतिक घटनाओं का बखान बड़े संक्षिप्त रूप से किया गया है। महत्वपूर्ण युद्धों का उल्लेख केवल शीर्षों में कर लिया गया है किंतु अंतपुर के भीतर की घटनाओं का तथा बेगमों के तत्कालीन जीवन का उल्लेख उमन विस्तार से किया है। हुमायू का अपनी माता तथा बहिनो के प्रति प्रेम, माहम बेगम का हुमायू के पुत्र के जन्म के विषय में चिन्ता, बेगमों के द्वारा पुत्र के जन्म की प्रतीक्षा हुमायू

1- रिजवी एम ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायू) भाग - प्रथम पृष्ठ 26

2- रिजवी एम ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायू भाग प्रथम) वही पृष्ठ 27 28

क बुनार के अभियान से वापस होन के उपरांत । माहम बगम द्वारा जदन का आयोजन, तिलिस्सम भवन एव मिर्जा हिदाल के विवाह के जदन का उल्लेख कबल गुलबदन बगम के "हुमायूनामा" मे ही हुआ है । इस विवरण से हम उस समय के उच्च वर्ग के सामाजिक एव सांस्कृतिक जीवन के सजीव चित्र प्राप्त हो जाते हैं ।

हुमायू की सिंध यात्रा के प्रसंग में गुलबदन बगम ने हुमायू तथा हमीरगवानो बगम के विवाह का बड़े विस्तार से उल्लेख किया है । मालदेव के राज्य की ग़ोर प्रस्थान एव वहाँ से वापसी के समय हुमायू को जो कष्ट भोगने पडे, उनका सविस्तार उल्लेख गुलबदन बगम ने किया है । मिर्जा शाह हुसैन द्वारा बरम बरम पर विश्वासघात के कारण हुमायू को जिन कठिनाइयो का सामना करना पडा उनकी भी बगम ने चर्चा की है । हुमायू द्वारा खानजादा बगम को कामरान को समझाने के लिये भेजने, खानजादा बगम के समझाने के बावजूद मिर्जा कामरान का कंधार में अपने नाम का खुन्दा पडवान के लिये आग्रह का हाल गुलबदन बगम का अपनी माता एव खानजादा बगम से ज्ञात हुआ होगा । यह विवरण भी हम किसी ग्रंथ में नहीं मिलता ।

"हुमायू के काबुल विजय के बाद की घटनाओ का उल्लेख बगम ने अपना जानकारी के आधार पर किया है । उस समय हमीरगवानू बगम भी काबुल पहुंच गए थी । अरब बगमो ने भी उन घटनाओ को ब्रम से लिपिबद्ध करने में सहायता दी होगी । मिर्जा कामरान ने हुमायू से काबुल के लिये सपथ के समय बगमो को जो कष्ट दिये, उन्हें गुलबदन बगम ने स्वयं न भोगा था । इस काल में थोडे थोडे समय के लिये जब कभी हुमायू तथा बगम कष्टो से मुक्त हो जाती तो घामो-प्रमो-एव दावतो का भी आयोजन हाता था । इस काल के इतिहास की भी विशेषता स्त्रियों के जीवन के सजीव चित्र एव उनके चरित्र का रोचक विवरण है । मुदमान मिर्जा मीरान शाही की पत्नी हरम बगम द्वारा सेना के नेतृत्व का का उल्लेख बगम ने बड़े स्पष्ट रूप से किया है । मिर्जा कामरान की मूर्खता, एव हरम बगम से इशक की घोषणा के दुष्परिणाम की गुलबदन बगम ने सविस्तार चर्चा की है । मिर्जा हिदाल बगम का सगा भाई था । उसकी हत्या पर शोक एव मिर्जा हिदाल बगम का सगा भाई था । उसकी हत्या पर शोक एव मिर्जा कामरान के प्रति उसका ब्रोड स्वाभाविक ही है । बगम ने मिर्जा कामरान के प्रति हुमायू के शोक एव बगमो के विलाप तथा उसकी लाग के दफन

यद्यपि यह बड़ा संक्षिप्त है किन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यदि उसमें इतनी रचना न की होती बाबर के विषय में हमारी जानकारी कितनी अधुरी रह जाती इसका अनुमान केवल "हुमायूँनामा" के अध्ययन से ही लगाया जा सकता है।¹

गुलबदन बेगम की कृति का दूसरा भाग अधिक महत्वपूर्ण है जिसमें हुमायूँ का इतिहास है। प्रो० के० आर० कानूनगो के शब्दों में "मुझे यह पुस्तक बहुत उपयोगी लगी है - विशेषकर हुमायूँ के जीवन और तिथियों के बारे में। यह बेगम एक दो बातों के सिवाय अन्य बातों में विश्वसनीय है।"

डा० रिजवी ने गुलबदन बेगम के हुमायूँ के इतिहास को निम्न तीन भागों में विभक्त किया है। इसमें उन्होंने गुलबदन बेगम के जानकारी के सूत्रों का हवाला दिया है।

(1) गुलबदन बेगम की अपनी जानकारी पर आधारित हुमायूँ के सिंघ की और प्रस्थान तक का तथा हुमायूँ के काबुल पहुँचने के समय मिर्जा कामरान के अधिनायक बनने तक का इतिहास।

(2) हमीदाबानो बेगम द्वारा वर्णित सिंघ से दौरान तक की यात्रा और काबुल विजय की घटनाएँ।

गुलबदन बेगम की मृत्यु 7 मई 1603 ई० को हुई थी।

गुलबदन बेगम के हुमायूँ के इतिहास का कितना महत्व है। इसकी पुष्टि में डा० रिजवी के निम्न तीन उद्धरण दिये जा रहे हैं²

हुमायूँ के पलायन तथा सिंघ की और पलायन के पूर्व की जिन घटनाओं का गुलबदन बेगम ने उल्लेख किया है उनमें अभियानों एवं अन्य राजनीतिक घटनाओं का वर्णन बड़े संक्षिप्त रूप से किया गया है। महत्वपूर्ण युद्धों का उल्लेख केवल शीर्षों से शब्दों में कर दिया गया है किन्तु अतः पुर के भीतर की घटनाओं का तथा बेगमों के तत्कालीन जीवन का उल्लेख उमर विस्तार में किया है। हुमायूँ का अपनी माता तथा बहिना के प्रति प्रेम, आहम बेगम का हुमायूँ के पुत्र राजम के विषय में चिन्ता, बेगमों के द्वारा पुत्र के जन्म की प्रतीक्षा हुमायूँ

1- रिजवी एम ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ) भाग - प्रथम पृष्ठ 26

2- रिजवी, एम ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग प्रथम) वही पृष्ठ 27 28

के चुनार के अभियान से वापस हो के उपरांत माहम बेगम द्वारा जशन का आयोजन, तिलिस्सम भवन एवं मिर्जा हिंदाल के विवाह के जशन का उल्लेख केवल गुलबदन बेगम के "हूमायूनामा" में ही हुआ है। इस विवरण से हम उस समय के उच्च वर्ग के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के सजीव चित्र प्राप्त हो जाते हैं।

"हूमायू की सिध यात्रा के प्रसंग में गुलबदन बेगम ने हूमायू तथा हमीरानो बेगम के विवाह का बड़े विस्तार से उल्लेख किया है। मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान एवं वहाँ से वापसी के समय हूमायू को जा कष्ट भोगने पड़े, उनका सविस्तार उल्लेख गुलबदन बेगम ने किया है। मिर्जा शाह हुसैन द्वारा यदम बंदम पर विश्वासघात के कारण हूमायू को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उनकी भी बेगम ने खर्चा की है। हूमायू द्वारा खानजादा बेगम को कामरान को समझाने के लिये भेजन खानजादा बेगम के समझाने के बावजूद मिर्जा कामरान का कंधार में अपने नाम का खुतबा पढ़वाने के लिये आग्रह का हाल, गुलबदन बेगम को अपनी माता एवं खानजादा बेगम से पान हुआ होगा। यह विवरण भी हम किसी अन्य ग्रंथ में नहीं मिलता।

"हूमायू के काबुल विजय के बाद की घटनाओं का उल्लेख बेगम ने अपनी जानकारी के आधार पर किया है। उस समय हमीरानो बेगम भी काबुल पहुंच गई थी। अन्य बेगमों ने भी उस घटनाओं को क्रम से लिपिबद्ध करने में सहायता दी होगी। मिर्जा कामरान ने हूमायू से काबुल के लिये संधप के समय बेगमों को जो कष्ट लिये, उन्हें गुलबदन बेगम ने स्वयं न भोगा था। इस काल में थोड़े थोड़े समय के लिये जत्र कभी हूमायू तथा बेगम कपटों से मुक्त हो जाती तो आमोद प्रमोद एवं दांवतो का भी आयोजन होता था। इस काल के इतिहास की भी विशेषता स्त्रियों के जीवन के सजीव चित्र एवं उनके चरित्र का रोचक विवरण है। मुत्तमान मिर्जा मोरान शाही की पत्नी हरम बेगम द्वारा सेना के नेतृत्व का वा उल्लेख बेगम ने बड़े स्पष्ट रूप से किया है। मिर्जा कामरान की मूर्खता, एवं हरम बेगम से इशक की घोषणा के दुष्परिणाम की गुलबदन बेगम ने सविस्तार खर्चा की है। मिर्जा हिंदाल बेगम का सगा भाई था। उसकी हत्या पर शोक एवं मिर्जा हिंदाल बेगम का सगा भाई था। उसकी हत्या पर शोक एवं मिर्जा कामरान के प्रति उसका क्रोध स्वभाविक ही है। बेगम ने मिर्जा हिंदाल के प्रति हूमायू के शोक एवं बेगमों के विलाप तथा उसकी लाश के दफन का भी

विस्तार से उल्लेख किया है। मिर्जा वामरान के प्राचीन ज्ञान विषय जानने पर हुमायूँ ने जिस प्रकार उमकी हत्या के विरुद्ध घापति प्रवृत्त की, उमका गुलबदन बगम न बड़े मार्मिक शब्दों में उल्लेख किया है। मिर्जा वामरान को अज्ञान बना दिया जानने की बात की घटनाएँ, गुलबदन बगम के प्रवाशित "हुमायूँ नामा" में प्राप्य नहीं है। सम्भवतः गुलबदन बगम में दोनों भाइयों की विदा का हृदयविदारक दृश्य प्रस्तुत किया होगा। यदि गुलबदन बगम की रचना के अग्र काल में गृह भी मिल गया तो सम्भवतः बहुत सी तत्कालीन ऐतिहासिक समस्याओं का समाधान हो जायगा।"

वास्तव में बहुत सी बातों के बारे में हम केवल गुलबदन बगम के "हुमायूँनामा" से जानकारी प्राप्त होती है। जिनका अर्थ समकालीन ग्रंथों में वर्णन नहीं है। गुलबदन बगम में बड़ी सरलता और भावुकतापूर्ण शब्दों में घटनाओं का वर्णन किया है। यद्यपि हुमायूँ के इतिहास के बारे में इससे विश्वमतीय जानकारी प्राप्त होती है परन्तु बाबरनामा की तरह इस कृति में हम निष्पत्ता के दशन नहीं होते हैं। उदाहरण स्वरूप, गुलबदन बगम में अपने सगे भाई हिनाल का उल्लेख करते हुए तथ्य को छिपाने का प्रयत्न किया है परन्तु अर्थ घटनाओं का वर्णन बड़ा इमानदारी से किया है।

मिसेज बेवरीज ने इस ग्रंथ को सम्पादित किया है तथा इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तावना सहित प्रकाशित किया है। मिसेज बेवरीज ने लिखा है कि "हि दुस्तान के मुगलकाल का जिन लोगों ने इतिहास लिखा है उन्हें साधारणतः इस बात का ज्ञान नहीं कि गुलबदन बगम ने किसी ग्रंथ की भी रचना की। इसका ज्ञान मिस्टर असकिन का भी न रहा होगा अथवा वह बाबर एवं हुमायूँ के वंश का इतिहास अधिक शुद्धरूप से लिखते।

रसायन विनियम के शब्दों में, यह ग्रंथ पक्षपात से भरा हुआ है फिर भी लक्षिका में इसमें अपनी पिता की कुछ निजी स्मृतियाँ दी हैं।

अभी तक इसकी एक ही प्रति प्राप्त हो सकी है जिसके अंतिम पृष्ठ नष्ट हो चुके हैं। यह प्रति ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित रखी हुई है।

जौहर आफताबची : तजकिरतुल वाकेप्रात

जौहर आफताबची हुमायूँ का निजी सेवक था। वह हमेशा हुमायूँ के साथ ही रहता था। हुमायूँ उस पर बहुत अधिक विद्वान् करता था। उसने छोटी से छोटी घटना का विस्तार से वणन किया है। मिर्जा कामरान को प्रधा करने लिये जिन लोगों को भेजा गया था, उनके साथ जौहर भी था। उसने इस घटना का प्राखों देखा हाल भी लिखा है। हुमायूँ के समय में इसे एक के बाद एक पद प्राप्त होता रहा। हुमायूँ के निधन के समय में भी वह खजांची के रूप में कार्य कर रहा था।

जौहर ने 30 वर्ष बाद अकबर के शासनकाल में अपने ग्रन्थ की रचना की। डॉ० बानूनगो के अनुसार "तजकिरतुल वाकेप्रात" ग्रन्थ तजकिरात उल वाकियात' हुमायूँ राज्यकाल का प्रामाणिक इतिहास है और गुलशदन बेगम, से अधिक बज्जन्दार है - विशेषकर उस समय तक जब हुमायूँ, पट्टा छोड़कर कंधार चला गया था।

जौहर ने 1585 ई० में इस ग्रन्थ को लिखना प्रारम्भ किया था। उसने लिखा है कि "मेरा इरादा उन तमाम घटनाओं का वणन करने का नहीं है जो पिछली हकूमत में घटी थी। मैं केवल उहीं घटनाओं का वणन करूँगा जिनके साथ बांग्लाह का सम्बन्ध था। इसलिये मैं इस ग्रन्थ का प्रारम्भ हुमायूँ के राज्य रोहण से करूँगा और ईरान से उसकी वापसी तथा राज्य प्राप्ति पर इसको समाप्त कर दूँगा और फिर मैं बताऊँगा कि बांग्लाह न सिवधैय के साथ कितनी विपदाओं और कठिनाइयों का सामना किया और सब शक्तिमान परमारमा के प्रयुष से उमने अपना राज्य पुन प्राप्त कर लिया। मुझे धागा है कि इस पुस्तक के कारण लेखक का नाम भावी पीढ़ियों तक बना रहेगा। मानव जाति को इस प्रसाधारण घटनाओं का पता लगेगा।"

1- धर्मा, एस०प्रार०-दी क्रीसेट इण्डिया (हिंदी) पृष्ठ 48

2- इतिवट एव डाउनसन भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 112-113

तजपिर तुल चावेघ्रात अथवा अय किसी घ घ से इस बात का पता नहीं चलता कि अकर के राज्यकाल में उसे कोई पद प्राप्त या अथवा नहीं । सम्भवत उसे कोई महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं था अथवा बायजौ की भांति वह अकर के राज्यकाल सम्बन्धी भी कुछ न कुछ अपने संस्मरण में लिखता ।

प्रथ के दोष

1. वही-वही जोहर ने घटनाओं का क्रमबद्ध रूप से बखान नहीं किया है ।
2. घटनाओं की तारीखें ठीक नहीं लगी गई हैं ।
3. उसमें तथ्यों की विश्लेषण करने की क्षमता का अभाव है ।

इन दोषों के बावजूद भी यह मानना पडेगा कि उनमें सभी, तथ्यों का अलग-अलग बखान किया है । उसका अर्थ ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है । डॉ० रिजवी न लिखता है कि, "जोहर की भाषा, सरल, सुबोध एवं वनावट से मूल्य है । घटनाओं का भी उसने बड़ी सच्चाई से अपनी ओर से कुछ मिलाये बिना उल्लेख कर दिया है ।"

'इलियट एवं डालमन ने लिखा है कि 'जोहर द्वारा' लिये गये ये संस्मरण सच्चाई और इमानदारी के साथ लिखे हुए प्रतीत होते हैं और इनमें बेसी अधिकृतियाँ और स्तुतियाँ नहीं हैं जो एशिया के जीवनी लेखकों में पायी जाती हैं । पर तु यह बात अवश्य है कि हुमायूँ की मृत्यु के तीस वर्ष बाद इनका लिखना प्रारम्भ हुआ था । इसलिये इनका यह दावा कि जिन घटनाओं का इनमें बखान है वे तद्वत और पूणतया ठीक हैं, पूणत नहीं माना जा सकता । ज्यों ज्यों घटनाएँ घट रही थीं त्यों त्यों वे उसी समय नहीं लिखी जा रही थीं । ये तो तीस वर्ष से भी अधिक पुरानी घटनाओं की स्मृतियाँ थीं । इसलिय लेखक में भी कितनी भी सत्यशीलता और इमानदारी हो, समय ने उनके संस्कारों को कुछ धुंधला प्रवश्य कर दिया होगा और अपने प्रिय मालिक की जो भी बातें उसे याद होंगी वे अ पुरानी स्मृति के कारण अच्छी मालुम हाने लगी होंगी ।"

1- रिजवी ए० ए० ए० मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग प्रथम) पृष्ठ 30

2- " " " " " " " " " " " "

3- इलियट एवं डालमन- भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 113

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद : तबक़ात-ए-अक़बरी

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद की कृति तबक़ाते अक़बरी को अक़बरग़ाही तारीख़ ए निजामी घादि कई नामों से भी पुकारा जाता है। ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद के पिता का नाम ख्वाजा मुहम्मद मुकीम हरवी था। वह ख़ावर का बड़ा विद्वांसपात्र था तथा गीवाने ब्यूतात था। हुमायूँ ने 1535 ई० में गुजरात पर अधिकार करने के बाद जब अक़बरी को बहा का शासक नियुक्त किया तब उसने मुकीम को अक़बरी का वज़ीर नियुक्त किया। 1539 ई० में जब हुमायूँ गेगाह से चौमा युद्ध में पराजित होकर घागरा पट्ट्या तो ख्वाजा मुहम्मद मुकीम उसके साथ था।

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद ने अपने कृति में अपने जन्म प्रांति के विषय में कुछ नहीं लिखा है। किन्तु उदायूँ नो ने लिखा है कि निजामुद्दीन अहमद की मृत्यु 45 वर्ष की आयु में 7 नवम्बर 1594 ई० को (अक़बर के शासनकाल के 38वें वर्ष में) हुई।² इस प्रकार उसकी जन्म तिथि 9¹/₈ हि० अ वा 1551 ई० होनी है। हमें ख्वाजा निजामुद्दीन की वास्तविकता तथा जन्म की तिथि के विषय में कोई प्रामाणिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है। परन्तु तबक़ाते अक़बरी के अध्ययन में पता चलता है कि निजामुद्दीन अवश्य ही अपने समय के बड़े-बड़े विद्वानों के द्वारा शिक्षा प्राप्त की होगी। जिस समय वह गुजरात में था तो बत्तख़ाने के अनुसार उमानी, बक़ा हयानी तथा सरफ़ी सरिख़े कवि उसके द्वारा प्राप्त करते रहते थे। अक़बर ने उसे "तारीख़े अलफ़ी" के संकलनकारियों के बौद्ध में भी सम्मिलित किया था।³

निजामुद्दीन एक उच्च बोटि का मनीव था जिसने अक़बर के समय में विभिन्न महत्वपूर्ण अभिनयों में भाग लिया था। अक़बर ने अपने शासनकाल के 29 वें वर्ष में उसे गुजरात के बग़ी के पद पर नियुक्त किया और बाद में 1587

1 रिजवी 'एस ए ए'—मुग़लकालीन भारत (हुमायूँ भाग दो) पृष्ठ 181

2—बत्तख़ाने—मु तख़ाव-उत-तवारीख़ भाग 1 पृष्ठ 393-96

3—रिजवी एम ए ए मुग़लकालीन भारत (हुमायूँ भाग दो) पृष्ठ 1

-88 ई० में उसे दरबार में बुला लिया। उसे अकबर के दरबार में एक के बाद एक उच्च पद प्राप्त होते रहे। डॉ० श्रीवास्तव ने लिखा है कि "वह बहुत ही कुशल दरबारी था और शासन के सभी दृष्टिकोणों और अकबर मुसलमानों में बहुत जनप्रिय था। उसे अकबर, फजल और बदायूनी दोनों ही पसंद करते थे।"

ग्रन्थ का ऐतिहासिक महत्व

निजामुद्दीन ने ग्रन्थ के प्राक्खणन में लिखा है कि उमन इसमें उन घटनाओं का वर्णन किया है जो हिन्दुस्तान में इस्लाम के प्रभुत्व पर्यन्त 367 हि० (977-78 ई०) से लेकर 1001 हि० (1592-93 ई०) तक घटीं। किन्तु वास्तव में इसमें 377 हि० (987-88 ई०) से लेकर 1002 हि० (1593-94 ई०) तक का भारत का इतिहास उपलब्ध होता है। सम्भवतः लेखक ने 1001 हि० में इसकी रचना समाप्त कर ली थी और 1002 हि० की घटनाएँ बाद में जोड़ दीं।"

निजामुद्दीन की कृति 'तबक़ाते अकबरी' दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में 1593 ई० तक देहली का इतिहास है। दूसरे भाग में पहिले तीसरे में गुजरात, चौथे में मालवा, पाँचवें में बंगाल, छठे में जौनपुर सातवें में बदायूँ, आठवें में सिंध एवं नवें में मुलतान का इतिहास दिया हुआ है। मुन्शी देवी प्रसाद के शब्दों में, यह पहला इतिहास है जिसेमें विशाल हिन्दुस्तान के उन मुसलमान सुलतानों का वर्णन दिया हुआ है।³ यह ग्रन्थ तीन भागों में एशिया टिक सोसायटी बंगाल की त्रिलोकोपिथका इण्डिका सीरीज में प्रकाशित हुआ है। इसके द्वितीय भाग में अकबर, हुमायूँ और अकबर का इतिहास है तथा तीसरे भाग में देश के अथवा प्रांतीय राज्यों का इतिहास है।

निजामुद्दीन ने अपने ग्रन्थ तबक़ाते अकबरी को लिखने के लिये 27 ग्रन्थों का सहारा लिया जो निम्नलिखित हैं —

- (1) तारीखे यामिनी (2) तारीखे जैनुल (3) रोजतुरस्का (4) नाजुल हम्मानिर
- (5) तबक़ाते नासिरी (6) खजाइनुल फुह (7) सुगलकनामा (8) तारीख-ए फीरोजशाही (बरनी) (9) फुहूहाते फीरोजशाही (10) तारीखे मुशरकशाही

1— डॉ० श्रीवास्तव, ए.एल. - मुगलकालीन भारत (1526-1803) पृ० 25-26

2— रिजवी, एस.ए.ए. - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग दो) पृष्ठ 19-20

3— मुन्शी देवी प्रसाद का मुगल दरबार भाग 3 (नागरी प्रचारिणी सभा)

(11) फूतूह उस-सलातीन (12) तारीखे मुहम्मदी (13) तारीखे मुहम्मिदशाही
 हिंदवी (14) तारीखे मुहम्मदशाही गुजराती (15) मन्नासिरे महमूदशाही
 गुजराती (16) तारीखे बहादुरशाही (17) तारीखे नासिरी (18) तारीखे
 मुजप फरशाही (19) तारीखे बहमनी (20) तारीखे मिर्जा हँदर (21) तारीखे
 सिध (22) तारीखे कश्मीर (23) बाकंभाते बाबरी (24) तारीखे बाबरी
 (25) तारीखे इब्राहीमशाही (26) बपकंभो मुस्ताकी (27) बाकंभाते हजरत
 जनत भागियानी हुमाय बादशाह

निजामुद्दीन अहमद ने जिन ग्रंथों को आधार बनाकर यह ग्रंथ लिखा है
 उनमें से बहुत से ग्रंथ अब उपलब्ध नहीं होते हैं। अतः उसकी वृत्ति ऐतिहासिक
 दृष्टि से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त निजामुद्दीन अहमद ने कट्टर-
 पन, पक्षपात एवं इसी प्रकार के अन्य दोष बहुत कम पाये जाते हैं। उसने घटनाओं
 की ध्यानवीन करने के बाद उनका वर्णन किया है। निजामुद्दीन ने मालवा, गुजरात
 कश्मीर, एवं पंजाब का इतिहास अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर
 लिखा है।

निजामुद्दीन के अनुसार राणा सांगा ने मालवा के सुलतान महमूद को
 युद्ध में पराजित करने के बाद बन्दी बना लिया। इसके पश्चात् उन्होंने महमूद को
 न केवल मुक्त कर दिया अपितु उसका आधा राज्य भी उसे लौटा दिया। राणा
 सांगा और गुजरात के सुलतान की तुलना करते हुए निजामुद्दीन ने राणा सांगा
 की उदारता एवं पौरुष की भूरी भूरी प्रशंसा की है।

निजामुद्दीन ने सरल, सरस, और प्रभावशाली भाषा में अपनी ग्रंथ
 लिखा है जिससे घटनाएँ आसानी से समझ में आ जाती हैं। उसने घटनाओं को
 यथावत् प्रस्तुत किया है तोड़ा मरोड़ा नहीं है। तारीखे अखिरता के बाद बहुत
 से इतिहासकारों ने निजामुद्दीन के ग्रंथ के आधार पर बनावर अपने ग्रंथों की
 रचना की है।

निजामुद्दीन ने बाबर का इतिहास बाबरनामा एवं अकबरनामा को
 आधार बनाकर लिखा है। बाबर की मृत्यु से पूर्व निजामुद्दीन अली

द्वारा हुमायूँ को राज्य स वचिन करने के लिये पङ्कत्र रचा गया था । खलीफा हुमायूँ के स्थान पर बाबर के बहनोई मेंहदी ख्वाजा को शासक बनाना चाहता था । इस घटना के बारे में निजामुद्दीन को जानकारी अपने पिता मुहम्मद मुकीम से प्राप्त हुई थी । निजामुद्दीन के अनुसार इस पङ्कत्र का खण्डन उनके पिता मुकीम के प्रयत्न के ही फलस्वरूप हुआ । उसने पिता के इन कारनामों का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया है । निजामुद्दीन के द्वारा खलीफा पङ्कत्र के बारे में दिया गया विवरण काफी महत्वपूर्ण है । अकरनामा से भी इस घटना के बारे में जानकारी मिलती है ।

इलियट एव डाउसन ने लिखा है कि 'हिन्दुस्तान के इतिहासों में यह एक बहुत प्रसिद्ध पुस्तक है । इस नये त्र पर लिखा हुआ यह प्रथम ग्रंथ है और इसका विषय केवल भारतवर्ष ही है । एशियाई देशों के इतिहासों को इससे अलग रखा गया है । समकालीन इतिहासकारों में इसको उच्च कीर्ति का प्रथम माना है ऐसा प्रतीत होता है । पीछे के लेखकों भी इसका बड़ा ही आदर करते आये हैं और इससे उहाँन खूब उद्धरण लिये हैं । मुतखाब उत तवारीख का लेखक वदायनी अपनी पुस्तक को इसका संक्षिप्त रूप मानता है और यह स्वीकार करता है कि 1002, हि० (1593 ई०) की घटनाओं के लिये वह इस ग्रंथ का मुख्य आधार है । परिश्रम से लिखा है कि उसने जितने भी इतिहास लिखे, वे उनमें यही उसे पूरा मानुम होता है ।'

मर्धानिर उल उमरां में लिखा है कि 'इस ग्रंथ के लेखकों की घटनाओं और नामों का संग्रह करने में बहुत विचार और सावधानी करनी पड़ी थी । मोर मामुम बरवारी और दूसरे प्रसिद्ध लोगों ने इसके संकलन में उसको सहायता दी थी । इसलिये यह पुस्तक प्रशंसा के योग्य है । यह पहला इतिहास है जिसमें हिन्दुस्तान के मुस्लिम शासकों का विवरण दिया हुआ है । इस ग्रंथ में से मोहम्मद कासिम फरिश्ता ने और अन्य लोगों ने बड़े बड़े उद्धरण लिये हैं और यह उनके इतिहासों का आधार है । इसमें जो कमियाँ हैं वे उहाँन पूरी की हैं । परन्तु तबकते अकबरी प्रायः अयुन फजल के वतात से नहीं मिलती । इसलिये यह पाठकों पर छोड़ा जाता है कि इन दो लेखकों में कौन अधिक विश्वास के योग्य है ?'

1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 143

2- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 143

पुनश्च यूरोपीय लेखक भी इस ग्रन्थ को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और प्रसन्न ने तो निजामुद्दीन को उस समय का शायद सर्वोत्तम इतिहासकार माना है।¹ "तारीख-ए-सलातीन ए अफगानी के लेखक ने हुमायूँ का शासनकाल सन् १५५५ ई. से नकल किया है।² फरिश्ता ने लिखा है कि "मैंन बहुत से इतिहास ग्रन्थ पढ़े हैं, परन्तु मैं इस ग्रन्थ को पूर्ण मानता हूँ।"³

नि मदेह निजामुद्दीन अहमद एक विश्वसनीय इतिहासकार है। उसने घटनाओं को सत्य विवरण प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि उसके ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्त्व है।

-
- 1- इलियट एव डाउसन भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 144
 - 2- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (पाद टिप्पणी) पृष्ठ 143
 - 3- एस आर गर्मा से उद्धृत - भारत का इतिहास पृष्ठ 149



अब्बास खां सरवानी : तारीख-ए-शेरशाही

यह पुस्तक सम्राट अकबर के आदेश से लिखी गई थी। इसके लयक ने इस पुस्तक का मीपक "तोहफत ए अकबरशाही" लिखा है किंतु अब्बास यागार ने कुछ वर्षों पश्चात् "तारीख ए-मुलातीन ए अकबानी" लिखी थी, उमो इस पुस्तक को "तारीख ए शेरशाही" के नाम से सम्बोधित किया था और यह इसी नाम से प्रसिद्ध है।¹

अब्बास खां के विषय में हमें उसकी पुस्तक से थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त होती है। अथ समकालीन ग्रंथों में इन बारे में वएण प्राप्त नहीं होता। उसके पिता का नाम शेख अनी सरवानी था, जो शेरशाह का समकालीन था। उसके अनेक पूजक शेरशाह की सेवा में रह चुके थे। इस सम्बन्ध में अब्बास खां ने लिखा है कि 'मैं जो इन अकबरशाही का लेखक हूँ, मिया हस्तु अब्बास खां सरवानी का पुत्र था। वह मर पूजकों में से था। उसके बहुत से पुत्र, पौत्र शेरशाह के साथ थे। अस्तुमिया न हस्तु को दरिया खां की उपाधि दी थी। शेरखा के साम ती में से वो² उसके समान न था। शेरशाह की सगी बहिन उसकी ब्याही थी जिस समय शेरशाह उनकी के प्रारम्भिक काल में था उस समय दरिया खां की मृत्यु हो गइ। इन बात के उल्लेख से इस तुच्छ का यह अभिप्राय है कि मेरे तथा शेरशाह के बीच कई प्रकार का सम्बन्ध है। अतः उसके हाल से भी मैं भलीभांति परिचित हूँ जा कि मैं अपने पूजकों में द्यानवीनकर जाना।³

इसी तरह से इस पुस्तक की रचनाकाल के बारे में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। इलियट एव डाउसन के अनुसार इस पुस्तक की रचना लगभग 1579 ई० में की गई। इस तिथि का उल्लेख लेखक ने अपना निजी विवरण देने हुए एक स्थान पर किया है। किन्तु यह उचित नहीं है क्योंकि लेखक ने एक स्थान पर महर सुलताना जो मिया काला पहाड़ा फारसूली की पुत्री बीबी फतेह मलिका की पत्नी थी, के निधन का वर्ष 977 हि० (1588-89 ई०) लिखा है, जिससे स्पष्ट है कि ग्रंथ की रचना 1588-89 ई० के पश्चात् ही हुई।⁴

1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 226

2- निगम, एस बी पी (डा०) सूरवश का इतिहास पृष्ठ 2

3- निगम, एस बी पी (डा०) सूरवश का इतिहास पृष्ठ 2

1. अरगानो द्वारा उम समय तथा उमके बाद जिनने भी इतिहास लिगे गये उनमे तारीख-ए शेरशाही को विशेष सम्मान प्राप्त है। घतमान समय के सभी इतिहासकारो न तारीख ए शेरशाही को आधार बनाकर शेरशाह का इतिहास लिखा ह। डा० निगम न लिखा है कि 'अब्बास खा ने अपने घटनाओं से सम्बंधित अपने मूचना खोतों का भी उल्लेख किया है। घन इस पुस्तक के तप्या म कोई सन्देह नहीं है। बड़ी बड़ी घटनाओं की पुष्टि हुमायूँ से सम्बंधित ग्रंथ इतिहासों से भी होनी है। शेरशाह का सम्पूर्ण विवरण जितना विस्तार पूर्वक इस ग्रंथ म मिलता है, उतना किसी ग्रंथ म नहीं।'

अब्बास खा न बड़ी सावधानी और बुद्धिमतापूर्ण तरीके से अपने ग्रंथ की रचना की है। उसन लिखा है कि 'जो कुछ उन विद्वत्तनीय पठानो के मुख मे जो इतिहास तथा साहित्य म निपुण थे और उनके राज्य के प्रारम्भ म अत तब उनक साथ थे तथा विशेष सेवा के कारण विभूषित एवं सम्मानित थे, मुना था, जो कुछ जाच की बमौटी पर खरा नहीं उतरा उस त्याग दिया। उसन बहुत सी घटनाओं के सम्बंध म अपने रिश्तेदारो से जानबारी प्राप्त की। उसके पचात उसन अपने ग्रंथ म लिखा।

1. अब्बास खा ने लिखा है कि 'जो शेरशाह का हाल लिख रहा ह अपने चाचा शेख मोहम्मद के मुख से, जो अपने कलाओं म निपुण थे एवं चंदेरी के अभियान म बाबर के बादशाह की मना म थे उनसे मुनकर लिखा। शेरशाह के गामनकाज का विस्तृत इतिहास हम इस ग्रंथ म मिलता है। इस पुस्तक के प्रथम भाग म शेरशाह का इतिहास द्वितीय भाग म इस्लाम खा का इतिहास एवं ततीय भाग म उन बादशाहो का इतिहास है जो शेरशाह के सर्वाधियों तथा जागीदारो म स थे। जो इस्लामशाह के बाद बादशाह बने और अपने नाम का मुनवा पहचाना तथा सिक्का प्रचलित किया।

1. अब्बास खा न शेरशाह के गामन सम्बंधी सुधारो का विस्तृत वर्णन किया है। उसन लिखा है कि जिस समय अरब तथा शासन की बागडोर शेरशाह के हाथ म थी, तथा भारतवर्ष का देश इसके अधिचार मे आया तो अत्याचार एवं अत्याय दूर करन म उपद्रव तथा अराजक को समाप्त करन, निर्वासित (उजड़े) लोगों को पुन बसाने, यापारियों तथा सिपाहियों के लिये भी सेंटोय और धार्मिक स्थापित करन हेतु कुछ नियम उसने अपनी बुद्धिमानी से प्रचलित किये और कुछ जानियों की पुस्तकों से पढ़कर वासचित किये थे। उसने अपने

अनुभव से जाना था कि बादशाहों को चाहिये कि स्वयं घमपरायण रहे तो प्रजा भी उपासना की ओर आकर्षित होती है। यदि कोई पाप प्रजा से होता है तो राजा भी इसमें सम्मिलित होता है। अतः शासकों के लिये उसने यह उचित नहीं माना कि जनता के विरुद्ध युद्ध काय करें। ”

अब्राहम खा सरखानी ने शेरशाह के यादप्रबंध की काफी प्रशंसा की है। उसने लिखा है कि वह याद करते समय किसी प्रकार का पक्षपात नहीं करता था। उसने शेरशाह की राजस्व नीति का वर्णन करते हुए लिखा है कि शेरशाह ने भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिये कौन कौन से कदम उठाये थे। अब्राहम खा ने शेरशाह के शब्दों में लिखा है कि “जिस समय ऐश्वर्य के मूल्य न मेरा साथ दिया तथा चूँकि मैं अमीरो तथा सैनिकों के छलकपट से विन्तित था, इसलिये बहुत सोच विचार कर मैंने दाग की प्रथा को प्रचलित किया ताकि अमीरो तथा सैनिकों के छलकपट का माग बन्द हो जाय। ”

अब्राहम खा ने लिखा है कि शेरशाह बिना दाग लगाये किसी का भी वेतन नहीं देता था। सैनिकों के हुलिया तथा घोड़ों के निगान तथा रंग का रेकाड रखा जाता था। इस प्रकार इस पुस्तक से हम शेरशाह के शासनकाल के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

ग्रन्थ के दोष -

इस ग्रन्थ के प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं -

- (1) लेखक ने घटनाओं की तिथियाँ नहीं दी हैं और हम इसके लिये ग्रन्थों पर निर्भर रहना पड़ता है।
- (2) लेखक में भौगोलिक ज्ञान का अभाव था। उसने अभियानों का वर्णन करते समय स्थानों के नाम गलत लिख दिये हैं। जैसे कि अपने फतेहपुर के स्थान पर फतेहपुर सीकरी लिखा है।
- (3) शेरशाह का वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण लिखा गया है। अब्राहम खा ने शेरशाह की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा की है।
- (4) जब बालूच और शेरशाह के बीच युद्ध हुआ तब अब्राहम खा शेरशाह की सेना में मौजूद था परन्तु उसने अपने ग्रन्थ में यह नहीं लिखा है कि युद्ध किस स्थान पर हुआ था।

- (5) पुस्तक की सैली पाठको को धराने वाली है। इलियट एव डाउसन न लिखा है कि 'अभिव्यक्ति में भिन्नता नहीं है। सब एक ही सैली है, सब सम्बन्धित व्यक्ति एवं प्रकार से घातें करते हैं। उनकी बातों में और लेखक के वृत्तांत में एक ही जैसे शब्दों का बाहुल्य है जिससे धरान उत्पन्न होनी है।''

इन दोषों के बावजूद भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इन ग्रन्थों से पूर्वक के इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होनी है। बाद के इतिहासकारों में निजामुद्दीन एव बंशूनी ने शेरशाह का इतिहास लिखते समय प्रगास खा के ग्रन्थ को आधार बनाकर लिखा है। प्रगास खा के विवरण को इलियट एव डाउसन ने भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) में व्यवस्थित रूप से दिया है।

1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 226



अबुल फजल ने अकबरनामा नामक ग्रंथ की रचना की। वह अपनी विद्वता के कारण मध्यकालीन मुस्लिम जगत में प्रसिद्ध था। उसके पिता का नाम शेख मुबारक नागौरी था जो नागौर का रहने वाला था और सूफी सम्प्रदाय का अनुयायी था। अबुल फजल अपने पिता की भाँति उदार सूफी था।¹

अबुल फजल को कई विषयों का ज्ञान था और फारसी भाषा पर उसका अधिकार था। उसका छोटा भाई फैजी अच्छा कवि एवं लेखक था। उमका भी फारसी भाषा पर बड़ा अधिकार था। अबुल फजल अकबर के नौ रत्नों में से एक था। वह खुसरो का अध्यापक था और 2500 का मनसबदार बन चुका था² जबकि बी० एन० लूनिया के अनुसार अबुल फजल 500 का मनसबदार बन चुका था।³

अबुल फजल की गिनती अकबर के घनिष्ठ मित्रों में होती थी। उसका जन्म 14 जनवरी 1551 (मुहम्मद 958 हि०) को आगरा में हुआ था।⁴ अकबर के शासनकाल के 19 वें वर्ष में (1573-74 ई०) में वह अकबर के दरबार में लाया गया और शीघ्र ही अकबर का विश्वासपात्र बन गया। अकबर के समय में कट्टर आलिमों के ज़ार को तोड़ने में उमने अकबर की बड़ी सहायता की और उनके सुलहकुल के सिद्धांतों के निरूपण में एक प्रचारक में बहुत बड़ा हाथ था।⁵

- 1- शर्मा एम एल (डा०) - (अकबरनामा) शेख अबुल फजल कुल के संक्षेपक एवं अनुवादक (भूमिका)
- 2- शर्मा एम एल (डा०) (अकबरनामा) शेख अबुल फजल कृत के संपादक एवं अनुवादक (भूमिका)
- 3- लूनिया बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 495
- 4- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत, हुमायूँ भाग प्रथम पृष्ठ 19 (समीक्षा सम्बन्धी)
- 5- रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत हुमायूँ भाग प्रथम पृष्ठ 39 (समीक्षा सम्बन्धी)

उस समय के समस्त विद्वान एवं लेखक उसकी योग्यता से प्रभावित थे। उसने दक्षिण में सराहनीय सैनिक सेवार्थ भी सम्पन्न की। वहीं से लौटते समय साहजाना सलीम ने, जिसने बादशाह होकर जहागीर की उपाधि धारण की, 22 अगस्त 1602 ई० (4 रबी उल अख्बर, 1011 हि०) को वीरसिंह देव नामक बुदला सरदार द्वारा उसकी हत्या करवा दी। वीरसिंह देव ने शेख अबुल फजल का सिर सलीम के पास इलाहना भेज दिया। खालिफ के समीप अतरी में उसकी लाश दफन कर दी गई।

साहजाना सलीम को अबुल फजल से पूछा इसलिय थी की यह मंत्री अपने स्वामी का बहुत बंधादार था और युवराज की आशोकामोक्षी को उसने बड़ी सफलता के साथ मटियामेट कर दिया था। साहजाना कई बार विद्रोह के चिह्न प्रकट कर चुका था। उसका इरादा स्वतंत्र होने का था। अंत में जब अकबर ने अबुल फजल को दक्षिण के अभियानों से परामर्श के लिये बुलावाया तो सलीम को उसको भ्रम करने का अवसर प्राप्त हो गया।

अबुल फजल एक कुशल, साहित्यकार-यामात्रासिद्ध उल उमरा के लेखक साहजानादेव खा न अपने सस्मरणों में अबुल फजल के विषय में लिखा है कि प्रायः यह कहा जाता है कि अबुल फजल काफिर था, कुछ कहते हैं कि वह हिंदू था या अग्निपूजक था या स्वतंत्र विचारक था और कुछ तो महात्मा कहते हैं कि वह नास्तिक था। परंतु अल्प लोग अधिक जाय की बात कहते हैं। वे कहते हैं कि वह सब धर्मों को मानता था और सूफियों की भांति अपने आपका पैगम्बर के कानून से ऊपर समझता था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसका चरित्र बड़ा उच्च था और वह सब लोगों के साथ शांतिपूर्वक रहने का ईच्छुक था। उसने कभी कोई अनुचित मत नहीं कहा। उसके घर में गाली, बतन रोचना, अथ दण्ड आदि का अस्तित्व नहीं था और उसके नौकर कभी अनुपस्थित नहीं रहते थे। यदि वह किसी भी धार्मिकी को नियुक्त करता तो जो बात में बेकार सिद्ध होता तो वह उसको हटाता नहीं था परंतु जहां तक सम्भव होता वहां तक उसे बने रहने देता था। क्योंकि वह प्रायः कहा करता था कि यदि वह उसको हटायेगा तो लोग कहेंगे कि उसमें व्यक्ति को परखने की बुद्धि का अभाव है। इसलिये उसने अनुपयुक्त व्यक्ति की नियुक्ति की। जिस दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता था, उस दिन वह अपने सारे घर का निरीक्षण करता था और सूचि अपने पास रखता था। वह गत वर्ष

1- रिजवी, एस ए, ए - मुगलकालीन भारत, हुमायूँ भाग प्रथम पृष्ठ 39

2- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (पष्ठम खण्ड) पृष्ठ 2

3- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (पष्ठम खण्ड पृष्ठ 2)

की हिसाब बहियो को जला देता था ।, वह अपने कपड़ों की सब सद्नें अपने नौकरो को दे निया करता था और अपने पाजामें अपने सामने जलवा देता था ।¹

शाहनवाज खा ने आगे लिखा है कि "उसकी भूख बड़ी असाधारण थी । ऐसा कहा जाता है कि पानी और शोरबे के अतिरिक्त वह बार्डस सँग भोजन करता था । उसका पुत्र अब्दुल रहमान उसके साथ बैठता था । उसकी रसोई का जमादार एक मुसलमान था वह भी हाजिर रहता था और वे दोनों नेखा करता थे कि अबुल फजल एक ही चीज को दुबारा खाता है या नहीं । यदि वह खाता था तो वही चीज दूसरे दिन बनाई जाती थी । यदि उसे किसी चीज में स्वाद नहीं आता था तो वह अपने पुत्र से कहता था कि इसको खलो और फिर उस दरोगों को दे देता था । परन्तु इस विषय में एक भी शब्द नहीं बोला जाता था । जब अबुल फजल दक्खिन में था तो उसके खाने का विलास इतना बढ़ गया था कि लोगों की विश्वास नहीं होता था । एक बटन बड़े डेरे में एक हजार चीजें बनाकर रखी जाती थी और अमीरो में विभक्त कर दी जाती थी । उनके पास एक दूसरा डेरा लगता था जिसमें गरीब और अमीर सब लोग खाने के लिये आते थे और दिन भर बिचड़ी पकती रहती थी और जो मागता था उसे भी जाती थी ।"²

अबुल फजल के तीन पत्नियां थी । प्रथम पत्नी हिंदुस्तानी थी जिसके साथ माता पिता ने उसका निवाह किया था । दूसरी पत्नी कश्मीर की यात्रा में उसे प्राप्त हुई थी तथा तीसरी पत्नी इरानी थी । तीन पत्नियां होने के बावजूद भी उसके अब्दुरहमान नामक एक ही पुत्र था । यद्यपि जहागीर ने अबुल फजल का वध करवाया था परन्तु उसके पुत्र अब्दुरहमान के साथ उसने अच्छा व्यवहार किया । जहागीर ने अब्दुरहमान को न केवल दो हजार का मनसबदार बनाया अपितु उसे "अफजल खा" की उपाधि भी प्रदान की । कुछ वर्षों बाद बिहार के सुबेदार के पद पर उसे नियुक्त कर लिया और गोरखपुर की जागीर दे दी ।³ अब्दुरहमान की मृत्यु पटना में अबुल फजल की मृत्यु के ग्यारह वर्ष बाद ही हो गई । अबुल फजल अपनी ऐतिहासिक कृति के कारण इतिहास में सदा के लिये अमर हो गया ।

डा० रिजवी के अनुसार 'अकबरनामा के अतिरिक्त उसने 'आमरे दानिक' की

1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (भाग 6) पृष्ठ 2-- 1

2- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (भाग 6) पृष्ठ 2

3- डूनिवा बी. एन अफसर महान् पृष्ठ 498

रचना की जो कि "घनवारे सुहृदी" वा. ही सरल एव सुगोप रूप है। महाभारत के घनवाद तथा "तारीखे अन्वी" के प्राक्कथन की भी उसी ने रचना की। उसकी रचनाओं में उसके पत्रों का संग्रह जिस उमकी यहिन के पुत्र अब्दुस्मद जिन अब्जल मुहम्मद ने 1606-07 ई० (1015 हि०) में संकलित किया, बड़ा प्रसिद्ध है। यह संकलन "मुक़ाते बात" ईशाण अबुल "फजल" अथवा "मुक़ातेबाते अबुल फजल" के नाम से प्रसिद्ध है। उसकी एक अन्य रचना 'रुबवात अबुल फजल' अथवा 'अबुल फजल के पत्रों का संग्रह' के नाम से प्रसिद्ध है। किंतु इसमें सभी पत्र जाली हैं और किसी ने अबुल फजल की प्रसिद्धि से लाभ उठाकर उसके नाम से यह रचना तैयार की है। फौजी के पत्रों के संग्रह 'खनाएफ फौजी' नामक ग्रंथ में अबुल फजल की एक अन्य रचना 'मुनाजान' भी सम्मिलित है।¹ अबुल फजल को सबसे प्रसिद्ध रचना 'अकबरनामा' एव आइन अकबरी है। अकबरनामा का जिस क्रम में विभाजन किया गया था, उसके अनुसार आइन ए अकबरी अकबरनामा का तीसरा भाग है किंतु यह एक प्रथक ग्रंथ के रूप में ही अधिक प्रसिद्ध है।

अकबरनामा की भाषा और शैली

मघासिर उल-उमरा के लेखक शाहनवाज या न अबुल फजल की शैली की प्रशंसा करते हुए यहां तक लिखा है कि "उसकी शैली महान् है और दूसरे मुशिशा की भांति उसमें न पारिभाषिकता है और सारहीन अलंकरणता है। उसके शब्दों में ओज है, उसके कार्यों की रचना सुंदर है, उससे समास उपयुक्त हैं। और उसकी युक्ति बड़ी मधुर है। वास्तव में किसी अन्य लेखक के लिये उसका अनुसरण करना बहुत कठिन है।"²

ज्योचर्मन ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि अबुल फजल की शैली के विषय में जो उपयुक्त बात की गई है उसके बाद कुछ और लिखना अनावश्यक है। सुखारा का बादशाह अब्दुल्ला बहा करता था कि वह अकबर के तीर से इतना नहीं डरता जितना अबुल फजल की कलम से डरता है। भारत-वर्ष में अब्दुल फजल को महान् मुशिशा माना जाता है। उसके साहित्य का सर्व मंदरसों में अध्ययन किया जाता है। प्रारम्भ में वह छात्र को कठिन और परेशान करने वाला प्रतीत होता है। परंतु वे सब प्रकार से अच्छी शैली के नमूने हैं। यदि फारसी भाषा का अच्छा ज्ञान हो और अबुल फजल की शैली में अच्छी पढ़ि हो

1- रिजवी, एस ए ए - मुगलवालीन भारत (द्वितीय भाग प्रथम) पृष्ठ 40
समीक्षा सम्बन्धी

2- इलियट एव हाउसन - भारत का इतिहास (षष्ठम खण्ड) पृष्ठ 4

तो उसके ग्रंथों को पढ़ने में आनन्द आता है। उसकी रचना अद्वितीय है। उसका अध्ययन तो सबत्र होता है परन्तु उसका अनुसरण न तो कोई कर सकता है और न अभी तक किसी ने किया है।”

डा० मथुरालाल शर्मा ने लिखा है कि अबुल फजल की भाषा जटिल और आडम्बरपूर्ण है। उसने अकबर की ऐसी अत्यधिक प्रशंसा की है जिसको लज्जाजनक चाटुता कहा जा सकता है। उसने अकबर के प्रत्येक काय को उचित और आवश्यक बतलाया है और उसके ब्रूरातिब्रूर कर्म पर भी अचिन्त्य का वर्णन डालने का प्रयास किया है। अकबरनामा के कितने ही पृष्ठ चाटुता से भर हुए हैं। यह सत्य है कि अकबर की कृपा से अबुल फजल इनके ऊँचे पद पर पहुँचने में सफल हुआ था। इसलिये यह चाटुता अस्वाभाविक तो नहीं कही जा सकती परन्तु इसका इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस चाटुता का सर्वांगीण उदाहरण गिम्नलिखित है।

“अकबर की आख सूय के समान है। उसका हृत्प सत्या वपण के लिये गुणों की बधशाला है। उसके ध्येय शुद्ध है। उसकी बुद्धिपूर्ण है। वह प्रतिभा मन्मथ है। उसमें अपार क्षमाशीलता है। उसका हृदय शुद्ध है। उस पर आसारि कता का कोई धब्बा नहीं है। इन असंग्य गुण न जान कसे एक व्यक्ति में एकत्र हो गये हैं। भैंरी भाषा में इतनी शक्ति नहीं है कि उसकी पर्याप्त प्रशंसा कर सकें। उसके गुणों का ज्ञान केवल फरिस्ता को ही है।”

बी० एन० लूनिया न अकबरनामा की भाषा और शैली के बारे में लिखा है कि यद्यपि अकबरनामा की भाषा अत्यन्त क्लिष्ट है तथा अलकारों के बाहुल्य से वह अत्यधिक जटिल हो गई है तथापि वह अकबर के शासनकाल का सर्वश्रेष्ठ और प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थ है। इतिहासकार के रूप में अबुल फजल की शैली कुछ मिश्रित और अत्यधिक चापलूसी से ओतप्रोत है। वह अपने सरक्षक मन्त्र, अकबर को, जिसे वह महान् मानव और देवतुल्य समझता था। अपने प्रथम, मखूब, स्तुती और चापलूसी करता है। परन्तु इससे साथ ही वह अकबर के शासनकाल के तथ्यों का उल्लेख ही नहीं करता अपितु उनमें निहित मतव्यो को भी स्पष्ट करता है। कोई विशिष्ट कदम क्यों उठाया गये, उनका भी स्पष्टीकरण वह देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने प्रसंगानुबल आवश्यक तथ्यों को नहीं छिपाया है अपितु उन पर यथेष्ट प्रकाश डाला है।

- 1- शर्मा एम० एल० (डा०) - अकबरनामा (शेख अबुल फजल कृत) अनुवादक एवं सन्शोधक भूमिका
- 2- शर्मा, एम० एल० (डा०) - अकबरनामा (शेख अबुल फजल कृत) अनुवादक एवं सन्शोधक, भूमिका
- 3- लूनिया बी० एन० - अकबर महान्, पृष्ठ 496

अनुप पञ्जल सस्वृत, हिन्दी, प्ररवी कुर्की, और फारसी भाषा का विद्वान था। उसने सस्वृत, भाषा में, लिपिवद्ध मुख्य प्रथो का फारसी भाषा में अनुवाद किया था। हिन्दुओं, के धार्मिक ग्रंथो का भी उसने गहन अध्ययन किया था तथा सिंधी और सुनी सम्प्रदाय के धार्मिक ग्रंथ उसे कण्ठस्थ याद थे।

अकबरनामा का ऐतिहासिक महत्व

अकबरनामा निम्नलिखित भागों में विभाजित है -
1. अकबर के जन्म, उसके पूर्वजों, तथा अकबर के शासनकाल के 17 वर्ष तक का इतिहास जो निम्नांकित दो खण्डों में विभाजित है -

अ अकबर का जन्म, तीमूरियों की वंशावली, बाबर तथा हुमायूँ के राज्य का विस्तार हाल।

व अकबर के सिंहासनारोहण, से लेकर 17 वें वर्ष तक के मध्य तक का हाल। यह भाग, दारवान 1004 हि० (अप्रैल 1596 ई०) अथवा अकबर के शासनकाल के 41 वें वर्ष में पूरा हुआ।

2 अकबर के शासनकाल के 17 वें वर्ष के मध्य से लेकर 16 वें वर्ष तक का उल्लेख।

अकबरनामा का तीसरा भाग भाईने अकबरी है कि तु अब यह एक पृथक् ग्रंथ के रूप में ही प्रसिद्ध है। इसमें अकबर के राज्यकाल से सम्बन्धित प्राक्कों तथा राज्य व्यवस्था सम्बन्धी श्रवण नियमों का विवरण दिया हुआ है।

वी० ए० स्मिथ ने अकबरनामा के महत्व के बारे में लिखा है, कि "अनुप पञ्जल की पुस्तक में ऐतिहासिक सामग्री उमरने वाली अनकारिक भाषा के यौक्त से उपनाई पड़ी है और प्रथकार जो अपने नायक का एक लज्जाहीन चाटुकार है कभी कभी सत्य को छुपा देता है, यहा तक कि जानबुझकर विह्वल भी कर देता है। फिर भी, गम्भीर और प्रत्यक्ष त्रुटियों के होते हुए भी, अकबरनामा अकबर के शासन के इतिहास की आधारशिला मानी जानी चाहिये। उमका तिरिब्रम निजामुद्दीन एव वत्सयूनी की प्रतिस्पर्द्धा पुस्तकों की शोधा अधिक् सही श्री विस्तारपूर्ण है और उनकी अपेक्षा अधिक बाद तक की कथा उसमें वर्णित है।

मोरने नामक इतिहासकार का यह मानना है, कि अकबरनामा अद्दु

1- रिज्वी एस एण मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग प्रथम) समौदा संस्म पृष्ठ, 40-41

फजल की चाटुकारिता प्रथम है। अतः इसे एक प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं माना जा सकता। परंतु दत्तोचर्मन ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "अकबरनामा के अध्ययन से प्रकट होगा कि यह दोषारोपण निर्मूल है और यदि हम उनके ग्रंथों की पूरव के दूसरे इतिहासों से तुलना कर तो हम पता लगेगा कि यह प्रशंसा तो करता है। परंतु ग्रन्थ भारतीय इतिहासकारों और कवियों की अपेक्षा वह कम करता है। उसमें अधिक सौंदर्य और आत्मसम्मान है। किन्ती भी भारतीय लेखक ने उस पर चाटुकारिता का आरोप नहीं लगाया है। हमको यह ध्यान रखना चाहिये कि नीतिशास्त्र के सब भारतीय ग्रन्थों में यह लिखा हुआ है कि बादशाह की सम्मति को बिना शर्त के स्वीकार करना चाहिये, चाहे वह ठीक हो या असंगत। क्योंकि पूरव की समस्त कविता में चाटुकारिता भरी हुई है जिसके सामने वतमान कृतियाँ फीकी पड जाती हैं। इस दृष्टि से अबुल फजल क्षम्य है। वह प्रशंसा इसलिये करता है कि उसे सच्चा नायक मिल गया है"।

अकबरनामा का अंग्रेजी में अनुवाद मिसेज बेवरीज ने किया है। उन्होंने इसके बारे में लिखा था कि "मैं चाहूंगा कि कोई व्यक्ति इस पुस्तक को सक्षिप्त करें। इसमें से जम पत्रिकाएँ और अकबर के वास्तविक और कल्पित पूरवों का अन्ततः, ज्योतिष और घूमकेतुओं का अणुन तथा विषयान्तर निकाल दिये जायें और बड़ी नामावलि या भी छोड दी जाये तथा शब्दाडम्बर को हटाकर भाषा सरल कर दी जायें।"

अकबरनामा के सक्षिप्त अनुवाद करने के प्रयास आरम्भ हो गये हैं। डा० मधुरालाल शर्मा ने अकबरनामा का सक्षिप्त रूप से अनुवाद किया है जो शेष अबुल फजल वृत्त अकबरनामा के नाम से प्रकाशित हुआ है। अकबरनामा के अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण एवं लच्छेनर भाषा को निकाल दिया जाये तो इसके ऐतिहासिक महत्व के बारे में कोई सन्देह नहीं रह जाता।

डा० परमात्मा शरण ने इस विषय में लिखा है कि "अकबरनामा राजनीतिक एवं प्रशासनिक सस्थाओं के बारे में आइने अकबरी से कम महत्वपूर्ण खोज नहीं है। यद्यपि साधारणतया विवरणों में अतिशयोक्ति और अबुल फजल की लच्छेनर भाषा के कारण अध्ययनवर्ता के धैर्य पर बड़ा जोर पडता है। परंतु उसके पठन में जो श्रम करना पडता है उसका प्रतिफल भी यथेष्ट मिलता है क्योंकि भाषा की गहनता के बीच शासन के काय संचालन एवं संगठन के सम्बन्ध में मूल्यवान सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। सत्य तो यह है कि अकबरनामा से ही हमें पता चलता है कि प्रशासनिक संयंत्र की विभिन्न शाखाओं का अकबर

न किस प्रकार क्रमशः विकास करके उन्हें परिपक्व बनाया गया। हमें आईन में जो कमियाँ मालूम पड़ती हैं उनकी प्रकबरनामा में बहुत कमियों में पूर्ति हो जाती है। इस प्रकार प्रकबरनामा जहाँ तक प्रशासनिक प्रणाली का सम्बन्ध है - आईन का परिशिष्ट का काम करता है।¹

अबुल फजल ने घटना लिखने में पूर्व छोटी छोटी प्रस्तावना लिखी है। इनसे हमें समकालीन राजनीतिक तथा धार्मिक विचारधारा के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। अबुल फजल ने लिखा है कि 'बुद्धि के प्रवर्धन रहस्य एक गूढ़ बातें विषयानुसार विभिन्न स्थानों पर लिख दी गई हैं। यदि उन गूढ़ बातों तथा रहस्यों को मूल इतिहास से पृथक कर दिया जाय तो बुद्धिमत्ता सम्बन्धी चुनी हुई बातों से परिपूर्ण एक पुनः दृष्टा ग्रन्थ तैयार हो जायेगा।² डा० रिजवी ने लिखा है कि "अबुल फजल स्वयं समझता था कि उसकी व्यवस्थाओं को पढ़कर लोग उसे चापसूस ही समझेंगे और इस बात के लच्छन का भी उसने प्रयत्न किया है।"³

प्रकबरनामा के अनुवाद

श्रेष्ठ अबुल फजल की प्रकबरनामा अम्बुरहीम द्वारा सम्पादित थीर एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा बिलिग्रोथिका इण्डिया सीरीज में प्रथम भाग 1877 ई०, द्वितीय भाग 1881 ई० और, तृतीय भाग 1887 ई० में प्रकाशित हो चुका है। हेनरी बेवरीज के द्वारा इसका अंग्रेजी अनुवाद किया गया था जिसे तीन भागों में एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा बिलिग्रोथिका इण्डिया सीरीज में प्रकाशित किया गया था। इसका प्रकाशन 1897-1910 ई० के बीच हुआ था। बेवरीज का अनुवाद प्रामाणिक माना जाता है तथा उसके द्वारा की गई पाद टिप्पणियाँ महत्वपूर्ण हैं।⁴

1- परमात्मा ग्रन्थ - मुगलों का प्राचीन शासन (1526-1658 ई०) पृष्ठ 505

2- रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग प्रथम) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 31

3- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग प्रथम) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 31

4- श्री वास्तव, ए एल (डा०) - प्रकबर महान् भाग 1 पृष्ठ 522

1 : 1 सैयद अहमद अहमद रिज़वी ने अकबरनामा का अनुवाद किया है । डा० मधुरालाल शर्मा ने इसका संक्षिप्त अनुवाद किया है । इतिहास एव अहमद की पुस्तक भारत का इतिहास के छोटे भाग में दिया हुआ इसका अनुवाद पठनीय है ।

1948, 1949, 1950

अयुल फजल कृत आदिने अकबरी

1948, 1949, 1950

यद्यपि यह अकबरनामा का तीसरा भाग है तथापि आज यह एक प्रथम ग्रंथ के रूप में प्रसिद्ध है । इसमें अकबर के राज्यकाल से सम्बंधित प्रायः सभी तथा राज्य व्यवस्था सम्बंधी ग्रंथ नियमों एव समस्याओं का विस्तार से वर्णन हुआ है । डॉ० ए० स्मिथ ने आदिने अकबरी का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि अकबर की शासन प्रणाली को जानने के दृष्टिकोण से यह एक अमूल्य ग्रंथ है । समकालीन सभी भारतीय तथा विदेशी इतिहासकार डॉ० ए० स्मिथ के इस मूल्यांकन से सहमत हैं । इस ग्रंथ को एशियाटिक सोसायटी बंगाल ने बिलियो यिक इण्डिया सीरीज में तीन भागों में प्रकाशित कर दिया है । इस ग्रंथ के प्रथम भाग का अग्रजो अनुवाद ब्लोक्मैन (ब्लॉकमैन) ने किया था । द्वितीय भाग का अग्रजो अनुवाद एच० एस० जैरेट के द्वारा किया गया था । मर जदुनाथ सरकार के सहायकों और टिप्पणियों सहित इसका द्वितीय संस्करण 1948 ई० में प्रकाशित हुआ था । इसके तृतीय भाग का अनुवाद भी जैरेट के द्वारा ही किया गया था । जिसे जे० ए० सरकार ने पुनः सम्पादित किया और यह 1948 ई० में प्रकाशित हुआ ।

1948, 1949, 1950

डा० श्रीवास्तव ने आदिने अकबरी के बारे में लिखा है कि 'सभी विभागों और विषयों पर अकबर के कानूनों का एक कोष सा है' और 'कुछ बाहरी बातों के सिवाय उसके साम्राज्य के मृत्यवान्तारीक से वारीक आकड़े ऐतिहासिक तथा ग्रंथ टिप्पणियों सहित प्रस्तुत करता है ।'

(43)

डा० परमात्मा शरण ने आदिने अकबरी के महत्व के बारे में लिखा है

1- श्री वास्तव, ए एल (डा०) - अकबर महान् भाग प्रथम, पृष्ठ 531

कि "उम गमय पी राजीतिम सेस्वाओ, के निम्बन्ध में आइत प्रकवरी प्राज भी हमारी अप्रथिम' धोन है । धार्दन विभिन्न विषयो जैग सामाजिक, राजनीतिक, प्रौषिक, धार्मिक आदि के सम्बन्ध में विवरणो और प्राण्डो भी दान हैं। परंतु उसमें शासन प्रणाली के वास्तविक कार्य, सचासन पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला गया है और न उसमें शासन के विभिन्न विभागो और प्राण्डो के सम्बन्ध में पर्याप्त सूचनाओं की गई है फिर भी धार्दन का गहराई का प्रयत्न करने से हमें प्राण्डोस अधिकांश बातों का अन्तर्धान मिलता है और हमारी महनुत सफल हो जाती है। कतिपय प्रकरणों पर धार्दन हम केवल सिद्धांतो एवं अधिदों का ज्ञान करानी है। वास्तविक तथ्यों की नहीं, परंतु कतिपय अन्य विषयो पर वास्तविक तथ्यों और विवरणो का भी परिचय दनी है । उदाहरण के लिये, राजतंत्र के सिद्धांत एवं कर लगाने के तैत्थ, प्रनूता, उद्भव और स्वस्वात्तया। उनके अधिकारो वृत्त-यो विभिन्न विभागों एवं प्राण्डो, जिम सत्कार के विभाजन होना चाहिये तथा उन व्यक्तियों के मुण विशेष मिहें उन विभागो एवं प्राण्डो का कायभार भी प्राण्डो-इन सत्रथ सम्बन्ध में धार्दन म देहा गहन और सूक्ष्म विवेचन किया गया है । उसमें विभिन्न जि मगर अधिकांशों के अधिकारो एवं कर्तव्यों, नियुक्तिया गया वेतन देने आदि के नियमों के सम्बन्ध में पूर्णरूपसे विवेचन किया गया है। धार्दन में दिये गये प्राण्डो की सूचियो से शासन तथा उसके अधिनस्थ प्राण्डो एवं प्राण्डो के प्राण्डो-वास्तविक सम्बन्धो पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

डॉ० ए० ए० मोरेंटे ने अपनी पुस्तक "मुस्लिम भारत की सामाजिक व्यवस्था में धार्दन प्रणाली की सामाजिकता करते हुए लिखा है कि "धार्दन प्रकवरी यद्यपि प्रकवरीनाम के ही धार्दन तथा निर्णयक प्राण्डो के रूप में है । फिर भी उसके पानों में कई नवीन एवं विशिष्ट अंग मिलते हैं जिन्का प्रकवरीनामों में प्रभाव है । जैसा कि भूमिका में कहा जा चुका है कि इस पुस्तक का उद्देश्य यही प्रतीत होता है कि वह केवल उही कार्यों का ध्यान करे जो प्रकवरी को भौतिक रूप में तथा एक शासन की महान् बनाते हैं । परंतु प्रकवरी न कुछ कार्य प्रकवरी-त्मिक नेताओं के स्तर पर भी किये उसको इस मू य में स्थान नहीं मिला है और तारीक तो यह है कि ऐसा जानबूझकर किया गया है । लेखक का स्वयंमेव कहना और उसका कथन यामपूर्ण भी है कि वह विधायियों को एक ऐसा उपहार दे रहा है जिस पर्याप्त समझ पाना कठिन है, जो है तो सरल या यो कहें कि देश में सरल है परंतु वास्तव में कठिन है ।

“यह प्रथम चिन्तने ही विरोधीताओं का सम्मिश्रण है। दस प्रायः बेउनराद में अधिवास हिन्दू सभ्यता का यणन हुआ है जिनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके पूर्वार्द्ध में अकबर के उन कार्यों का यणन है कि जिन्हें उसने समय समय पर सत्तनत के विभिन्न महकमों को अधिक काय मुचाल बनान के लिय किया है। मत यही भाग अपन उद्देश्य को पूरा करता है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो इन दोनों प्रयो (अकबरनामा तथा आईने अकबरी) को एक साथ पठकर विश्वासपूर्वक यह कह सके कि ये दोनों एक ही विद्वान के द्वारा लिखे गये हैं। आईने अकबरी में अणन की इतनी अधिक शैलियां व्यवहार में आई गई हैं कि इसे शैलीविहीन कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। गमानुपात विहिता सबन ही दृष्टिगोचर होती है। भाषा जटिल, अलकारारमक एवं पारिभाषिक शब्दावली युक्त है। जैसा कि ग्लावमैन ने ईस प्रथम की भूमिका में कहा है कि, कुछ छोटे छोटे वणन अवश्य ही, अणुल फजल के लिये मासुम होते हैं। परंतु व वणन जो, हमारे अध्ययन के लिये अधिक काम के हैं वे अवश्य ही किसी दूसरे लेखक, द्वारा लिखे गये मासुम होते हैं। सम्पूर्ण प्रथम को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि विभिन्न महकमों के अधिकारियों ने समय पर जो कुछ लिखा था, यह प्रथम उहीं लेखों का सक्लन मात्र है। जिसका सम्पादन अणुल फजल ने किया। नि सदेह कई स्थलों पर उसने स्वयं भी कुछ जोड़ तोड़ कर दिया है। वास्तव में, विभिन्न विभागों द्वारा लिय गये वणनों का कोई भी अंश अणुल फजल ने छोटा नहीं है। तत्कालीन ग्रामीण व्यवस्था के विषय में जो कुछ भी लिखा गया है, वह अवश्य ही लगान के किसी अधिकारी की देन है। जो तत्सम्बन्धी तमाम बातों की विस्तृत जानकारी रखता था तथा विभागीय असफलताओं को छिपाने पर कसर बसे हुए था। नि सदेह इन वणनों के विषय के विस्तार आदि के बारे में हम चाहें जो, कहे परंतु यह नहीं कह सकते कि लेखक या लेखकों में तत्सम्बन्धी ज्ञान का अभाव था। वे अपने विषय को पूरा कर सकते थे, बल्कि यह भी कह सकते हैं कि अपने विषयों में उनकी जानकारी इतनी अधिक थी, कि लिखते समय यह निश्चय नहीं कर सकें कि कितना लिखा जाना चाहिये”।

मोरलैण्ड का माना है कि अकबरनामा और आईने अकबरी अलग अलग प्रथम होते हुए भी एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। “कई बातें ऐसी हैं जिनका वणन आईने ने सारास रूप में कर दिया है तथा उसी बात के विस्तृत वणन के लिये अकबर नामा का हवाला दे दिया है और सचमुच अकबरनामा उस विषय की और विस्तृत जानकारी देता है। परंतु कुछ बातें ऐसी भी हैं जो कि अकबरनामा में

पूरे विस्तार के साथ बरखन में घाई है, पर तु घाईने में उनका कुछ भी जिद्द नहीं किया गया है। अत इन्में से किसी एक ग्रन्थ में उस समय का समुचित प्रव्ययन तब तक पूरा नहीं होता जब तक कि दूसरे को न पठ लिया जाये" ।

सलेप में, घाईने अकबरी से अकबर के समय की सामाजिक, धार्मिक, प्रशासनिक सस्याओं एव धार्मिक स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

1- मीरलैण्ड, इन्सू एव - मुस्लिम भारत की प्राचीण व्यवस्था, पृष्ठ 110



8 | **अबदुल कादिर बदायूनी :**
मुत्तखाब-उत-तवारीख

011 अबदुल कादिर बदायूनी ने मुत्तखाब उत-तवारीख नामक ग्रंथ लिखा जो हिन्दुस्तान में तारीख ग बदायूनी के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह ग्रंथ भी तीन भागों में एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा विलमोयिका इण्डिका सीरोज में प्रकाशित हो चुका है। इसके प्रथम भाग में दिल्ली के सुलतानों का इतिहास दिया हुआ है। यह बदायूनी के राज्यकाल के अर्त्त तक है। द्वितीय भाग में अकबर के शासनकाल का 1595 ई० तक का इतिहास है। तृतीय भाग में मुस्लिम सत्तों की जीवनियों का विवरण दिया हुआ है। इसके प्रथम भाग का अंग्रेजी अनुवाद लेफिटनेंट बनल रीकिंग ने किया था। द्वितीय भाग का अनुवाद डब्ल्यू एच ला के द्वारा किया गया था। इन दोनों भागों के अनुवाद में त्रुटियाँ रह गई हैं। अतः इसमें सशोधन किया जाना चाहिये। तृतीय भाग का अनुवाद सर बूल्जले हेग के द्वारा किया गया था। यह अनुवाद बहुत अच्छा हुआ है।¹

बदायूनी का संक्षिप्त जीवन परिचय

डा० रिजवी ने लिखा है कि 'अबुल कादिर कादिरि बिन मुलुक गह्रिन हामिद बदायूनी का जन्म 12 रबी उस्सनी 947 हि० (21 अगस्त, 1540 ई०) को टोडा अथवा टोडा भीम (जूयपुर) में हुआ था। उसके जन्म के कुछ दिनों बाद ही उसे बसावर जहाँ उसके अग्र परिवार वाले थे पहुँचा दिया गया। 12 वर्ष की अवस्था में उसका पिता उसे सम्भल में शख हातिम सम्भली से शिक्षा दिलाने के लिये ले गया। 966 हि० (1558-59 ई०) में वह बसावर से भागकर पहुँचा और वहाँ कुछ समय तक उसने शेख मुबारक नागौरी से अबुल फजल तथा फौजी के साथ साथ शिक्षा प्राप्त की। 969 हि० (1562 ई०) में उसके पिता की आगरा में मृत्यु हो गई और वह बदायूँ चला गया। 973 हि० (1566 ई०) में वह बदायूँ से पटियाला के जागीरदार हुसैन खाँ की सेवा में चला गया और लगभग 9 वर्ष तक उसकी सेवा में रहा। हुसैन खाँ के साथ साथ ही वह सख्तनूर तथा बानस गीला भी पहुँचा।

1- डा० श्रीवास्तव ए एल - अकबर महान् (भाग प्रथम) पृष्ठ 525

1- 981 हि० (1574 ई०) के घात में यह हुसैन खां से पृथक् होकर बदायूँ से होता हुआ आगरा पहुँचा और जलाल खाँ बुरची तथा हकीम एनुलमूलक की सहायता से अकबर के दरबार में उपस्थित हुआ। 982 हि० (1574-75 ई०) में वह इमाम और 983 हि० (1575-76 ई०) में सात इमानों में से बुद्ध के दिन नमाज पढ़ाने के लिये इमाम नियुक्त हुआ। उसी वर्ष उसे मन्दा मन्दा के रूप में बसावर में एक हजार बीघा भूमि प्रदान हुई किन्तु 997 हि० (1588-89 ई०) में उसे बसावर के स्वाम पर बदायूँ में भूमि दे दी गई। 982 हि० (1574 ई०) से अफगनी मृत्यु तक यह अकबर के दरबार के साहित्यिक कार्यों में मुख्य भाग लेता रहा। कभी उसे सस्त्र के योद्धा के अनुवाद का काम सौंपा जाता, कभी इतिहास की रचना और कभी कोई अन्य साहित्यिक कार्य। कभी कभी उसे ऐसे अनुवाद के काम भी सौंपे गये जिनमें उस कोई रुचि नहीं थी, किन्तु फिर भी शासन के आदेशानुसार इस उन कार्यों को सम्पन्न करना पड़ता था।

बदायूँनी संगीतप्रिय था, वीणा, सखी तरह बजा लेता था और मधुर कण्ठ से गाता भी था। पारसी के शेर और अरबी की आयते वह बहुत ही मधुरता से पढ़ता गाता था। मुख्यतः इसी गुण से प्रसन्न होकर, अकबर ने उसे अफगने दरबार के मान इमामों में से एक इमाम नियुक्त किया था और उसे "इमाम अकबरशाह" कहा जाता था।²

बदायूँनी विद्वान होने के साथ साथ कट्टर इस्लामी सैनिक भी था। हल्दी घाटी के युद्ध के समय वह मुगल सेना में उपस्थित था। उसने युद्ध का आँसो देखा वरुण लिखा है। "जब राणा युद्ध भूमि से हट गया था और युद्ध क्षणभंग समाप्ति पर आ गया था तब बदायूँनी ने इस्लामी भावना से प्रेरित होकर राणा क्षेत्र में मित्र सैन्य राजपूतों पर समान रूप से निगाने लगाये। उसने हिन्दुओं के रूप में अरबी शब्दों का प्रयत्न किया। उसकी भावना थी कि इस प्रकार उसने काफ़िरों के विरुद्ध युद्ध करने, मानकर इस्लाम की सेवा की और राजा का पुण्य अर्जित किया। हल्दी घाटी के युद्ध में राणा प्रताप का एक प्रसिद्ध हाथी रामप्रसाद मुगलों के हाथ लग गया था। हल्दी घाटी की यह उल्लेखनीय वृत्त थी। बदायूँनी यह हाथी लेकर पतेहपुर सीकरी पहुँचा और मार्ग में विजय की डीक हाकता रहा। जगने यह हाथी अकबर के सामुख पंगविया। बदायूँनी ने हाथी का नाम 'पीर प्रसाद' रखा क्योंकि यह सब पीर की कृपा से हुआ था।

1- रिजवी, एस ए ए - मुगलकासीन भारत (बदायूँ भाग दो) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 22-23

2- लूनिया, बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 500

अकबर ने प्रसन्न होकर बदायूनी को मुठ्ठी भर (अशफिया पुरस्कार में दी जो गिनने पर बाद में 96 निकली)।

बदायूनी की रचनायें

मुतखाब-उत तवारीख के अतिरिक्त बदायूनी ने गिम्नसिलित महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की 2

- (1) कित्ताबुल अहादीस - इसमें 40 हदीसे हैं जिनमें जिहाद की विशेषता बताई गई है। अब इस पुस्तक का कोई पता नहीं।
- (2) नामए खिरद अफजा यह सिंहासन बत्तीसी नामक संस्कृत ग्रन्थ का भाषा-तर है। यद्यपि सिंहासन बत्तीसी के अनेकों अनुवाद उपलब्ध हैं किंतु अब्दुल कादिर बदायूनी का कोई अनुवाद प्राप्य नहीं।
- (3) रज्मनामा - यह महोभोरत का फारसी अनुवाद मुख्य रूप से नवीब खा के सुपुत्र था, किंतु मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी को भी इस कार्य में सहायता करनी पड़ी। बहुत से पण्डित भी अनुवाद में सहायता करने के लिये नियुक्त हुए थे।
- (4) रामायण का अनुवाद - अकबर के आदेशानुसार मुल्ला कादिर बदायूनी ने 992 हि० (1584 ई०) में कुछ पण्डितों की सहायता से रामायण का अनुवाद प्रारम्भ किया और उसके महत्वपूर्ण अंशों का अनुवाद लगभग चार वर्ष में पूरा करके 1589 ई० में अकबर की सेवा में समर्पित किया।
- (5) तारीखे अल हो - इसकी रचना में भी अपने महत्वपूर्ण भाग लिया।
- (6) नजोतु रशीद - इस ग्रन्थ में इतिहास से सम्बंधित कहानियाँ हैं और सुनी धर्म की समस्याओं का बखान किया गया है।
- (7) तरगुमए तारीखे कश्मीर-1590 ई० में उसने मुल्ला मुहम्मदशाह शाहाबादी द्वारा अनूदित कश्मीर के इतिहास का सम्भवतः राजतरगिणी का संक्षिप्त फारसी अनुवाद तैयार किया। इसकी भी किसी प्रति का अभी तक कोई पता नहीं चल सका है।

1- लूनिया, बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 501

2- रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग दो) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 23-24

- (8) तरजुए मौजमुल बुन्दान- दस या बारह ईरानी तथा हिन्दुस्तानी विद्वानों को याकूत के इस महत्वपूर्ण ग्रंथ के फारसी अनुवाद का आदेश हुआ जो हिस्सा बदायूनी को सुपुद हुआ था, उसे उसने एन महिने में पूरा कर लिया। इस अनुवाद का अब कोई पता नहीं।
- (9) इम्तखाब जामए रशीदी, अकबर ने कुछ विद्वानों को जामए रशीदी का अरबी से फारसी भाषा में अनुवाद कर उसका संक्षिप्त संस्करण तैयार करने का आदेश दिया। उस समय, उसने बदायूनी को भी इस कार्य में सहयोग करने के लिए कहा था।
- (10) बहखल अममार - कश्मीर के मुलतान जैनुल आबदीन के आदेशानुसार संस्कृत की कुछ कहानियों का एक संग्रह तैयार किया गया था। बहखल अममार उही कहानियों का फारसी संस्करण है। बदायूनी को इसका नया संस्करण तैयार करने का आदेश हुआ था। इस ग्रंथ का भी अब तक कोई पता नहीं है।

मुत्खाब-उत-तवारीख का ऐतिहासिक स्रोत के रूप में महत्व

बदायूनी की सबसे महत्वपूर्ण कृति मुत्खाब उन तवारीख है। यह तीन भागों में विभाजित है -

- (1) प्रथम भाग में मुयुस्तगीन (997-998 ई०) से हुमायूँ की मृत्यु तक का इतिहास है।
- (2) द्वितीय भाग में अकबर के राज्यकाल के 1595-96 ई० तक का इतिहास है एवं
- (3) तृतीय भाग में, समकालीन सूफियों, विद्वानों, हकीमों, तथा कवियों की संक्षिप्त जीवनियाँ दी हुई हैं।

बदायूनी रुढ़ीवादी एवं कट्टर सुन्नी मुसलमान था जिसके धार्मिक विचार काफी सखीए थे। इसलिये उसने अकबर के उदार धार्मिक विचारों का सदैव विरोध किया और उसकी धार्मिक नीति की कट्टर आलोचना की। बदायूनी के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से हमें उसकी कृति में देखने को मिलता है।

बी एन लूनिया ने लिखा है कि 'बदायूनी ने अकबर के शासन की प्रशंसा से निन्दा की है। उसने अपनी कलम का दुरुपयोग किया है। इस ग्रंथ में उसने अंध और सहिष्णुता के विचार वालों पर खुलकर डब लगाने में

कोई बखर नहीं रही। अकबर और उसने जंग विचारवालों पर मुल्ता न बेनी से बलम उठाई थी। यह ग्रंथ मुल्ता बदायूनी न 23 फरवरी 1596 ई० को समाप्त कर दिया। अर इसम अकबर और उसने शासन की बटुनम आलोचना होने के कारण मुल्ता को इनके नष्ट हो जान का भय था इनलिय अकबर के शासनकाल म इसको छिपाता रहा और ग्रंथ की सुरक्षित रगकर अगली पीढ़ी तक पहुंचाने की व्यवस्था की। जब जहागीर को इन ग्रंथ के विषय में मालुम हुआ तो उसने इसे नष्ट करने का प्रयास किया परंतु तब तक इन ग्रंथ की अनेक प्रतिया बन चुकी थी। कहा जाता है कि पुस्तक को नष्ट करने के लिये जहागीर न बदायूनी के उत्तराधिकारी पुत्रों को यानी अनाकर दरगार म बुलाया और मुन्तखाब उत तवारीख की प्रतिया जप्त करने के लिए मांगी। उन्होंने उत्तर दिया "हम तो उम समय बच्चे थे, हमे इनकी खबर नहीं थी। उन्होंने जमानत दी कि यदि हमारे पास म यह पुस्तक निवले जाये तो चाहे जो दण्ड दिया जाये। पुस्तक विक्रेताओं से भी यह पुस्तक निवले तो चाहे जो दण्ड दिया जाय। पुस्तक विक्रेताओं से भी मुचलके लिये गये कि वे इतिहास के इस ग्रंथ का श्रय विक्रय नहीं करें। परंतु इतिहासकार खाफी खा के अनुमार ममस्त बडाई के बावजूब भी भी मुन्तखाब उत तवारीख ग्रंथ उस समय सबसे अधिक निवले वाला ग्रंथ था।"

सभी इतिहासकार, इस बात पर सहमत हैं कि बदायूनी न अकबर की उदार और धार्मिक सहिष्णुता की नीति का विरोध किया था। इस ग्रंथ का विशेष महत्व इसलिये है कि जहा एक और अबुल फजल ने अकबर के शासनकाल का बहाने आपलूसीपूर्ण तरीके से किया है, वहा बदायूनी हमारे सामने अकबर के शासन का दूसरा पहलू प्रस्तुत करता है। वी० ए० स्मिथ न लिखा है कि 'एक धर्मांध मुनी के दृष्टिकोण के पूव प्रकाश में से लिये जाने के कारण यह पुस्तक सिद्धांत शिथिल अबुल फजल की भाडस्वरपूण प्रशस्ति के परीक्षण क रूप म अधिक महत्व रखती है। यह अकार की धम सम्बन्धी धारणाओं के विकास की जानकारी देती है। जो अथ फारसी इतिहासों में उपनबन नहीं है, किंतु यह जैसुइट लेखकों के साक्षर से सामान्यत सहमत है। बदायूनी ने अपन ग्रंथ में से तिथिया सही नहीं दी है इनलिये उसका घटनाक्रम भी दोषपूर्ण है।

भाषा और शैली के बारे में बदायूनी न स्वयं लिखा है कि 'मेरी शैली में बड़े श्लेष से काम लिया गया है और मैंने लच्छेदार और अनकृत भाषा का उपयोग नहीं किया है।' बदायूनी ने आगे लिखा है कि इस इतिहास का उद्देश्य है कि बड़े बड़े मुसलमान सुलतानों के कार्यों को लिखित रूप दिया जाये

1- सूत्रिया बी एन - अकबर महान् पृष्ठ, 503 -

2- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (पहलम खण्ड) पृष्ठ 390

श्रीर मेरा नाम अगली पीढ़ियों तक चले । मेरा यह इरादा केवल सत्य का उल्लेख करना है, इसलिये यदि मैं कभी कभी छोटी और तुच्छ बातों के उल्लेख पर उतर जाऊ तो ईश्वर मुझे क्षमा करें । "

इस सम्बन्ध में इलियट एव डाउसन ने लिखा है कि ' यह उन थोड़ी सी पुस्तकों में से हैं जिसका अनुवाद करने का परीश्रम साधन होगा परन्तु इसके लिये फारसी भाषा का अधिक अच्छा ज्ञान होना चाहिये और समकालीन इतिहासकारों का भी अच्छा परिचय होना, आवश्यक है । अथ अधिकांश हिन्दुस्तानी इतिहासों के लिये फारसी के अपेक्षाकृत कम ज्ञान से भी काम चल सकता है । इसका कारण यह है कि लेखक असाधारण शब्दों का ही प्रयोग नहीं करता है वह धार्मिक विवाद का घण्टन करता है, अपशब्दों का प्रयोग करता है, स्तुति करता है, स्वप्न की सी बातें करता है जीवा चरित्र लिखता है, और व्यक्तिगत तथा पारिवारिक इतिहास की छोटी छोटी बातें लिखता है । जिससे वनात की एकता भंग हो जाती है और यह कहना कठिन हो जाता है कि सम्बन्ध की कड़ियों का कैसे मिलाया जाय । ' तो भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि विषयान्तर इस पुस्तक के बड़े ही रोचक भाग है । अथ चाटुकार इतिहास लेखक अपने भावों को कभी प्रकट करते हो । विशेषत ऐसी बात तो वे लिखते ही नहीं जो गसको के कान को बुरी लगे । वे अपनी भूलों और चरित्र के दोषों को भी स्वीकार नहीं करते । परन्तु अबुल क़ादिर इन बातों का आत्मसंतोष और उपेक्षा के साथ उल्लेख करता है । वह समसामयिक इतिहास को खूब जानता है और उसकी यह धारणा है ' कि जिन विषयों से उसे इतना अच्छा परिचय है, उनको उसके पाठक भी जानते होंगे । इसलिये वह कई घटनाओं को छोड़ देता है या उनका ऐसा घुंघला सा उल्लेख कर देता है कि अनुवाक को अपने ही अनुमान और ज्ञान से उन अभावों की पूर्ति करनी पड़ती है । ' 1

अबुल फजल और बदायूनी की तुलना

अबुल फजल और बदायूनी दोनों ही समकालीन विद्वान, लेखक और इतिहासकार थे । दोनों ही अकबर के प्रमुख दरबारी, सामन्त, और मनसबदार थे । अबुल फजल न 20 के मनसबदार से प्रारम्भ किया था और अपनी विद्वाना, प्रतिभा और योग्यता से 5000 के मनसब तक पहुँच गया था । वह प्रशासन में भी ऊँचे पद पर रहा और दक्षिण भारत में विजय के लिये प्रायोजित सैनिक अभियानों में उसने बड़ा महत्वपूर्ण योग दिया । उसने अपनी सैन्य सगठन और सैन्य व्यवस्था को करने की प्रतिभा का भी परिचय दिया । पर बदायूनी में ऐसी

कोई सैनिक प्रतिभा नहीं थी। बदायूनी ने भी गाही सेवा 20 के मासत्र ने प्रारम्भ की और शाही सेवा में फिर 22 वग तक रहने के बावजूद भी यह 20 का मासबदार ही बना रहा।¹

दोनों में मुख्य चारित्रिक अंतर यह था कि अबुल फजल उदार और स्वतंत्र विचारक था तथा अकबर के प्रगतिशील दृष्टिकोण का समर्थक था। वहाँ बदायूनी धर्मार्थ गुनी था। जिसमें इर्ष्याद्वेष, घसातोप और तीव्र निला का भाव भरे थे और जिसका दृष्टिकोण बड़ा सखीण और अनुहार था। वह अकबर के प्रगतिशील विचारों का आलोचक बना रहा और इमीनिय कोई उपनि नहीं कर सका।²

अबुल फजल और बदायूनी दोनों न ही फारसी में रचनायें लिखी हैं। अबुल फजल के ऐतिहासिक ग्रंथ अकबरनामा एवं छान्ने अकबरी "हूँ और बायूनी का "मुतखाब उत-तवारीख"। यद्यपि दोनों न ग्रंथ ग्रंथ भी लिखे हैं पर अबुल फजल की तुलना में बदायूनी की रचनायें कम हैं। दोनों ने मस्जून के कुछ ग्रंथों का अनुवाद फारसी भाषा में किया है। अबुल फजल ने सस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ "पंचतन्त्र" का अनुवाद फारसी भाषा में 'अर्यारे गानिग' के नाम से किया और मुल्ला बदायूनी ने "सिंहासनवतीसी" का अनुवाद किया। उसने महाभारत के भिन्न भिन्न भागों का अनुवाद फारसी में 'रजमनामा' नामक ग्रंथ के रूप में किया। रामायण का भी उसने अनुवाद किया। यद्यपि अबुल फजल और बदायूनी अपने युग के प्रसिद्ध इतिहासकार थे परंतु दोनों की भाषा, शैली और विचार धाराओं में बड़ा अंतर है। यद्यपि दोनों ने अपने युग की राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया है। परंतु दोनों के मत एवं दूसरे के विपरीत हैं। वर्णन शैली में अबुल फजल अधिक श्रेष्ठ है। उसकी शैली अत्यंत रोचक शैली है। उपमा और रूपक अलंकार कम प्रयुक्त किये गये हैं। पर जहाँ प्रयुक्त किये गये हैं वहाँ अत्यंत स्वाभाविक और सुन्दरता के साथ अबुल फजल की शैली के विषय में अबुल्ला उजदेग कहा करता था कि 'मैं अकबर की तलवार से इतना नहीं डरता जितना अबुल फजल की कलम से डरता हूँ।'³

1- अबुल फजल ने अनेक स्थलों पर अतिशयोक्तिपूर्ण चापलूसी की भावना से वर्णन किया है। उसने अपने उदार सरक्षक सम्राट अकबर की कीर्तनावश्यक रूप से प्रशंसा और स्तुति की है। बदायूनी की शैली में इन बातों का

1- लूनिया की एन "अकबर महान्, पृष्ठ 500"

2- प्रतापसिंह - मुगलकालीन भारत, पृष्ठ 589

3- लूनिया की एन अकबर महान्, पृष्ठ 504

पूण अभाव है। यदायूनी ने कट्टर अनुदार मुनी मुमनमान होने से अकबर के उगारतापूण विवासो, धारणाओ, प्रगतिगील नीतियो पर बडे कटाक्ष किये हैं। उनमे अकबर के शासनकाल के अधकारमय पक्ष का बखान किया है पर अबुल फजल ने प्रकाशवाने पक्ष का हाल लिखा है। यदायूनी मुगलजीतिक बुद्धिचातुर्य और ऐतिहासिक दूरदर्शिता की बनी थी। उममे इतिहास की विगनेपण की प्रतिभा, निष्पक्ष निष्पयुक्त बखान करने की शक्ति तथा सतुलित विवेचना और प्रालोचना का अभाव था। उसमे पटनाओ का समय और सध्यपूण बखान करने की क्षमता नहीं थी।¹

यद्यपि अबुल फजल ने अकबर का बखान चापसूचीपूवक किया है तथापि यदायूनी ने भी कोई कम चापसूची नहीं की है। इस बात की पुष्टि डा० रिजवी के इस बखान से होती है। "अबुल फजल तथा फजी एव अन्य लोगों को जो उनति अकबर के दरबार में प्राप्त हुई उमके कारण यदायूनी दरबार तथा दरबार के वातावरण से पूर्णरूप से रुष्ट हो गया। किंतु उनका मेल समकालीन प्रालिमी से भी न हो सका। उमने अबुल फजल को चापसूची बताकर उमकी घोर निन्दा की है। किंतु उसने स्वयं दरबार में चापसूची करने में कोई कसर न उठा रखी थी।"

इतिहासकार के रूप में डा० रिजवी ने यदायूनी का मूल्यांकन निम्न ढंग में किया है। "यद्यपि उमने इस बात का दावा किया है कि जो कुछ उसने लिखा है, वह सच सच लिखा है। किंतु बहुत सी बातें जो एक ही स्थान पर लिखी हैं उनका स्वच्छन्द उसी की रचना के अर्थ अंशों से हो जाता है। यदि उसने धार्मिक अधिनियमों को किसी क्रम से लिख दिया होता तो अकबर के धार्मिक विचारों विकास एवं धार्मिक नीति का बड़ा अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता और उमके इतिहास का महत्व बहुत ही बढ़ जाता, किंतु उसका मूल उद्देश्य इस्लाम के कल्पित हास का चित्र प्रस्तुत करना था। उसके इतिहास की इस कारण उपेक्षा सम्भव है कि उसमे मुनी धर्म के कट्टर अनुयाइयो का दृष्टिकोण भली भाँति प्रस्तुत किया गया है। किंतु केवल उसी के इतिहास अथवा उसी के जैसा दृष्टि रखने वालों की रचना के आधार पर, चाहे वह जैमुद्द पादरी हो, अथवा हजरत मुहम्मद अल्फेतानी शेर अहमद सरहिदी, अकबर के विषय में घटनाओं का निष्पक्ष भाव से विश्लेषण किये बिना कोई धारणा बना लेना उचित नहीं। इसमें सन्देह नहीं कि उसने रचना शैली में बड़ी ही कुशलता प्राप्त की थी। उमने प्रायः घोड़े के गालों में ही वह प्रभाव उत्पन्न कर दिया है जो सम्भवतः सम्ये चौड़े विवरण से नहीं हो सकता था।"

1- लूनिया, बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 504 505

मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह : तारीख-ए-फरिश्ता

मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह इतिहास में फरिश्ता के नाम से प्रसिद्ध है। उसके पिता का नाम गुलाम अली हिन्दू शाह था। उसने युवावस्था में अहमदनगर के सुलतान मूरतजा निजामशाह के दरबार में नौकरी कर ली। यही उसने यह निश्चय किया कि भारतवर्ष के मुस्लिम बादशाहों तथा सूफी सन्तों का इतिहास लिखा जाये। परन्तु आवश्यक ग्रन्थ प्राप्त नहीं होने के कारण वह 28 दिसम्बर 1589 ई० को बीजापुर के सुलतान के दरबार में चला गया।

जहांगीर के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में इब्राहीम आदिलशाह ने फरिश्ता की किसी काय को पूरा करने के लिये लाहौर जाने का आदेश दिया। 1614 ई० में वह असीरगढ़ के किले में भी रहा। सम्भवतः 1623-24 ई० के पश्चात् ही उसकी मृत्यु हो गई।

इब्राहीम आदिलशाह ने फरिश्ता को इतिहास लिखने की प्रेरणा दी। फरिश्ता ने अपनी पुस्तक 'तारीख ए फरिश्ता' को 1606-7 ई० में इब्राहीम आदिलशाह को समर्पित किया।¹

डा० रिजवी ने लिखा है कि यह इतिहास एक प्रस्तावना के अतिरिक्त 12 खण्डों में विभाजित है।²

इस इतिहास की प्रस्तावना में मुसलमानों के राज्य के पूर्व के हिन्दू राजाओं का इतिहास मिलता है।

इस कृति के प्रथम भाग में लाहौर के गजनवियों का इतिहास है।

दूसरे खण्ड में देहली के सुलतानों का इतिहास है।

तीसरे खण्ड में दक्षिण के सुलतानों का इतिहास छह भागों में विभाजित उपलब्ध होता है।

1- रिजवी, एस ए ए - उत्तरतमूरकालीन भारत भाग दो पृष्ठ 6

2- रिजवी, एस ए ए - उत्तरतमूरकालीन भारत भाग दो पृष्ठ 6

- (1) बहमनी (2) भास्निगाही (3) निजामगाही (4) हुतुयगाही
(5) एनागाही (6) बरोदगाही ।

पंचे खण्ड म गुजरात का इतिहास है ।

पाचवे खण्ड म मालवा का इतिहास है ।

छठे खण्ड में बुरहानपुर का इतिहास है ।

सातवें भाग में बगाल एव जौनपुर के शर्की मुसलमानों का इतिहास है ।

आठवें भाग में सिंध, पटना तथा मुल्तान का इतिहास है ।

नवें भाग में सिंध के जनोशरों का बणन किया गया है ।

दसवें भाग में कश्मीर का इतिहास है ।

ग्यारहवें भाग में मालाबार का बणन है ।

बारहवें भाग म हिंदुस्तान के सूफी सत तथा हिंदुस्तान का सविस्त विवरण मिलता है ।

फरिगता ने लगभग 35 ऐतिहासिक ग्रंथों को आधार बनाकर अपनी इस महत्वपूर्ण कृति की रचना की । उसमें कुछ ऐसे ग्रंथों का भी प्रयोजन किया जिनका उपयोग तबकाली प्रकृति का लेखक निजामुद्दीन नहीं कर सका था । ये ग्रंथ निम्नलिखित हैं -

- (1) बहमननामा (2) तारीखे बगला (3) तारीखे धलफी (4) तारीखे बिना-
बिती (5) नसखे हुतुबी एव (6) तुङ्गस्तु इसलातीन बहमनी आदि ।

फरिगता का ग्रंथ तारीखे फरिगता जिसे गुलशने इब्राहीमी भी कहते हैं । इसमें भी तबकाली प्रकृति की भांति लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष का इतिहास है । डा० रिजवी ने लिखा है कि "फरिगता के इस इतिहास को मध्यकालीन भारतीय इतिहास में जो प्रसिद्धि प्राप्त हुई है वह किसी ग्रंथ इतिहास को नहीं मिल सकती है और बहुत समय तक तो गोप सम्बन्धी कारणों से केवल इसी ग्रंथ का प्रयोग होता रहा ।"

तबकाली नासिरी की भांति इसमें भी शेरशाह का इतिहास अधिवाशन तारीखे शेरशाही से लिया गया है किन्तु विशेषत यह है कि फरिगता ने तिघियों का बणन भी किया है । उसने रोहतास दुग का इसी समय स्वयं निरिखाण किया था और इस दुग का जो विवरण उसने दिया है, वह ग्रंथ किसी ग्रंथ में नहीं मिलता ।²

1- रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत (द्वितीय भाग दो) पृष्ठ

2- निगम, एस बी पी (डा०) - मरवज का इतिहास, पृष्ठ 5

(दक्षिण के मुलतानो के इतिहास के सम्बन्ध मे उनकी रचना को विशेष महत्व प्राप्त है ।

ग्रन्थ के दोष

- (1) लेखक ने ब्रम्बद्ध रूप से घटनाओं का वर्णन नहीं किया है ।
- (2) कई घटनाओं की तिथिया गलत दी हुई हैं ।
- (3) विवादास्पद विषयों पर उसने अपना मत व्यक्त नहीं किया है ।
- (4) लेखक ने अपनी रचना मे विश्लेषणात्मक क्षमता का उपयोग नहीं किया है ।
हो सकता है कि उसमे आलोचनात्मक दृष्टि से विश्लेषण करने की क्षमता कम हो ।

मूल्यांकन

इन दोषों के बावजूद भी यह स्वीकार करना पडेगा कि फरिश्ता का ग्रन्थ अपनी साधारण शैली के लिये प्रसिद्ध है एवं दक्षिण के मुलतानो के इतिहास को जानने की दृष्टि से काफी अमूल्य ग्रन्थ समझा जाता है ।

तुजुक ए-जहागीरी "तारीख ए-सलीमशाही" 'कारनामा-ए-जहागीरी' 'इक्बालनामा' "जहागीरनामा" 'बाक़ीनाते जहागीरी' आदि कई नामों से भी प्रसिद्ध है। तुजुक ए जहागीरी की रचना स्वयं जहागीर न की थी। उसने इस कृति में अपना इतिहास लिखा है। इस ग्रंथ में जहागीर के सिंहासनारोहण से लेकर उसके शासनकाल के 17 वें वर्ष तक का इतिहास है।

इलियट एव डाउसन ने भारत का इतिहास (पृष्ठम खण्ड) के पृष्ठ 207 से 292 तक इसका अनुवाद किया है¹। इस ग्रंथ का नाम उन्होंने "बाक़ियात ए जहागीरी" लिखा है। डाउसन ने लिखा है कि यह दुर्लभ ग्रंथ है। हिन्दुस्तान में भी लोगों को इसका बहुत कम पता है। इसमें उन बातों का सरल और कुशल वर्णन है जिनको लेखक महत्वपूर्ण समझता है। पूरे ग्रंथ को पढ़ने पर यह रोचक प्रतीत होता है। इसका रचियता जहागीर को मान लिया जाये तो पता चलता है कि वह साधारण योग्यता का आदमी नहीं था। वह अपनी कमजोरियों और दोषों को स्पष्ट स्वीकार करता था। ग्रंथ को पढ़ने से उसके चरित्र और उसकी बुद्धि के बारे में अच्छे विचार चलते हैं।²

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से तुजुक ए जहागीरी एक अमूल्य ग्रंथ है क्योंकि इसमें हम जहागीर के प्रशासन के विकास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। अपने राज्य के 17 वें वर्ष तक स्वयं सम्राट ने ही इसे लेखनीबद्ध किया और स्वास्थ्य विगड़ जाने के कारण अठारहवें और उनतीसवें वर्ष का विवरण मोतमिद खा से लिखवाया। आत्मकथा से अपने पिता के जीवनकाल में शाहजहाँ के उरदान का अखण्डित व्यौरा उपलब्ध है।²

1772

जहागीर ने 1605 ई० से लेकर 1627 ई० तक शासन किया। शासक बनते ही उमर खेमरो के विद्रोह का दमन किया। इसके पश्चात् उसने मेवाड़ पर विजय प्राप्त की। जहागीर ने स्वयं स्वीकार किया है कि मेवाड़ पर विजय उसके

1- गर्मा, एस आर - भारत में मुगल साम्राज्य, पृष्ठ 289-90 से उद्धृत -
2- सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहाँ पृष्ठ 8 (प्रवेश) - ।

सिये बड़े गौरव की बात थी। उसका अर्थ मुगल राजपूत सम्बन्धों पर भी प्रकाश डालता है। जहागीर ने अहमदनगर, बागडा, तथा बाघार के विरुद्ध सैनिक अभियान किये।

1. जहागीर ने 1611 ई० में ईरानी विषया महारनिगा के साथ विवाह कर लिया जो मसिवा बनने पर नूरजहा के नाम से प्रसिद्ध हुई। नूरजहा ने शासन तंत्र को चलाने के लिये एक गुट का निर्माण किया। 1611-1622 ई० तक शासन का संचालन उसने किया। इन वर्षों में राज्य की वास्तविक शक्ति नूरजहा के हाथ में केन्द्रित थी। जहागीर नाम मात्र का शासक बनकर रह गया था। मध्यकालीन इतिहास में नूरजहा के समान अपने प्रेम के बन्धुनूत शासन तंत्र पर नियंत्रण स्थापित करने का अर्थ कोई उदाहरण नहीं मिलता।

जहागीर पर नूरजहा के प्रभाव को हम दो भागों में बांट सकते हैं प्रथम काल (1611-22) - इस काल में नूरजहा के माता पिता जीवित थे। वे उसकी महत्वाकांक्षाओं पर नियंत्रण रखते थे।

द्वितीय काल (1622-27 ई०) इस काल में राज्य की वास्तविक शक्ति नूरजहा के हाथ में थी। जहागीर नाम मात्र का शासक था। सम्पूर्ण शासन की गतिविधियों का संचालन दलबन्दी पर आधारित था।

खुर्रम के नूरजहा की चालों से तंग आकर विद्रोह कर दिया था। जब राजकुमार विद्रोही हो गया तब उसके प्रति जहागीर का रव्य बदल गया और उसने शाहजहा को भोजपूर्ण उपाधियों के उजाय 'वेदीरत' या भाग्यहीन कहना शुरू कर दिया।

इसी तरह नूरजहा ने महाबत खा की भी विद्रोह करने के लिये बाध्य कर दिया था। इन विद्रोहों ने साम्राज्य में गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न कर दी थी।

वद्यपि जहागीर शासक की मान्यता और धार में डूबा रहता था तथापि उसकी धार्मिक उदारता की नीति 'यायप्रियता एवं बुद्धि की क्षमता की हम प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। जहागीर के शासनकाल में उद्योग एवं व्यापार का बहुत अधिक विकास हुआ। चित्रकला के विकास के दृष्टिकोण से उसका युग मुगल साम्राज्य का स्वर्ण युग माना जाता था। साहित्य एवं कला के क्षेत्र में भी असाधारण विकास हुआ। साम्राज्य में शांति और समृद्धि थी।

मुहम्मदशाह के शासनकाल में तुजुब ए-जहागीरी के सम्पादन का कार्य मुहम्मदादी न किया उस इस्म जहागीर के शासन के अन्तिम वर्षों का इतिहास और जोड़ दिया । अब इसमें जहागीर का पूरा इतिहास प्राप्त है। तुजुब ए-जहागीरी को सब प्रथम 1864 ई० में सैयद अहमद खां ने मूलरूप में प्रकाशित किया था ।

तुजुब ए-जहागीरी से जहागीर के समय के विद्रोहों, युद्धों एवं विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है । शाही नियमों का भी इसमें विवरण दिया हुआ है । उसके समय में नियुक्त मुख्य-मुख्य सामंतों और अधिकारियों का बणन किया गया है । सम्राट द्वारा की गई महत्वपूर्ण नियुक्तियों, पदोन्नतियों एवं पदच्युतियों का बणन भी इसमें उपलब्ध है ।

जहागीर की यह डायरी उसके शासन तथा व्यक्तित्व को जानने का प्रामाणिक स्रोत है । इससे सम्राट के निजी जीवन की घटनाओं के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है । परंतु निम्न घटनाओं का बणन जहागीर ने अपनी कृति में नहीं किया है - (1) जहागीर का अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह एवं (2) राजकुमार खुसरो की हत्या के लिये उत्तरदायी कारण ।

जहागीर के शासनकाल का इतिहास जानने हेतु तुजुब ए-जहागीरी मुख्यवान ग्रंथ है । चूंकि सम्राट ने घटनाओं का सही न्यौरा दिया है, इसलिये उसके ग्रंथ का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है । जहागीर की यह कृति न केवल सैनिक और राजनीतिक गतिविधियों पर प्रकाश डालती है अपितु इससे उस समय के सामाजिक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक जीवन के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है । इससे हमें जहागीर की मनुष्य को परखने की क्षमता के बारे में भी पता चलता है । अतः यह जहागीर के शासनकाल का एक मुख्यवान और विश्वसनीय स्रोत कहा जा सकता है ।



शरीफ बिन दोस्त मुहम्मद मोतमिद खाँ: इकबालनामा-ए-जहागीरी

शरीफ बिन दोस्त मुहम्मद मोतमिद खाँ ईरान का निवासी था। अकबर की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार सघन प्रारम्भ हुआ। उस समय मुहम्मद न जहागीर का समर्थन किया था। अतः जहागीर ने शासक बनने पर उसे अहमदियों का बखशी नियुक्त किया तथा 'मोतमिद खाँ' की उपाधि प्रदान की।

जहागीर ने अपने राज्यकाल के 17 वें वर्ष तक को विवरण लिखा। उसके पश्चात उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया। अतः उसने मोतमिद खाँ को आदेश दिया कि वह उसकी तुर्क ए-जहागीरी को लिखना रहे। इस पर जहागीर के शासनकाल के 18 वें और 19 वें वर्ष के सम्मरण मोतमिद खाँ ने लिखे।

शाहजहा के शासनकाल में वह दूसरे नम्बर का बखशी था। शाहजहा ने अपने शासन के 10 वें वर्ष में उसे मीर बखशी के पद पर नियुक्त किया। 1639-40 में उसकी मृत्यु हो गई।

मोतमिद खाँ ने अपने कृति में 'अकबरनामा एवं तब्रनाते अकबरी आदि ग्रन्थों का हवाला दिया है। उसने लिखा है कि उसने युवावस्था में ही जहागीर के इतिहास से सम्बंधित तथ्यों को एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया था क्योंकि वह उसके शासन का इतिहास बनावट एवं अलकारों से पृथक् करके प्रचलित भाषा में लिखना चाहता था ताकि लोग लाभान्वित हो सकें।

मोतमिद खाँ ने अपनी कृति की रचना विधि के बारे में लिखा है कि इन विषयों में मैं प्रयत्न करता रहा। घटनाओं एवं वाक्यांशों के शोध के सम्बंध में बड़ी सावधानी से कार्य करता रहा। जो कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा था उसे बिना धटाय बढ़ाय लिख दिया। जो कुछ इस तुच्छ की जानकारी के पूर्व घटा था उसके विषय में अबुल फजल के शोध को शेर निजामुद्दीन अहमद खाना एवं स्वाजा अता बेग की रचना में मिलाकर विश्वस्त एवं वृद्ध लोगों से सशोधित कराने के उपरांत लिखा। किंतु सबदा सेवा में उपस्थित रहने तथा कार्य की अधिकता के कारण जो कुछ लिखा था, उसे सुव्यवस्थित करने का अवसर नहीं मिल सका।

मोतमिद खा ने जहागीर में 1620 ई० के बाद अपनी पाण्डुलिपि को पुस्तक का रूप दे दिया था। इकबालनामा ए-जहागीरी को "जहागीरनामा" के नाम से भी पुकारा जाता है।¹ डी ने जहागीर के शासनकाल के मामलों के लिये इसको प्रमाण के रूप में उद्धृत किया है।

इलियट एव डाउसन ने भारत का इतिहास (षष्ठम खण्ड) के पृष्ठ 299-300 पर इसका अनुवाद निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है। इकबालनामा तीन भागों में विभक्त है :-

पहले भाग में साकान राजवंश का इतिहास है। जिसमें यावर और हुमायूँ का शासन सम्मिलित है। मोतमिद खा ने अकबर के पूर्वजों का हाल अबुल फजल के आधार पर कुछ घटा बढ़ाकर लिख दिया है।

द्वितीय भाग में अकबर के शासनकाल का इतिहास है। मोतमिद खा ने अकबर का इतिहास अकबरनामा को आधार बनाकर लिखा है।² उसने सरल भाषा में अपनी कृति की रचना की है ताकि घटनाएँ आसानी से समझ में आ सकें। इस प्रकार मोतमिद खा ने अबुल फजल की जटिल भाषा की कठिनाई को दूर कर दिया है। उसने इस ग्रंथ में अबुल फजल की अशुद्धियों को दूर करने का भी प्रयास किया है। परन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिली है। मोतमिद खा ने नवीन सामग्री भी अपने ग्रंथ में प्रस्तुत की है जिससे इस कृति का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

तृतीय भाग में जहागीर का इतिहास है। प्रथम दो भागों तो सुलभ नहीं हैं परन्तु तीसरा भाग सबत्र मिलता है।

"तीसरे भाग में जहागीर के समस्त शासन का इतिहास दिया हुआ है। इसमें मस्मरणों के प्रथम उनीस वष का इतिहास संक्षेप में है, जिसको जारी रखने के लिये और पूरा करने के लिये मोतमिद खा को आदेश हुआ था। इस ग्रंथ में वह लिखता है कि जहागीर ने उसको इकबालनामा लिखने का भी हुक्म दिया था। प्रायः ऐसा होना है कि सत्य का चाटुकारिता पर बलिदान कर दिया जाता है। इस देश के थालीचकों में इस ग्रंथ का स्थान ऊँचा नहीं माना जाता। परन्तु दूसरे भाग से अधिक कोई पुस्तक प्रचलित नहीं है। इस शासन में लेखक बहुत ऊँचे पदों पर था और बड़े बड़े कामों में उसका हाथ था। इसलिये हमको मानना चाहिये कि यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।"

1) "यह ग्रन्थ कथा के रूप में है जैसे मझासिर ए-जहागीरी" और अन्य प्रामाणिक आत्मकथाएँ हैं। प्रत्यक्ष कथन की घटनाओं को प्रायः सक्षेप लिया हुआ है। परन्तु यह इतना सक्षिप्त है, कि उल्लेख के योग्य नहीं है। इस जिल्द का प्रारम्भ जहागीर के सिंहासनारोहण से और अन्त उसकी मृत्यु पर होता है। इसमें शाही परिवार के मंत्रियों के, विद्वानों के, हाकिमों के, और शासनकाल के कवियों के नाम दिये हुए हैं।

1) डा० बी० पी० सक्सेना ने लिखा है कि मझासिर ए-जहागीरी के लेखक कामगार खा की अपेक्षा मोतमिन खा साहित्यिक चोरी का कहीं अधिक दोषी दिखाई पड़ता है। उसने तुजुक का वस्तुतः छायानुवाद ही किया है। मोतमिन खा 1633 ई० के बाद किसी समय अपने ग्रन्थ समाप्त किया। उसने तुजुक ए-जहागीरी को आधार बनाकर अपने ग्रन्थ की रचना की थी।²

- 1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (पठम खण्ड) पृष्ठ 299-300
2- सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट ग़ाज़िअल्लाह, पृष्ठ 7 (प्रवेश)

= * =

12 | कामगार खां : मन्नासिर-ए-जहागीरी

मिर्जा कामगार खां हुगैनी न 1630 ई० म मन्नासिरे जहागीरी नामक प्रय की रचना की। मोतमिद खां की धपेक्षा कामगार खां अधिक सत्यवादी एवं विश्वसनीय है। कामगार खां न "तजुर-ए-जहागीरी" को आधार बना कर अपने प्रय की रचना की थी। यद्यपि कामगार छद्मत्वा खां फिरोज जग क प्रति पक्ष पातपूर्ण है क्योंकि वह उसका रिश्तेदार था। दो अवसरों पर जब फिरोज जग ने विश्वासघात किया, उसके लिये कामगार न सफाई प्रस्तुत की। प्रथम, तो बिलोचपुर के युद्ध के समय उसका दल बदलना एवं दूसरे, शाहजहा की बगाल की बापसी के बाद उसका पग त्यागना।¹

यद्यपि इस प्रय में शीघ्र विद्यमान² परंतु फिर भी वे एक ऐसे अंतराल के दार में हमारी जानकारी परिपूर्ण करते हैं जो अथवा रिक्त ही रह जाता यद्यपि शाहजहा का विद्रोह तथा उसके राजतिलक के तुरंत पूर्व का घटनाक्रम।²

इलियट एवं डाउसन ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "मन्नासिर-ए-जहागीरी" कई प्रकरणों में विभक्त है जो शासन के विभिन्न वर्षों में लिखे गये थे। इनके अतिरिक्त और कोई शीघ्र नहीं।"³

ब्रिटिश ऐजेज के लेखक ने इन प्रय के बारे में लिखा है कि "इसमें छोटी छोटी बातों का विवरण नहीं है और इस विषय में यह प्रय इकबालनामा से मिलता झुलता है। इस जिरद के पढाग में जहागीर के उन कार्यों का वर्णन है

- 1- सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहा, पृष्ठ "ग" (प्रवेश)
- 2- सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगलसम्राट शाहजहा, पृष्ठ "ग" (प्रवेश)
- 3- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (पठम खण्ड) पृष्ठ 331

अबदुल हमीद लाहौरी पादशाहनामा

डा० बी० पी० सक्सेना के अनुसार अबदुल हमीद लाहौरी 'शाहजहाँ द्वारा नियुक्त तीसरा इतिहासकार था। लाहौरी ने शाहजहाँ की आकाशमो की एक वही सीमा तक पुनर्बर्तन में सफलता अर्जित की। उसने खतमनामों में शाहजहाँ के राज्यकाल के 'आरहवें वर्ष' में शुरु किया होगा। (यह भी सम्भव है कि 16^{वें} वर्ष में शुरू किया हो।) मोहम्मद वारिस न लिखा है कि अबदुल हमीद लाहौरी ने अपना काम 1648 ई० में समाप्त कर दिया और इसके लगभग 6 वर्ष बाद ही 30 अगस्त 1654 ई० को वह परलोक सिंघार गया।

मुहम्मद सादर न लिखा है कि अबदुल हमीद लाहौरी अबुल फजल की शौली का उपासक था। यह अबुल फजल की तरह अपनी शौली की सुदरेता के लिये प्रसिद्ध था। शाहजहाँ ने लाहौरी को जय इतिहास लिखने का आदेश दिया, इस समय वह काफी बुढ़ा हो चुका था।

पादशाहनामा की भाषा और शैली एवं ऐतिहासिक महत्व

लाहौरी ने 'शाहनामा' में शाहजहाँ के शासनकाल के प्रथम 20 वर्षों का इतिहास लिखा है। उसका प्रथम प्रारम्भ तो अबुल फजल की शौली से किया है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि शायद बाद में यह हिस्सा हटा दिया गया। डा० बी० पी० सक्सेना ने प्रथम दस वर्षों के वर्णन के बारे में लिखा है कि "प्रथम दस वर्ष का विवरण बजबीनी का ही पुनर्बर्तन है। नूरजहाँ पर उसकी टिप्पणी उतनी ही कठोर है जितनी की उसके पूर्वगामी की थी। दोनों का कश्मीर का चित्रण एक समान है। इस कृति का वास्तविक महत्व द्वितीय भाग में है जिसमें शाहजहाँ के राज्यकाल के दूसरे दौर की घटनाओं का वर्णन है। ऐतिहासिक दृष्टि से वृत्तांत विशेष है। परन्तु साहित्यिक दृष्टि से वह न तो चित्ताकर्षक है और न प्रशंसा के योग्य ही।"

1- सक्सेना, बी० पी० (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृष्ठ ५ (प्रवेश);

2- सक्सेना, बी० पी० (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृष्ठ ५ (प्रवेश)

लाहौरी को सरकारी रेकार्ड्स देखने की सुविधा प्राप्त थी। उसने पूव में लिखे हुए कुछ फारसी ग्रंथों का भी अध्ययन किया। इस प्रकार उसने समकालीन दरबारियों, ऐतिहासिक ग्रंथों और विश्वसनीय सूचनाओं के आधार पर अपने ग्रंथ की रचना की है। इससे हमें शाहजहा के पूरे शासनकाल के बारे में ऐतिहासिक सामग्री मिलती है। बाद के इतिहासकारों ने इस ग्रंथ को आधार बनाकर शाहजहा के बारे में लिखा है।

पादशाहनामा की भूमिका में लाहौरी ने निम्न दो बातों पर जोर दिया है, जिससे हमें उसके विचारों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

- (1) शरी के नियमों का पालन करने पर ही बहिश्त (स्वर्ग) की प्राप्ति हो सकती है।
- (2) सरकार के स्थायित्व का आधार राजा द्वारा प्रेरित श्रद्धा और भय है।

लाहौरी के इस कथन से स्पष्ट है कि वह यह चाहता था कि बादशाह इस्लामी नियमों के अनुसार शासन का संचालन करे। जनता से यह उम्मीद करता था कि वे राजा के प्रति भय और श्रद्धा की भावना रखें। इसी वजह से लाहौरी ने शाहजहा के द्वारा किये गये कट्टर धार्मिक कार्यों की प्रशंसा की है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि उसने शाहजहा की कट्टर धार्मिक नीति की प्रशंसा करते हुए उसे धर्म का रक्षक कहा है।

लाहौरी ने बनारस एवं अन्य स्थानों पर शाहजहा के मंत्रियों को तोड़ने के आदेश प्रसारित किये और उनमें इस आदेश की काफी प्रशंसा की है। उसने शाहजहा के पुतंगालियों के साथ किये गये व्यवहार को उचित माना है। विद्रोह करने वाले मुन्शिराह और खानजहा लोदी को वह कमीना एवं हतभय बताया है।

“इस पुस्तक की विषय सूची यह है। भूमिका जिसमें लेखक अपना ग्रंथ शाहजहा को भेंट करता है। बादशाह की जन्म पत्रिका का वर्णन तमूर से लेकर उसके पूवजों का सक्षिप्त वृत्तान्त सिंहासन पर बैठने से पहले शाहजहा के कार्यों का सक्षिप्त पर्यवेक्षण। शासन के प्रथम 20 वर्ष का सविस्तार वर्णन जो 10-10 के दो भागों में विभक्त किया गया है। इस ग्रंथ में शाहजहा की नामावली और दरबारी सामन्तों के नाम लिये हुए हैं। इनको उनके पद के अनुसार जमाया गया

है। सब प्रथम 9 हजार के मनसबदार और छठ म 500 के मनसबदारों के नाम हैं। फिर उन शैली, विद्वानों, हकीमों और कविओं के नाम दिये हैं जो उन समय प्रसिद्ध थे।

“साहजहा के राज्य के लिये यादगाहनामा बड़ा प्रामाणिक ग्रन्थ है। मुहम्मद मसीह, अब्दुल हमीद से छोटा और उसका प्रतिद्वन्द्वी लेखक था। इमने उसकी बहुत प्रशंसा की है। मुन्तखाब उल-मुबाब नामक ग्रन्थ के लेखक साफी सां न साहजहा के पासन के प्रथम 20 वर्ष के इतिहास के लिये यादगाहनामा की ही आधार माना है। इस ग्रन्थ के विषय में सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि इसमें उन मिश्रित शैली का उपयोग किया गया है जिसको भारतवर्ष में “गाम” अबुल फजल और फौजी दोनों भाईयों ने जारी किया था। अब्दुल हमीद कहता है कि अबुल फजल की शैली उसे बहुत पसंद थी। जब वह किसी ऐसे विषय का वर्णन करने लगता है जिसके लिये साहित्य की भाषा की आवश्यकता हो तो उसकी शैली में “गम” बाहुल्य, दुर्गमता, और अपने स्वामी की प्रत्युक्तिपूर्ण प्रशंसा आ जाती है। फिर भी वह सदा ही ऐसी शैली का अनुकरण नहीं करता। साधारण घटनाओं का वह साधारण भाषा में वर्णन करता है, परंतु कभी कभी उसकी आनकारिक भाषा उभर पड़ती है, जिसके कारण वर्णन घुंघला हो जाता है।”

यह ग्रन्थ बहुत बड़ा है। बिवलियोपिका इण्डिका की दो जिल्दों में यह ग्रन्थ हुआ है और इसमें 1662 पृष्ठ हैं। यह यादगाह के क़ायों का विस्तारपूर्वक वर्णन है और छोटी छोटी बातों का भी समावेश करता है। इसमें दाही परिवार के लोगों की पानतों का, भेंटों का सामंतों को दी हुई उपाधियों का तबादलों का तथा अस्त जर्म निर सिंहासिनारोहण, आदि भवगरो पर की गई भेंटों का वर्णन है। अब इस ग्रन्थ में ऐसे विषय हैं सामंतों के अतिरिक्त आयादिसी की कभी नहीं हो सकती। परंतु यह कहना भी जायसक्यत नहीं होगा कि यह ऐसी ही सुख बातों से भरा हुआ है। ऐसी बातें अत्यधिक हैं परंतु इसमें ठीस ऐतिहासिक सामग्री भी है।”

इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड के पृष्ठ 3 से) 54 तक साहजही के यादगाहनामा का अनुवाद दिया है।

- 1- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 3
- 2- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास, (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 34
- 3- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 4

मुहम्मद वारिस कृत पादशाहनामा ॥ ५ ॥

पादशाहनामा तीन जिल्हों का एक बृहदग्रथ है इमने प्रथम और द्वितीय भाग जिसमें शाहजहा के राज्य के 20 वर्षों का इतिहास है, की प्रचुल हमीर लाहोरी ने लिखा था। बृद्धावस्था के कारण जब लाहोरी अपना काम जारी रखने में असमर्थ हो गया तब उसके एक विप्य मुहम्मद वारिस को यह काम भार सौंपा गया। उमन शाहजहा के शासनकाल के अंतिम दस वर्षों का इतिहास तीसरी जिल्द में लिखा है। शाहजहानाबाद की इमारतों का वर्णन अत्यंत चित्राकर्षक और विन्दु रखीय है।

इलियट एवं डाउसन ने लिखा है कि "इस ग्रंथ का नाम शाहजहानामा है। इसमें शाहजहा के शासन के 10 वर्ष तक का इतिहास है। यह 21 वें वर्ष से आरम्भ होता है और 30 वें वर्ष तक चलता है। इसी वर्ष गामन का अंत हुआ था। अलाउमदतमुल्क तूनी जिम्मे को फाजिल खा की उपाधि प्राप्त की और जी और गजेब के समय में बजोर बन गया था यह ग्रंथ मशरूफ के लिये लिखा गया था। अल्लामी मादुल्ला खा की मृत्यु के पश्चात् इसका कुछ भाग संग्राह के आदेवानुसार फाजिल खा ने लिखा था। मुहम्मद वारिस के विषय में कुछ पता नहीं है। परंतु मघासिर ए अलमगीरी का लेखक लिखता है कि 10 रवी उल अकबर 1091 हि० (1680 ई०) को एक पंगल विधायी ने चाकू से बाद शाहनामा की तीसरी जिल्द के लेखक वारिस खा को मार डाला। इस विधायी की वह परवरिश करता था और रान में उसे अपने पास सुलाता था। इस ग्रंथ की शैली प्रचुलामगीरी की सी है और यह बहुत सच्चा है। इसके अंत में उन शेरों, विद्वानों और विद्वानों की सूची दी हुई है, जो दस वर्षों में जीवित थे।

ग्रंथ के दोष

(1) लाहोरी ने इस ग्रंथ में शाहजहा की उपलब्धियों की अतिशयाक्तिपूर्ण ढंग से वर्णन किया है यानी प्रशंसात्मक वर्णन है जबकि आलोचनात्मक वर्णन होना चाहिये था। जो ऐतिहासिक दृष्टि से नितांत आवश्यक है।

1- सक्सेना, बी पी ((डा०) मुगल साम्राज्य शाहजहा, पृष्ठ 8 (प्रवेश)

2- इलियट एवं डाउसन, भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 85

(2) धारिस न उस समय की सांस्कृतिक हलचलो का बखान किया है परंतु उस समय के सामाजिक और आर्थिक जीवन के बारे में इस ग्रंथ से कुछ पता नहीं चलता।

(3) ग्रंथ फारसी इतिहासकारों की भाँति लाहौरी में भी यह कमी है कि उसने कारणों और परिणामों का विश्लेषण नहीं किया है।

इन दोषों के बावजूद भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि शाहजहाँ के शासनकाल का इतिहास जानने के लिये यह एक अमूल्य ग्रंथ है।



मुहम्मद अमीन कजवीनी शाहजहा के शासनकाल का प्रथम इतिहासकार था। जिसने पादशाहनामा नामक ग्रंथ लिखा, परन्तु शाहजहा के राज्य के प्रथम इतिहासों की भांति इसको प्रायः "शाहजहानामा" कहा जाता है और कभी कभी "तारीख ए-शाहजहानी" हुआला भी कहा जाता है। लेखक का पूरा नाम मुहम्मद अमीरुद्दिन अब्दुल हसन कजवीनी है परन्तु वह अमीनाई कजवीनी या अमीनाई मुन्शी या मिर्जा अमीना के नाम के प्रसिद्ध है।¹

शाहजहा ने अपने शासनकाल के 8 वें वर्ष में कजवीनी को अपने शासनकाल का इतिहास लिखन का आदेश दिया था। उसने शाहजहा के राज्यकाल के प्रथम दस वर्ष का इतिहास लिखा, तब तक अपने पद पर बना रहा। इस पश्चात् अपने प्रतिद्वन्द्वियों की ईर्ष्या के कारण पद त्यागना पड़ा।

ग्रंथ की भाषा एवं शैली तथा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्व

कजवीनी ने पादशाहनामा की रचना सरल एवं भावपूर्ण भाषा में की है। डा० सक्सेना ने इसे तत्कालीन युग की "विशुद्ध फारसी शैली का उत्कृष्ट नमूना कहा है।² लेखक ने भूमिका में लिखा है कि उसने अपने ग्रंथ की तीन भागों में विभक्त किया है। (1) भूमिका-जिसमें सम्राट के जन्म से सिंहासनारोहण तक का हाल है। (2) मकाल जिसमें उसके शासन के प्रथम दस वर्ष तक का इतिहास है और (3) परिशिष्ट जिसमें धार्मिक और विद्वान लोगों का तथा तथा हकीमों का और कवियों का वृत्तांत है। उसने यह भी लिखा है कि उसका विचार दूसरी जिल्द लिखने का भी है। जिसमें शाहजहा के राज्य के बीसवें वर्ष तक का इतिहास होगा, परन्तु यह प्रकट नहीं होता कि उसका विचार पूर्ण हुआ हो। उसकी नियुक्ति ऐसे पद पर हो गई थी जहां उसको बहुत यत्न रहना पड़ता

1- इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 1।

2- सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहा, पृष्ठ 4 (प्रवेश)

या। मुहम्मद सालीह नेले खक की सक्षिप्त जीवनी लिखी है, जिसमे वह कहता है कि लेखक की मुक्त सूचना विभाग मे बदली कर ली गई थी।¹

लेखक ने, निष्पक्ष रहकर अपने ग्रन्थ की रचना की है। यदि इतिहासकारों ने शाहजहा का इतिहास उसके ग्रन्थ की आधार बनाकर लिखा है। "स्वभावतः लेखक अपने भाशयन्ताता-सम्राट-के प्रति पक्षपातपूर्ण है।-उसके प्रारम्भिक जीवन, विशेषकर उसके विद्रोह का इतिवृत्त दत्ते हुए वह सारा दोष नूरजहा पर ही धोप देता है तथा महारानी की आलोचना तीखे शब्दों मे ही करता है। वस्तुतः विद्रोह का वृत्तांत ही सक्षिप्त है और लेखक ने ग्रन्थ विश्वासी आधारों पर उसकी सच्चाई भी प्रस्तुत की है।² तथापि शाहजहा की प्रारम्भिक शिक्षा और राज्यकाल के प्रथम दस वर्ष की घटनाओं के अध्ययन के लिये यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है।

1- इलियट एव हाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 1

2- मक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहा, पृष्ठ 4 (प्रवेश)

= * =

मुहम्मद ताहिर को इनायत खा की उपाधि मिली थी और उसका वाय नाम अश्ना था। इनायत खा के पिता का नाम जफर खा था जो जहागीर वा बजीर था। शाहजहा न उसे काबुल और कश्मीर वा शासक बना दिया था। शाहजहा के सिंहासनारोहण के समय इनायत खा का जन्म हुआ था। लेखक को शाहजहा के शासन के 7 वें वर्ष में मनसब प्राप्त हुआ था। उसे अपने पिता के साथ कश्मीर भेजा गया जहा उसका पिता गवर्नर था।

इनायत खा अपने पिता से भी अधिक योग्य एवं प्रतिभावान् व्यक्ति था। उसने एक शैलीवान और तीव्र मनसबियों की रचना की थी परंतु उसे प्रसिद्धि शाहजहा का इतिहास लिखने के कारण प्राप्त हुई।

इनायत खा शाहजहा का घनिष्ठ मित्र था तथा उसके दरबार में एक महत्वपूर्ण प्रशासकीय अधिकारी था। उसने शाहजहा के आदेशानुसार 'शाहजहा नामा' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इसमें पूर्ववर्ती इतिहासों को मशुमूत करते हुए 1657-58 ई० का ऐतिहासिक विवरण दिया हुआ है।

इनायत खा ने शाहजहानामा के प्राक्कथन में लिखा है कि 'इन पृष्ठों के लेखक को ऐसा प्रतीत होता है कि वह और उसके पूर्वज शाहीवंश के सक्रिय एवं योग्य कर्मचारी रह चुके थे इसलिए उसके लिये यह उत्तम होगा कि वह शाहजहा के शासनकाल का इतिहास सरल और स्पष्ट शैली में लिखे। इसके साथ ही शेख अब्दुल हमीद न तीन खण्डों में जो इतिहास लिखा है, उसे सक्षिप्त और सरल भाषा में पुनः लिख दे।' कजरीनी का यह मानना था कि आगे चलकर यह एक महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थ प्रमाणित होगा।

लेखक इनायत खा ने शाहजहानामा के पृथक् भाग के आधारों को स्पष्ट स्वीकार किया है। प्रथम बीस वर्ष 'बांशाहानामा' से मिलते जुते हैं लेकिन शैली अधिक सरल है। शाहजहानामा का इतिहास 1657-58 (1068 हि०) तक है। इसी वर्ष औरंगजेब को सम्राट घोषित किया गया था लेकिन लेखक

ने इसका कहीं उल्लेख नहीं किया है। लेखक यह नहीं कहता कि यादगाहनामा के अतिरिक्त और किसी पुस्तक को उसने अपने ग्रन्थ का आधार बनाया है और अंतिम दस वर्षों का इतिहास उसकी स्वतंत्र रचना है या नहीं।

इलियट एव डायमन ने भारत की इतिहास (संस्कृत खण्ड) के पृष्ठ 55 से 84 तक इनायत खा के शाहजहानामा का ध्यान किया है।

इनायत खा का शाहजहा से निकटतम सम्पर्क था, उन उसे घटनाओं के विषय में पूरा ज्ञानवारी प्राप्त हो जाती थी। उसने सरल भाषा में अपने ग्रन्थ की रचना की है। उसके द्वारा वर्णित घटनाएँ विश्वसनीय हैं। इसकी पुष्टि ग्रन्थ करते हैं। संक्षेप में, शाहजहा के शासनकाल के इतिहास को जानने के लिये उसका ग्रन्थ एक महत्वपूर्ण स्रोत कहा जा सकता है।

2- इलियट एव डायमन - भारत का इतिहास (संस्कृत खण्ड) पृष्ठ 55

...

*

...

(11) ...

डा० बी० पी० सक्सेना के अनुसार मुहम्मद सादिक के "शाहजहानाणा" ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण वृत्ति है। डा० सक्सेना ने लिखा है कि "यद्यपि इस ग्रंथ में अनेक अतिमचरितार्थक सूक्त हैं तथापि लेखक की व्यक्तित्व की दिनांत निर्धारित करना बहुत कठिन है। शाहजहानाणा संश्लेषित वृत्ति तो नहीं मानी जा सकती फिर भी निस्संदेह उस बाल के इतिवृत्त के लिये उस अत्यधिक विश्वसनीय स्रोत को मानना ही चाहिये। लेखक एक ऐसे पद पर नियुक्त था (वह दरोगा ए गुसलखाना था) जहां से वह उन घटनाओं का या काय कलापो को जिनका उमन वणन किया है, न केवल देख और समझ ही सकता था परंतु जो कुछ उसने अपनी निजी जानकारी के बल पर लिखा है, उस सम्बन्ध में भी उसके समूचन स्रोत सवथा निर्दोष ही है। उसने अपने चार चाचाओं का उल्लेख किया है। उसमें से तीन तो उच्च शाहा सेवा में थे। इस हकबग मजदी महारानी मुमताजमहल का मीर समान था, अमीर खा मीर तुजुब था तथा बाकी खा दीघकाल तक अकबरवाद (प्रागरा) का प्रान्तपति रहा। उसका चौथा चाचा केवल एक अहदी अर्थात् कुलीन सैनिक था।¹

मुहम्मद सादिक का लक्ष्य स्वार्थसिद्धि न था। न तो वह शाही इतिहासकार ही था और न वह किसी आश्रयदाता को प्रसन्न ही करना चाहता था। निस्संदेह उसकी भावना शाहजहाना के प्रति तो पक्षपातपूर्ण ही है, परन्तु इसके अलावा वह सामान्यतः निष्पक्ष ही दिखाई पड़ता है। वह न तो उचित आलोचना करने में हिचकता है और न कड़वे तथ्यों पर पर्दा ही डालता है। उसका वृत्त जहांगीर की मृत्यु के समय से शुरु होता है और शाहजहाना के कारावास पर समाप्त हो जाता है।²

डा० सक्सेना ने इस ग्रंथ की निष्पक्षता की पुष्टि के लिये कुछ उदाहरण दिये हैं। यथा "उसने खानेजहाना लोदी के अनुचरों की यथेष्टसराहना की है यद्यपि सद्य के अन्तिम चरण में बाराहा के सैनिकों ने अधिक सत्या के बल पर उन्हें चित

1- सक्सेना बी पी (डा०) मुगल सम्राट शाहजहाना, पृष्ठ ६ (प्रवेश)

सक्सेना, बी पी (डा०) मुगल सम्राट शाहजहाना, पृष्ठ ६ (प्रवेश)

कर दिया। वह दक्षिणियों के तलवार चलाने की कला की प्रशंसा करता है। मुरारी पण्डित को तलवार का सूत्रमा यज्ञान कर उसकी प्रशंसा करता है। नूरजहा को अपने दिवंगत पति के प्रति श्रद्धा की प्रशंसा करता है तथा कुछ हिन्दू पदाधिकारियों की विशेष रूप से घातक खा एव भीवान मुकुन्दराय की भूरि भूरि सराहना करता है। फिर भी वह स्पष्टरूप से यह स्वीकार करता है कि कंधार में मुगलों की हार उनके निम्नकोटि के घनिष्ठस्त्रों के कारण हुई। दारा की पराजय के बाद शाहजहा और औरंगजेब में जो वार्ता हुई उसमें उसने स्वयं भाग लिया, अतः उनका यह कृत्य तो बहुत ही विश्वसनीय है। "।

1- सक्तेना, बी पी (२१०) - मुगल सम्राट शाहजहा; पृष्ठ ३ एव ४ (प्रवेश)



मिर्जा मुहम्मद काजिम : आलमगीरनामा

मुहम्मद काजिम के पिता का नाम मुहम्मद अमीन कजवीनी था जिसने "पादशाहनामा" नामक ग्रंथ की रचना की। मुहम्मद काजिम ने 1688 ई० में "आलमगीरनामा" नामक ग्रंथ लिखा था। लेखक ने अपनी कृति में स्वयं की काफी प्रशंसा की है और लिखा है कि, उमकी आकषण शैली के कारण ही सम्राट औरंगजेब से उसका परिचय हुआ था। औरंगजेब ने उसे अपने शासनकाल के प्रथम वर्ष में मुशी के पद पर नियुक्त किया था। सम्राट औरंगजेब को मुहम्मद काजिम की लेखन शैली अच्छी लगी। इसलिये उसने उसको शासन में सम्प्रधित घटनाओं का रेकाड देवने की सुविधा उपलब्ध करवा दी। लेखक विश्वसनीय अधिकारियों से भी जानकारी प्राप्त कर सकता था। लेखक को स्वयं सम्राट से भी पूछनाछ करने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। उसे यह आदेश दिया गया था कि वह जो कुछ भी लिखे उसे सम्राट के सामने पढ़कर सुनाय। यदि सम्राट उसमें कोई सुधार कचे तो वह उसमें शामिल करें।

मुहम्मद काजिम ।। वर्ष बाद अपना यह ग्रंथ लिख सका था किन्तु इस ग्रंथ की रचना से औरंगजेब मत्तुष्ट नहीं था। इस देखकर सम्राट ने आदेश दिया कि अब आगे न लिखा जाय। मूल पाण्डुलिपि जब औरंगजेब को उताई तब उमने सरकारी इतिहास को लिखने की स्वीकृति नामजूर कर दी। औरंगजेब द्वारा पहले इतिहास लिखन की आना दकर फिर उसे बन्द करने का आदेश देना बड़ा विचित्र लगता है।

सन् १७०० सरकार ने लिखा है कि औरंगजेब ने आधिक कठिनाइयों के बशीभूत होकर ही मुहम्मद काजिम को इतिहास आग न लिखने का आदेश दिया था परन्तु उनका तब उचित प्रतीत नहीं होता।

औरंगजेब के साम्राज्य में राजीतिक अस्थिरता, और चारों ओर विद्रोह हो रहे थे। इसलिये उमने दरबारी इतिहासकार नियुक्त करने की परम्परा को त्याग दिया था क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि साम्राज्य की विगड़ती हुई अवस्था के बारे में जनताधारण को जानकारी प्राप्त हो।

मुहम्मद काजिम ने झालमगीरनामा में झौरगजेव के शासनकाल के प्रथम दस वर्षों (1658-1668 ई०) का इतिहास लिखा है। लेखक ने घटनाओं का विस्तृत धरण अपनी व्यक्तितगत जानकारी के धाधार पर लिखा है।

प्रथम की भाषा एव शैली तथा ऐतिहासिक महत्व

मुहम्मद काजिम ने स्तुतिपूर्ण शैली में अपना ग्रंथ लिखा है। लेखक ने एक झौर झौरगजेव की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा की है तो दूसरी झौर उसके भाग्यहीन भाइयों का मजाक उड़ाया है। इस ग्रंथ को भारत में प्रामिद्धि नहीं मिली।

मुहम्मद काजिम ने झालमगीरनामा नामक ग्रंथ सम्राट झौरगजेव को उसके शासन के 32 वें वर्ष में समर्पित किया। चूकि लेखक ने सम्राट के सरक्षण में इस ग्रंथ की रचना की झौर उसे समर्पित भी किया। अतः इस ग्रंथ पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता। लेखक ने इसमें एक तरफा विचार दिये हैं। उमन झौरगजेव की वृद्ध अघिष प्रशंसा की है झौर उसे झालमगीर की सजा दी है।

ग्रंथ समयकालीन कृतियों के समान इसमें भी स्तुतियों की भरमार है। झौरगजेव ने लेखक को आदेश दे रखा था कि वह जो कुछ भी लिखे उसके सामने पड़े। सम्राट उनको अपनी दृष्टि से जाचना था। लेखक को जिस जानकारी की आवश्यकता होती वह उमन से देता था झौर उसी के अनुसार इतिहास लिखा जाता था। इतिहास में मेधा लिखा जाए झौर क्या नहीं लिखा जाए यह सम्राट की इच्छा पर निर्भर था। यह चिन्तनीय है कि कौन सम्राट अपने को अपराधी या दोषी बताना चाहता था। स्पष्ट है कि ऐसे एक पक्षीय इतिहास पर पूर्णरूप से विश्वास नहीं किया जा सकता।

मूल्यांकन

झालमगीरनामा सम्राट के सरक्षण में लिखा गया इतिहास है। इसमें कई कमियां भी हैं। जैसे कि - इस ग्रंथ में निष्पक्षता का अभाव है। फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि झौरगजेव के साम्राज्य के प्रथम दस वर्ष की घटनाओं के लिये यह एक महत्वपूर्ण स्रोत है।



मुहम्मद शाकी मुस्तइद खा : मअ्रासिर-ए-अलमगीरी

॥ मुहम्मद शाकी मुस्तइद खा ने 'मअ्रासिर-ए-अलमगीरी' नामक ग्रंथ की रचना की थी। लेखक औरंगजेब की सेवा में चालीस वर्ष तक रहा था। उसने अपने ग्रंथ में बहुत सी आखो देखी घटनाओं का वर्णन भी किया है। मअ्रासिर-ए-अलमगीरी की रचना औरंगजेब की मृत्यु के पचास वर्षों की थी।

लेखक ने घटनाओं का बहुत सक्षिप्त वर्णन किया है। इसमें 50 वर्षों का इतिहास 541 पृष्ठों में लिखा गया है। औरंगजेब के आशुनुसार मुहम्मद शाकी मुस्तइद खा ने इतिहास लेखन काय आरम्भ किया। यह ग्रंथ औरंगजेब की मृत्यु के तीन वर्ष पश्चात् 1710 ई० में पूरा हुआ।

मअ्रासिर-ए-अलमगीरी दो भागों और एक छोटे से परिशिष्ट में विभाजित है।

प्रथम भाग - इसमें लेखक ने मिर्जा मुहम्मद काजिम की कृति अलमगीरनामा को आधार बनाकर औरंगजेब के शासनकाल के प्रथम दस वर्षों के इतिहास को सक्षिप्त रूप से लिखा है।

द्वितीय भाग - इसमें औरंगजेब के शासनकाल के चालीस वर्षों (1668-1707 ई०) का इतिहास है। इसमें प्रत्येक वर्ष की घटनाओं का पृथक पृथक वर्णन किया गया है।

ग्रंथ के दोष :

(1) लेखक ने अपने ग्रंथ में उन खोनों का वर्णन नहीं किया है जहाँ से उसे जानकारी प्राप्त हुई थी।

(2) उसने औरंगजेब के शासनकाल की कई महत्वपूर्ण घटनाओं एवं महत्वपूर्ण अधिकारियों का वर्णन नहीं किया है।

मूल्यांकन :
इन दोषों के होते हुए भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि लेखक ने सरल एवं स्पष्ट शैली में ग्रंथ की रचना की है तथा औरंगजेब के महत्वपूर्ण अभियानों का उल्लेख भी किया है। निम्न देह मअ्रासिर-ए-अलमगीरी औरंगजेब के इतिहास को जानने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

खाफी खां ने मुत्तखब उल-लुबाब नामक ग्रन्थ की रचना की जिसे तारीखे खाफी खा के नाम से भी पुकारा जाता है। यह दो खण्डों में है, जिसमें लगभग एक हजार पृष्ठ हैं। इस ग्रन्थ में 1519 ई० में हुए बाबर के हमले से मुहम्मदशाह के शासन के 14 वें साल (1733 ई०) तक का इतिहास है। इसमें एक भूमिका भी है जिसमें मोठ से बाबर तक मुगलों और तारतारों के इतिहास की स्पष्टता है। एक लेखक के रूप में प्रसिद्ध खाफी खा का वास्तविक नाम मुहम्मद हागिम था। वह हिंदी की निवासी या और एक अच्छे परिवार में पैदा हुआ था। उसने निजीतौर पर औरंगजेब के शासन की घटनाओं की एक सूची तैयार की थी जिसको उसने बादशाह की मृत्यु के कुछ वर्ष बाद प्रकाशित किया। उसके पिता का नाम ख्वाजा मीर था, जो इतिहास का लेखक था तथा मुरादाबाद की नौकरी में उच्च थोड़ी का अधिकारी था। किंतु जब शाहजादे की बारागार में हत्या हो गई तो ख्वाजा मीर ने औरंगजेब के अधिनिवा स्वीकार करली। मुहम्मद हागिम खा औरंगजेब की सेवा में ही बड़ा हुआ था। उसे राजनीतिक और सैनिक काम के लिये नियुक्त किया जाता था। एक बार उसे गुजरात के सूबेदार न बम्बई में छप्रेजों के पाम एक विषय कायबश भेजा था, जिसका उसने रोचक बणन किया है।¹

उसने कई विषयों में तो छप्रेजों की प्रशंसा की है किंतु यह भी लिखा है कि गम्भीर राजनीतिक चर्चा करते हुए भी वे यों ही हसा करते हैं। खाफी खा न जो कुछ दखा था या सुना, उसका उल्लेख करते हुए वह अपने लिये ग्रन्थ पुरुष का उपयोग करता है। फरखसियर के शासनकाल में उसे हदतया के प्रथम निजाम निजामुल्क ने अपना दीवान नियुक्त किया था। अतः लेखक इस उमराव के मामलों का रुचिपूर्वक और सहानुभूति के साथ बणन करता है। इसी कारण लेखक को कभी-कभी निजामुल मुल्क भी कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि मुहम्मद शाह इस इतिहास को देखकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने लेखक को "खाफी खा" अर्थात् "गुप्त" की उपाधि से सम्मानित किया क्योंकि लेखक न गुप्तरूप से अपना

काय जारी रखा था। आधुनिक इतिहासकारों का भी यही मानना है कि इस गठ उत्पत्ति इस प्रकार हुई और अग्रेज इतिहासकार भी इसी कथन का समर्थन करते हैं। किंतु यह बात उचित प्रतीत नहीं होती "खाफी या नाम लेख के कुटुम्ब और देश को घोषित करता है। खाफ़, वाफ़ नैशापुर के निकट, खुरासन का एक जिला है। खाफी शब्द से एशिया के लोग अपरिचित नहीं हैं। शेन अनुदीन खाफी, इमाम, खाफी और खाफी संयद आदिनामों से परिचित हैं। इस बात की पुष्टि इससे भी होती है कि गुलामअली शाह मुहम्मद हाशिम को खाजा भीर खाफी का पुत्र बताता है। इतना ही नहीं, लेखक स्वयं भी अपने पिता का नाम भीर खाफी लिखता है। यह मान लेना असम्भव नहीं होगा कि मुहम्मदशाह न लेखक के असली नाम के सहार पर मजाक किया हो और यह बताया हो कि यह वह वास्तव में खाफी हो गया है।

रायल एशियाटिक सोसायटी हस्तलिखित ग्रंथों की सूची में श्री मोरले ने प्रथम यास्या स्वीकार की है और लिखा है कि यह ग्रंथ बहुत असें तक खिया रखा था। अतः इसके लेखक की उपाधि खाफी खान बन गई। किंतु केनेल तीव्र स्वतंत्र रूप से उमी परिणाम पर पहुंचा जिस पर सर एच० एम० इलियट पहुंचा था। उसने बताया है कि खाफी जाति का नाम है और बहुत प्रचलित है। इसी अथ गुप्त इसलिये चल पड़ा है कि इसको मली भाति नहीं समझा गया। खाफी खा ने स्वयं लिखा है कि इस शब्द का हाम्यास्पद अर्थ हो गया है और परिणामतः इसका वास्तविक अर्थ ही उल्टा हो गया है। खाफी खा ने निस्संदेह लिखा है कि यह सत्र सामग्री उमन एक मं देक में बंद कर रखी थी, परन्तु यह सद्क उसका स्मृति का सद्क थी। अपने ग्रंथ की औरगजेब की मृत्यु के बाद एक दो वर्ष तक खाफी या छिपाये रखता, यह तो वान समझ में आती है परन्तु इस घटना के बाद लगभग तीस वर्ष तक उसे हवा न लगाने देता इसका क्या कारण हो सकता है।

ग्रंथ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व और मूल्यांकन

खाफी खा द्वारा लिखे गए ग्रंथ मुतखाब-उल-खुबाब का ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्व है। इसमें औरगजेब के शासनकाल पूरा बताया है। औरगजेब ने अपने शासन प्रबंध के इतिहास का लेखन निषेध कर दिया था। अतः उसके राज्य का पूरा और सम्बद्ध इतिहास दुर्लभ है। किंतु इस निषेध के कारण

1- इलियट एच डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 43

2- इलियट एच डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 43

ही इस प्रकार का उत्तम और निष्पक्ष भारतीय इतिहास उपलब्ध हो गया है । इसलिये सम्राट शासकगीर के इस प्रकार के 'निषेध' के लिये कृतज्ञता प्रकट की जानी चाहिये । इसमें मुहम्मद का 'पूर्ण इतिहास' है । इसमें मुगल का इतिहास बाबर मुहम्मदशाह के शासनकाल के 14वें वर्ष तक का धरति 1519 ई० से 1733 ई० तक का इतिहास उपलब्ध होता है प्रारम्भ में दशम तैमूर का स्पष्ट और महत्त्व युक्त लिखा गया है । यह 'यंग' सस्थापक बाबर से अकबर के राज्यकाल तक का इतिहास है। इस भाग का महत्त्व स्पष्ट कर दिया गया है क्योंकि लिखने लेखकों द्वारा समाप्त घटनाओं का पूरा वर्णन कर दिया गया था । इस प्रथम भाग अधिकांश भाग अरब की मृत्यु के बाद के 130 वर्ष का इतिहास है । अकबर ने लिखा है कि इनके अन्तिम 53 वर्ष का इतिहास स्वयं का आर्षीं दत्ता हुआ है या उन लोगों से जिनसे मुता है, जिन्होंने घटनाओं को देखा था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि औरंगजेब ने जब निषेध का आदेश जारी किया उगसे पूर्व ही इस ग्रन्थ का आधा भाग पूर्ण हो चुका था परंतु लेखक चाहता था कि यह ग्रन्थ उमरे जीवन की समाप्ति तक चलता रहे ।

इतिहास के अतिरिक्त ट्रांसलेशन फण्ड के लिये अनुवाद और प्रकाशन किया गया था । इसका लेखक इस इतिहास के विषय में लिखता है कि इसमें 'उन विभिन्न कारणों का मूला और विशेष ध्यान है जिनको लेखक ने स्वयं किया था । परंतु साथ ही यह शर्त भी है कि उसने इस ग्रन्थ को 'भी नहीं देखा । जब बनल ही ने 'हिस्ट्री आफ़ ट्रिडुस्तान' लिखी तो यह औरंगजेब के शासन के दसवें वर्ष पर समाप्त कर दी गई, क्योंकि इससे अगले युग पर 'अशा' डालने वाली कोई भी भाषा उगा नहीं थी । मिले महोदय को भी यही शिर्कित भी कि औरंगजेब का पूरा इतिहास नहीं मिलता । इस कृति को श्री स्ट्रैटः एलविस्टेन ने निवारण कर दिया है । खाफी खां ने इतिहास का 'विवेकपूर्ण' उपयोग करके अगले औरंगजेब को और उसके बाद के अनराधिकारियों का इतिहास पूरा कर दिया है । मद्रास आर्मी के मेजर गॉडन ने 'जहांगीर' के शासन के अंत तक खाफी खां के इतिहास का अनुवाद किया था । एलविस्टेन ने इसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है । उसे श्रेय है कि यह अनुवाद पूरी पुस्तक का नहीं है । यह इतिहास अतमान काल तक का है और सारे युग का एक ही इतिहास है ।

खाफी का औरंगजेब एवं मुहम्मदशाह का समकालीन था । उसने आसो देखा, अगुन अपनी कृति में लिखा है । इसलिये उसका यह ग्रन्थ प्रामाणिक माना जाता है । समस्त घटनाओं का सुंदर यथा तथ्य और सम्बद्ध विवरण दिया है ।

उसने सरकारी दृष्टिकोण से अपना इतिहास लिखा है । इसलिये उसने शिवाजी को साम्राज्य का एक विद्रोही बताया । यद्यपि उनकी धीरता की प्रशंसा उसने की है । खाफी खा ने मनसबदारी प्रथा के कारणों का वर्णन किया है । इसके अतिरिक्त मराठों के कायबलापो जागीरदारों की स्थिति एवं केन्द्रीय प्रशासन का अच्छा विवरण दिया है । उसने एक लम्बे समय तक आमिल के पद पर कार्य किया था । अतः उसने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर राजस्व व्यवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है कि उस समय आमिल रिश्वतखोर थे और कृषकों की स्थिति काफी दयनीय थी ।

बादशाह औरंगजेब के जीवनकाल में साम्राज्य के महत्वपूर्ण पद पर रहने के कारण खाफी खा का विवरण वास्तविकता एवं सजीवता से श्रोतप्रोत है । उसने अपनी रचना में आखी खा का वर्णन प्रस्तुत किया है जो काफी आश्चर्यक है । दृगली में यूरोपियन लोगों का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि ' फिरीगियो ने अपनी एक व्यापारिक बस्ती दृगली में स्थापित कर ली थी जो बंगाल में राजमहल से 20 कोस पर है । पिछले समय में उन्होंने अपने रहने के लिये और अपना माल रखने के लिये एक भूखण्ड का पट्टा प्राप्त कर लिया था । वहाँ उन्होंने एक दुर्ग का निर्माण किया जिसमें प्राचीरों और बुर्जों थी और उस पर तोंगे चढ़ा दी । उन्होंने एक पूजा घर भी बनवाया जो कलीशा कहलाता था । कुछ समय बाद वे अनुमति से अधिक कायवाही करने लगे । वे पास के मुगलपानों को तंग करते थे । यात्रियों को सताते थे और अपनी बस्ती को अधिकाधिक दृढ़ करते जाते थे । उनका सबसे बुरा, कम यह था कि अपने अधिन समुद्र तट पर स्थित बंदरगाहों में से अपनी मुसलमान प्रजा या हिंदू प्रजा को जन धन की कोई क्षति तो नहीं पहुँचाते थे । परंतु इनमें अब कोई छोटे छोटे बच्चे छोड़कर मर जाता था तो उसकी सम्पत्ति और सत्तान पर वे अपना अधिकार कर लिया करते थे और बच्चे चाहे संघर्षों के हो, चाहे आहारणों के हो उन्हें वे इसाई दाम बना लेते थे । दक्षिण में कोकण के बंदरगाहों में समुद्र तट पर जहाँ भी उनके दुर्ग थे, वहाँ वे लोग ऐसा ही किया करते थे । इन निर्दयी कामों को सब लोग जानते थे, तो भी मर जाति के हिंदू, और मुसलमान जीविकोपार्जन के लिये उनकी वस्तियों में जाया करते थे । फिर भी लोग किसी फकीर को अपनी सीमा के अन्दर नहीं घुसने देते थे । यदि कोई भुला भटका वहाँ चला जाता और वह हिंदू होता तो उसकी ऐसी कटार घातनाचें दी जाती थी कि नायद ही बची वह प्राण बचाकर वहाँ से निकलता था और यदि वह मुसलमान होता तो उसे धँदी बनाकर कुछ दिन तक ठुंसी दिया जाता था और फिर वह छोड़ दिया जाता था । जब यात्री उनकी सीमा में प्रवेश करते थे तो सीमा शुल्क के बमबारी उनके सामान की तलाशी देते थे और यदि तम्बाकू मिलती, तो बभी किसी प्रकार की

नरमी नहीं की जाती थी, क्योंकि तम्बाकू बेचने का लाईसेंस दिया जाता था और किसी को अपनी निजी आवश्यकता से अधिक तम्बाकू अपने पास रखने की अनुमति नहीं थी। इनके पूजा गृह हिन्दू मन्दिरों से भिन्न थे। विशेषता यह थी कि वहाँ पर अहमदाबाद की वस्तियाँ जला करती हैं। उनके व्यय सिद्धांतों के अनुसार उन्होंने ईसा, और मेरी की काष्ठ, और मोम तथा दूसरे पदार्थों की चमकीली प्रतिमाएँ बना रखी हैं। परंतु अंग्रेजों के, गिर्जा, में इस प्रकार की प्रतिमाएँ नहीं हैं। यद्यपि वे ईसाई हैं। इन गृहों का लेखक वहाँ पर कई बार गया और उनके विद्वानों से कई बार बातचीत की है। और जो कुछ उसने देखा है, उसी का बखान किया है।

घटनाओं का सूक्ष्म एवं मार्मिक बखान

खाफ़ी खा ने घटनाओं का बखान इतना सजीव किया है कि पाठक प्रथम को पढ़ते हुए ऐसा महसूस करता है कि जैसे घटना उसकी आँखों के सामने घटित हो रही हो। 1658 ई० की गर्मी में शाहजहाँ की रणनावस्था, एक उस समय की परिस्थितियों का बखान करते हुए खाफ़ी खा ने लिखा है कि "आगरा की गर्मी सम्राट के अनुकूल नहीं थी।" ज्योंही वह किंचित स्वस्थ हुआ तो वह दिल्ली के लिये रवाना हो गया। दाराशिकोह आरम्भ से ही इस प्रस्थान के विरोध था और प्रायः इसका विरोध किया करता था। अब राजा जसबत की पराजय का समाचार सुना तो वह भयभीत हो गया और अपने पिता को उसे प्रायनायें और शिवायतें करके बड़ा तग किया और चापिस सौ ग्रान के लिये राजी कर लिया। अब संधप होने ही वाला था। उसके लिये बड़ी शीघ्रता से तैयारियाँ की जाने लगी और अपने पिता के बड़े बड़े उमरावों और अनुचरों के साथ साथ नये व पुराने 60 हजार सैनिकों को और भारी तोपखाना साथ लेकर उसने प्रयाण शुरू किया। ऐसा कहा जाता है कि सम्राट ने दारा शिकोह के प्रयाण का बार बार विरोध किया था और कहा था कि इसका भाईयों में परस्पर विरोध तथा संधप के प्रतिरिक्त और कुछ परिणाम नहीं होगा। उसने यह भी विचार किया था कि वह दोनों भाईयों को समझाने के लिये जल्द और दोनों में समझौता करे। इस

हेतु यात्रा करन के लिये उसने तैयारी के आदेश भी दे दिये थे । परन्तु दाराशिकोह इससे सद्रमत नहीं था । खानजहा, शाईस्ता खा की सलाह से उसने अपने पिता का ध्यान इधर से दूसरी ओर फेर दिया । ऐसा भी लिखा है कि राजा जसवंत की पराजय की तथा अक्षिण और अहमदाबाद की सेनाओं के सम्मेलन की सूचना खान से खूब सन्मत् की इच्छा थी कि वह जाकर उनसे मिले और इस विषय में उसने कई बार खानेजहा से सलाह ली थी । खानेजहा और गजेब का मामा था और उसकी ओर बहुत भुका हुआ था । उसने सम्राट की योजना का अनुमोदन नहीं किया और और गजेब की बुद्धि तथा खरिष की प्रशंसा करता रहा । इसका कारण यह था कि और गजेब के प्रति उसका स्वाभाविक स्नेह था । जब राजा जसवंत की पराजय होने का समाचार आया, तो सम्राट खानेजहा से उसकी सलाह के विषय में बहुत क्रुद्ध हुआ और उसकी छाती में छड़ी मारी और दो तीन दिन तक उससे नहीं मिला परन्तु उसका क्रुपा भाव पुनः जागृत हो गया और फिर उससे अपने पुत्रों से मिलने के विषय में परामर्श किया, किन्तु खानेजहा ने वही सलाह दी, जो पहले दी थी इसलिये यद्यपि तैयारियाँ तो कर ली गई थी, तथापि यात्रा नहीं की गई । ”

और गजेब के शासन के चौथे वर्ष 1071 हिजरी (1661 ई०) का बर्णन करते हुए खाफी खा ने लिखा है कि 'शाहजादा मुहम्मद ने राजा स्पसिह की पुत्री से विवाह किया (1071 हिजरी) असम प्रदेश बंगाल के उत्तर और पूव में खम्बो पर्वत श्रेणियों के मध्य में स्थित है । इसकी लम्बाई 100 जरीबी कोस है और इसकी चौड़ाई उत्तर के पहाड़ों से दक्षिण तक 8 दिन की यात्रा है । ऐसा कहा जाता है कि यह देश अफरासियाव के बजोर पीरान वैसिया का था । यहाँ का राजा अपने को ईरान का वंशज बताता है । आरम्भ में राजा अग्निपूजक थे, फिर कालांतर में मूर्तिपूजक हिन्दू बन गये । इस देश का यह रिवाज है कि कि प्रत्येक व्यक्ति राजा को प्रतिवर्ष एक तोला स्वर्ण देणु दिया करता है । जब यहाँ का राजा या कोई बड़ा आदमी या जमींदार भरता है तो वे उसके लिये एक बड़ी बद्ध बनाते हैं और उसमें उसकी पत्नियों उप पत्नियों घोड़ों सोने चादी के बतनों

घादि को जिनको उस देश में उपयोग होता है तथा आभूषण, सुगन्धित पदार्थ
 घादि जो कई दिन तक रख सके, रख देने हैं। वे समझते हैं कि ये वस्तुएँ मृतक
 को यहाँ से परलोक तक पहुँचाने के लिये चाहिये। इन सब चीजों को रखकर वे
 कब्र का द्वार बन्द कर देते हैं। इस रिवाज के कारण खानखाना को एक कब्र
 सोदने पर बहुत सा धन प्राप्त हुआ था। बामरूप का प्रसंग की सीमा पर स्थित
 है। दोनों देशों में मित्रता है। गत 20 वर्ष से यहाँ के लोग उत्पात किया करते
 थे। वे बगाल के गाँही इलाकों पर आक्रमण करते वहाँ की मुसलमान प्रजा को
 बंदी बनाकर ले जाया करते थे। इस प्रकार जन श्रौर धन की बड़ी क्षति हुआ
 करती थी और मुसलमान धर्म बड़ा क्षतिग्रस्त हुआ करता था। शाहजहाँ के शासन
 काल में बगाल के सूबेदार इस्लाम खा ने इस काम पर सेना चढ़ाई, परन्तु काम पूरा
 नहीं हुआ, उससे पहिले ही मुलाकर उसे वजीर के पद पर नियुक्त कर लिया गया।

सम्राट औरंगजेब ने 1668 ई० में संगीत एवं नृत्य पर प्रतिबंध लगा
 दिया था। उसका बहाना करते हुए खाफ़ी खा न लिखा है कि सुप्रकृति सम्राट
 प्रतिदिन कुरान के कानून को कार्यान्वित कराने की चिन्ता में रहा करता था। वह
 चाहता था कि आदेशों और नियमों का पूरा पालन हो। यह भी आदेश दिया गया
 कि राहदारी, जानदारी, और दूसरे कर जिनमें सरकार को लाखों रुपयों की आय
 होती थी बन्द कर दिये जायें। मद्यपान व्यभिचार के अट्टो और यात्राओं तथा
 मेलों का निषेध कर दिया गया था। इन यात्राओं एवं मेलों में हजारों हिन्दू स्त्री
 पुरुष इकट्ठे होते थे, बन्द कर दिये गये। इन मलों में लाखों रुपये की चीजें खरीदी
 और बेची जाती थी, जिसे गाँही कोष में बड़ी धनराशि पहुँचा करनी थी। बड़े
 बड़े गायक और संगीतियों को जो दरबार में नौकर थे, अपने व्यवसायों के प्रति
 लज्जित किया गया और उन्हें मनसब दिये गये। सावजनिक घोषणाओं द्वारा
 नाचने गाने पर रोक लगा दी गई। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन बहुत से
 गाने वाले और भाट जुलूस बनाकर एक जनाजा ले जाने लगे, उसके चारों
 ओर लोग रोते जाते थे। वे लोग झरोखा दर्शन के नीचे होकर निकले, जब सम्राट
 ने जनाजे के विषय में पूछा तो कहा गया कि संगीत का जनाजा है। तब औरंगजेब
 ने कहा कि इसको गहरा फनाया जाए ताकि गान की कोई आवाज सुनाई न दे।

खाफ़ी खा का बहाना प्राक्पक है। जब शिवाजी आगरा से बेश बन्द
 कर रखाना हुए तो उस समय उन्होंने किस प्रकार से माग में घाने वाली बाधाओं
 से छुटकारा पाया। इसका बहाना खाफ़ी खा ने निम्न प्रकार से किया है। अपनी

1- खाफ़ी खा - मुत्तख़र-उल-नुबाब, भाग द्वितीय पृष्ठ 130 -

2- खाफ़ी खा - मुत्तख़र उल-नुबाब, भाग द्वितीय पृष्ठ 212

दाढी मूँछें साफ करवा कर और बपड़े बदलने के पश्चात् शिवाजी मधुरा से धागे चला। उसका बालक पुत्र और 40-50 अनुचर उसके साथ थे। इन सबन भी अपने चेहरों पर भस्म लगाकर हिंदू साधुओं का सा वेश बना लिया था। बहुमूल्य रत्न, स्वर्ण मुद्रायें और हूण उर्होने छद्मियों में छिपा रखे थे। वे इसी प्रयोजन से पोली की गई थी और इनके सिरों पर, गोंडें बनी हुई थी। कुछ जवाहरात जूतों में भी सिले हुए थे। अनुचरों ने तीन प्रकार के साधुघा का वेश बनाया था। बैरागी गुसाई और उदासी, ये सब इलाहाबाद के मार्गों से बनारस की ओर जा रहे थे। एक बहुमूल्य हीरा और कुछ हीरे लाल मोम में छिपाकर एक अनुचर के बपड़ों में थे। दूसरे रत्न भ्रय अनुचरों के मुँह में थे। इस प्रकार चलते हुए वे लोग ऐसे स्थान पर जा पहुँचे जहाँ का फौजदार अलीकुली खा निजी और सरकारी तौर पर जानता था कि शिवाजी भाग गया है। उसने सुना कि हिंदू साधुओं की तीन मंडलियाँ आई हैं। तो उसने आदेश दिया कि उनको गिरफ्तार करने जाव की जाये। इनको और कुछ भ्रय यात्रियों को एक रात और दिन हवालात में रखा गया, दूसरी रात के दूसरे पहर शिवाजी निजी तौर पर फौजदार से अकेला मिला और उससे कहा कि— मैं शिवाजी हूँ और मेरे पास एक हीरा और एक लाल हीरे, जिनका मूल्य एक लाख रुपये है। यदि तुम मुझे पकड़कर वापिस भेज दोगे या मेरा सिर काटकर रवाना कर दोगे, तो ये दोनों रत्न आपकी नहीं मिलेंगे। यह मैं हूँ और मेरा यह सिर है। परन्तु इस स्थिति में मुझे दुखिया मर घपना हाथ मत उठाओ। अलीकुली ने समझा कि जो रिश्तत तुरत मिल रही है, अच्छी है। भावी पुरस्कार का क्या भरोसा है। उसने दोनों रत्न ले लिये और अगले दिन प्राण काल कुछे जाच करके उन यात्रियों और साधुओं को छोड़ दिया।

खाफी खा के औरगजेब की रुग्णावस्था एवं मृत्यु के समय का विवरण उसकी चातुर्गता को प्रदर्शित करता है। इस घणन से ऐसा लगता है कि जैसे वह बादशाह के पास ही रहा करता था। सम्राट के भ्रगों में दब रहने लगा। उसकी रुग्णता से चिंता उत्पन्न हो गई परन्तु फिर भी वह परीथम करता था। दरबार में बैठता था, काम करता था और अपने लोगों को सात्वना प्ता था। तो भी उसकी रुग्णता बढ़ती गई, वह अचत हो जाया करता था।

इसलिये चित्तार्जनक भ्रष्टवाहें फैलने लगी। सेना शिविर में 10-12 दिन तक बड़ा सन्ताप रहा, परन्तु ईश्वर की दया में वह भ्रष्टा होने लगा और कभी कभी दरवार में घुसने लगा। गाही सेना रामु के देग में पड़ी हुई थी। उसके निवास का कोई ठिकाना नहीं था। लोगों की भय था कि यदि कोई दुख पटना पटी तो उस पवतीय देग में क्रुद्ध माफिरो के हाथ से कोई नहीं बच सकेगा। हकीमो की सम्मति से उसने घोरचीनी खाई। सप्ताह में तीन चार बार वह भौपधि खाता था और प्रतिदिन दान देता था। स्वास्थ्य प्राप्ति पर उसने हकीमो को खूब पुरस्कार किया और भगवान को धन्यवाद दिया। रजब मास के मध्य में कलीच खा को सूबेदार बनाकर उसने बहादुरगढ़ की ओर जो बीरगाव भी कहलाता था, प्रयाण करना शुरू किया, धीरे-धीरे बड़ी कठिनता के साथ उसने चलना शुरू किया और गावान के अंत में वह बीरगाव पहुँचा। फिर रोजों के दिनो में सेना को, धाराम देने के निमित्त, उसने वहाँ पर 40 दिन ठहरान का आदेश दिया।¹

1. शुक्रवार 28 जिलकाना, को गामन के 51 वें वर्ष में जो 1118 हिजरी (21 फरवरी, 1707 ई०) को पड़ता था), प्रातःकाल की नमाज और बलमा पढ़ने के बाद एक पहर दिन बड़े सम्राट की मृत्यु हो गई। वह 90 वर्ष और कुछ मास का था और 50 वर्ष तथा ढाई मास राज्य कर चुका था। उसे दोलतानाग के समीप शेर बुरहानुद्दीन और अन्य धार्मिक पकीरों और शाह जरीज बरक की बलों के निवृत्त दफनाया गया और इस कब्र का काम चलान के लिये बुरहानपुर के कुछ जिले नियत कर दिये गये। तैमूर लंग के शासकों में बलिक दिल्ली के गुलतानो में सिक्कंदर लोदी के सिवाय अपनी भक्ति और तत्व और न्याय के विषय में और गजेब के प्रतिरिक्त कोई इतना प्रसिद्ध नहीं हुआ कि साहस, बल सहन और ठीक ठाक न्याय के लिये वह अनुपम था। वह दण्ड देता था तो कुरान के अनुसार ही देता था। दण्ड के बिना प्रशासन भी नहीं चल सकता था। पारस परित्त ईर्या के कारण उसके धर्मियों में फूट फैल गई थी, इसलिये उसने जो भी योजना बनाई व्यर्थ हुई और जो भी काम अपने हाथ में लिया उसको पूरा करने में बहुत समय लगा और उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। यद्यपि वह 90 वर्ष तक जीवित रहा, तथापि उसकी समस्त इन्द्रिया भ्रष्टा रही। केवल कर्णोन्द्रिय में किंचित निबलता आई थी, जो भी दूरियों को मालुम नहीं पड़ती थी। वह कई रातें भगवान की भक्ति और प्रार्थना में व्यतीत किया करता था और मनुष्योचित स्वाभाविक सुषों से दूर रहता था।²

1- खाफी खा - मुखब उल-सुबाब, भाग द्वितीय, पृष्ठ 535

2- इलियट एव डारसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 277

खाफी खा न बहादुरशाह के समय म हुए मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों का वर्णन किया है। उसने यह भी लिखा है कि फरखसियर को सैपद भन्दुल्ला और हुसैन अली को राज्य में उच्च असेनिक और सैनिक पद नहीं देना चाहिये था क्योंकि उन्हें प्रशासकीय मामलों का कोई अनुभव नहीं था। खाफी खा ने लिखा है कि मैंने निष्पक्ष रहकर अपने ग्रंथ की रचना की है, न तो मैंने मित्रों का समर्थन किया है और न ही शत्रुओं की निंदा की है। मैंने जो कुछ देखा अथवा लोगों से सुनने के पश्चात् सत्य लगा, उसी को लिखा है।

ग्रन्थ के दोष

- (1) खाफी खा गिया मुसलमान था इसलिये वह तुरानि सामंतों से ईर्ष्या करता था। यही कारण था कि उसने अपने ग्रंथ में शिघ्रा सामंतों के प्रति पक्षपात किया है। निजामुल शुल्क इसमें अपवाद है।
- (2) खाफी खा ने कारणों और परिणामों में समन्वय करने का प्रयास नहीं किया है।

मूल्यांकन

इन दोषों के बावजूद भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि खाफी खा ने घटनाओं का यथासंभव एवं क्रमबद्ध विवरण दिया है। उसने मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों का आलोचनात्मक वर्णन किया है। औरंगजेब के शासन का सम्पूर्ण विवरण होने से इन ग्रंथ का महत्त्व और भी बढ़ गया है। संक्षेप में यह ग्रन्थ बाबर के भारतवर्ष पर आक्रमण से लेकर मुहम्मदशाह के शासनकाल के 14 वें वर्ष तक की घटनाओं को जानने के लिये एक महत्वपूर्ण स्रोत है।



मुहम्मद कासिम ने "इबरतनामा" नामक ग्रन्थ की रचना की जो "तारीखे बहादुरशाही" के नाम से भी प्रसिद्ध है। लेखक ने अपनी कृति में लिखा है कि वह अमीर-उल उमरा सैयद हुसैन अली का छात्रित था। यह ग्रन्थ 224 पृष्ठों का है। जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर 18 पक्तियाँ लिपीबद्ध हैं। इसी नाम के दूसरे ग्रन्थ की और अपूर्ण प्रतिलिपि प्राप्त हुई है। यह उसी लेखक की है। दोनों की भाषा में थोड़ा बहुत अंतर है। इससे ज्ञात होता है कि सम्भवतः यह प्रथम कृति का दूसरा संस्करण हो, विशेषकर इसलिये कि इसका आकार प्रकार अधिकांश मजा हुआ है तथा इसकी शैली भी अपेक्षाकृत अधिक परिमार्जित है। किंतु इस नाम के ग्रन्थ कई ग्रन्थ हैं और इसके पीछे के इतिहास का भी यही नाम है।¹

ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्व -

इस ग्रन्थ में औरंगजेब की मृत्यु से लेकर कुतुबुन मुल्क सैयद अब्दुल्ला की मृत्यु तक का इतिहास है। लेखक का उद्देश्य था कि बारहा के दोनो महान् सैनिकों का इतिहास लिखें, जो पूरा हो चुका था। इसकी विषय सूची में प्रत्येक प्रकरण के पृष्ठ भी दिये गये हैं। इलियट एव डाउसन की पुस्तक भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) में यह सूची इस प्रकार दी हुई है। इबरतनामा लिखने के कारण, लेखक अमीर उल उमरा सैयद हुसैन अली खा शहीद का दरबारी बना इसके कारण, औरंगजेब आलमगीर की मृत्यु का वृत्तान्त तथा बहादुरशाह के शाही सिंहासन पर बैठने का शुभ अवसर, मुहम्मद आजमशाह का प्रयाण तथा मुहम्मद मुअज्जम बहादुरशाह से युद्ध करने के उद्देश्य से और आगरा के समीप जाजू की रणभूमि में सेनाओं का मुकाबला, - मुहम्मद आजमशाह में और मुहम्मद मुअज्जम बहादुरशाह तथा उसके पुत्रों में लड़ाई और बहादुरशाह की विजय। बहादुरशाह की विजय पर उत्सव और पुराने तथा नये सेवकों एव रिस्तेगारों को पुरस्कार, बहादुरशाह का मुहम्मद कामरुश के विरुद्ध दखिखन को प्रयाण, अपने छोटे भाई कामरुश पर विजय प्राप्त करके उसकी वापसी, पंजाब में सिक्खों की

गडबड तथा सरहिन्द का विनाश, एव नानकशाह फकीर की प्रशंसा, लाहौर में शालीभार बाग के समीप चारो शाहजादो में युद्ध, दो शाहजादे जहादरशाह, और रफी उस्मान तथा मुहम्मद मुइज्जुदीन जहादरशाह से युद्ध, दिल्ली के तख्त पर मुहम्मद, मुइज्जुदीन, जहादरशाह का आरोहण, लाहौर के समीप चार शाहजादो की लड़ाई का समाचार सुनकर अपने पिता और भाई का बन्ला लेने के लिये फरखसियर की तैयारी, जहादरशाह के पुत्र सुलतान आज्जुदीन की सेना की दोनो सैयदों से हार और उसका पलायन, मुहम्मद फरखसियर का आगरा में सिंहासन रोहण, दोआब का जमीदार ईसा खा एव उसका परिवार और परिजन तथा कसूर के अफगान, शाहदाद खा द्वारा सबका बंध, फरखसियर के शासन में गडबड के कारण अजमेर के राजपूतों और अमीरो के मामलों के नियंत्रण, नवाब सैयद हुसैन अली खा की नियुक्ति और फरखसियर के वास्ते राजा अजीतसिंह की पुत्री की रावी के तट पर लाने का आदेश, रावी नदी के तट पर फरखसियर का राजा अजीतसिंह राठौड़ की पुत्री से विवाह, दक्खिन की सूबेदारी हुसैन अली खा की और पूव प्रांत की सूबेदारी हमला, बहादुर की दी गई, मुहम्मद रफीउद्दजात, को तख्त पर बिठाया गया और फरखसियर की मृत्यु शाहजादा नेकुसियर को तख्त पर बिठाया गया व रफीउदौला शाहजहा द्वितीय के साथ हुसैन अली खा का आगरा को प्रयाण तथा आगरा दुग पर विजय। सैयदों की सहायता से फतेहपुर में मुहम्मद गाजी का तख्त पर बैठना, राजा धीरोलाराम के भाई गिरधर बहादुर द्वारा इलाहाबाद में उत्पात व उनके विरुद्ध हैदर कुली खा को भेजा जाना, तथा राजा रतन बहादुर का प्रस्थान मुहम्मदशाह का दक्खिन को प्रयाण, तथा एक मुगल के कपट से सैयद हुसैन अली खा की मृत्यु सयद हुसैन अली के बंध की सूचना, उसके भाई सैयद अब्दुल्ला को मिली, उसका सन्ताप, मुहम्मद अमीन खा और सैयद अब्दुल्ला खा कुतुब उल मुल्क में लड़ाई तथा उपयुक्त सैयद की गिरफ्तारी।

1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 411-412

जिन हिंदू इतिहासकारों ने फारसी भाषा में औरंगजेब के शासनकाल का ऐतिहासिक विवरण दिया है, भीमसेन उनमें से एक है। वह कायस्थ जाति का था तथा बुरहानपुर का रहने वाला था। उसके पिता का नाम रघुनाथदास था जो मुगल सेना के तोपखाने में मुशरिफ के पद पर कार्य करता था। उसके पिता 1657 ई० में औरंगाबाद में नियुक्त थे। इसलिये भीमसेन ने वहाँ पहुँचकर फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। उसने पिता के वृद्ध हो जाने पर उनके मुशरिफ का कार्य स्वयं न देखना प्रारम्भ कर दिया किंतु 1670 ई० में उसके पिता ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके पश्चात् कुछ समय भीमसेन सेनापति दाऊद खाँ कुरैशी एवं महाराजा जसवतसिंह की सेवा में रहा। 1686 ई० में उसने अपने परिवार के साथ रहना प्रारम्भ कर लिया। फिर भी उसने औरंगजेब के सेनापति दलपतसिंह बुन्देला के अधिन कई वर्षों तक मुगल सेना में अपनी सेवाएँ दी। उसने दक्षिण के युद्धों में भी भाग लिया था। 1700 ई० में जब मुगल सेना ने पनहालादुर्ग को घेर रखा था, तब भीमसेनों ने अपने श्रेय के लेखन का कार्य प्रारम्भ किया था। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों में राज्यप्राप्ति के लिये उत्तराधिकार संधर्ष प्रारम्भ हो गया। जिसमें भीमसेन की स्वामी दलपतराव बुन्देला ने आज्ञा का पालन किया और वह आज्ञा के युद्ध में सडता हुआ वीरपति को प्राप्त हुआ। इस पर भीमसेन भी सेवानिवृत्त होकर अपने परिवार के साथ रहने दतिया चला गया।

ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्व

भीमसेन के पूर्व भी औरंगजेब के शासनकाल का इतिहास लिखा जा चुका था किन्तु सदिष्ट होने के कारण उनमें पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होती। औरंगजेब के समय में हुए दक्षिणी भारत एवं उत्तरी भारत के परिवर्तन, घटनाओं,

के कारण, और परिणाम, का इस ग्रंथ में विस्तृत विवेचन किया गया है। इसमें अतिरिक्त उस समय की प्रजा और देश की दशा के बारे में इस ग्रंथ से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। भीमसेन ने अपना जीवन दक्षिण में मुगलों के साथ नगरो एव छावनियों में व्यतीत किया था तथा कुमारी अर्थात् से दिल्ली तब के प्रदेशों की यात्रायें की थीं।

सर जदुनाथ सरकार ने लिखा है कि भीमसेन एक महान् सस्मरण हिंदू लेखक था, जिसके ग्रंथ से उस समय की घटनाओं और ऐतिहासिक व्यक्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसलिये सरकार ने उसके ग्रंथ को अद्वितीय एव अमूल्य माना है। भीमसेन मुगल सेना में बाबू (बलक) के पद पर कार्यरत था इस वजह से उच्च पदाधिकारियों से उसका निकटतम सम्पर्क स्थापित हुआ। यही कारण था कि उसे घटनाओं की सही जानकारी प्राप्त होती रही। और कई राज्यों के गुप्त भेद भी मालुम होते रहे। प्रथम तो वह मुगल शासक की राजधानी से बहुत दूर था एव द्वितीय उसने किसी मुगल बादशाह के संरक्षण में अपने ग्रंथ की रचना नहीं की थी। अतः उसने घटनाओं को छिपाने या तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर लिखने का प्रयास नहीं किया है और न ही उसने मुगल सम्राट या किसी दरबारी की खुशामद में पूर्ण प्रशंसा की है।

इस प्रकार भीमसेन की कृति में हमें वे बुराईयाँ देखने को नहीं मिलती जो कि अन्य दरबारी इतिहासकारों की कृतियों में पायी जाती हैं। उसने घटनाओं का सत्य विवरण ही प्रस्तुत किया है। ऐतिहासिक व्यक्तियों के चरित्र का वर्णन करते हुए उनके दोषों को भी प्रकट किया है। उसने एक तटस्थ इतिहासकार की भाँति औरंगजेब के समय की घटनाओं के सही कारणों और परिणामों का वर्णन किया है।

भीमसेन न खिरकी का हाल भी लिखा है। उसका कथन है कि इस नगर का संस्थापन मलिक अम्बर ने किया था। औरंगजेब ने इसका नाम बदलकर औरंगाबाद कर दिया। शाहजादा की बीमारी के बाद जो घटनाएँ घटी, विशेषतः दक्षिण में उनके सम्बन्धित किया गया वृत्त त तो अत्यन्त विश्वसनीय है।¹

भीमसेन दक्षिण में मुगल सेना के साथ था। घत उसकी हृति से दक्षिण के मुगल युद्धों के बारे में विस्तृत एवं महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। उसी उस समय की खाद्य पदार्थों, बी, कीमती, सडकों की दशा लोगों के सामाजिक जीवन एवं मनोरंजन के साधनों का विवरण भी दिया है। ऐसा विवरण हमें प्रायः समकालीन इतिहासकारों की हृतियों में प्राप्त नहीं होता। 17 वीं शताब्दी के दक्षिण के इतिहास को जानने के लिये यह एक अमूल्य साधन है।

भीमसेन का चरित्र प्रभावशाली, विनम्र, स्पष्ट तथा दृढ़ था। उसके प्रायः में कुछ दोष भी हैं जैसे कि अपने रिश्तेदारों के प्रति असीम स्नेह। भीमसेन हिंदू था इसलिए उसकी हिंदू धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी। भीमसेन ने अपनी हृति में कई बातों की जो ध्यायार्थ दी हैं, वे अत्यन्त रोचक हैं। जैसा कि उसने भोंसला राजा के विषय में लिखा है कि इस राजा का संस्थापक राजा उरसेन था। वह चित्तौड़ से चलकर दक्षिण भारतवर्ष में आया और परिदा में स्थित भोंसला ग्राम में रहने लगा। इसी गांव के नाम पर उसके वंशज भोंसला कहलाए। इस ग्रन्थ से शिवाजी के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त होती। लेखक ने कुछ घटनाओं की तिथियां सही नहीं दी हैं। भीमसेन ने शिवाजी के संगठन सम्बन्धी प्रतिभा की काफी प्रशंसा की है। मराठों ने मुगलों के विरुद्ध जो विद्रोह किया, उसका कारण बताते हुए उसने लिखा है कि मराठा किसानों का शोषण होने के कारण उन्होंने विद्रोह का मार्ग अपनाया और मराठों की सेनाओं में शामिल हो गये।

ईश्वरदास नागर भी हिंदू इतिहासकार था जिसने पारसी भाषा में फुतूहाते आलमगीरी नामक ग्रन्थ की रचना की। यह गुजरात में पाटन नगर का रहने वाला था। यह उसकी सुप्रसिद्ध कृति है।

ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व

इस ग्रन्थ में सात अध्याय हैं, जिनमें औरंगजेब के उत्थान से लेकर उसके राज्यकाल के 34 वें तक विस्तृत इतिहास है। फुतूहाते शाहजहा के बीमार होने से प्रारम्भ होती है तथा उसमें शासन हस्तगत करने के लिये दारा शिकोह के प्रयासों का भी उल्लेख है। राजा जयसिंह और सुलेमान शिकोह द्वारा गुजा की पराजय का भी संक्षिप्त विवरण है। इसके अतिरिक्त लेखक ने मुगलद्वारा अलीनकी के वध की सफाई प्रस्तुत की है, उसका कथन है कि अलीनकी दारा से साठ गांठ किये हुए था।

दूसरे अध्याय में सबसे चिन्तनोपकृत्य है। औरंगजेब का मुरादा से यह वायदा करना कि वह उसको गद्दी पर बिठाने के बाद सत्तार से विरक्त हो जायेगा। लेखक का यह भी कथन है कि खलीलुल्ला खा ने दारा को हाथी से उतरने का परामश देकर उसके साथ विश्वासघात किया। परंतु उसका यह कथन किसी ठोस साक्ष्य पर आधारित न होने के कारण पूर्ण रूपेण विश्वसनीय नहीं है। इसमें राजपूतों सम्बन्धी विवरण बहुत महत्वपूर्ण है।¹

1- सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहा पृष्ठ 6 (प्रवेश)



23 | मुजानराय : खुलासत-उत-तवारीख

मुजानराय खत्री ने 1695-96 ई० में खुलासत उत-तवारीख नामक ग्रन्थ की रचना की। यह पंजाब स्थित पटियाला नगर का निवासी था। इलियट ने अपनी पुस्तक भारत का इतिहास -(अष्टम खण्ड) में गलती से उसका नाम मुजानराय लिखा है। मुवाव्वा में यह उच्च ग्राही अधिकारियों का मुखौटा रहा था। यह इतिहास में अपने उपनाम "भंडारी" के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति में 534 पृष्ठ हैं तथा यह भारत के अतिरिक्त यूरोप में भी उपलब्ध है। इस ग्रन्थ की अनेक प्रतियाँ ब्रिटिश, म्यूजियम, कलकत्ता, पटना एवं सहारनपुर में प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त दो प्रतियाँ रोयल एशियाटिक सोसायटी की लाइब्रेरी में हैं। यह भारत का प्रसिद्ध इतिहास है। इसमें पाठवो से लेकर औरंगजेब के शासनकाल तक का इतिहास है।

ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्व

मुजानराय ने अपने रचना के सम्बन्ध में रामायण से लेकर तारीखे यहादुर ग्राही तक आधारभूत ग्रन्थों की भी लम्बी तालिका प्रस्तुत की है। यह कहता है कि क्योंकि औरंगजेब तक जितने शासक हुए हैं उनके राज्यकाल का उसने संक्षिप्त विवरण ही दिया है। इसी कारण उसका नाम "खुलासत" रखा।

इस ग्रन्थ के प्रमुख अध्याय निम्न प्रकार हैं हिंदूस्तान, उमकी पैदावार, यहा के निवासी एवं सूबों का बखान (प्राचीन हिंदू राजा, गजनवी के सुलतान, दिल्ली के मुस्लिम सुलतान, बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहांगीर, शाहजहा एवं औरंगजेब के शासनकाल का विवरण) मुजानराय ने लिखा है कि उसने 27 ग्रन्थ पूर्ववर्ती ग्रन्थों को आधार बनाकर इस ग्रन्थ की रचना की है। जिसमें तारीखे फीरोजशाही भी सम्मिलित है। परंतु इलियट ने इस कथन को सही नहीं माना

है। ग़ाहनराज का न घपनी कृति मघासिर उल-उमरा म इस ग्रंथ के बार में लिखा है कि इसका लेखक एब हिन्दू था। इलियट का मानना है कि यह ग्रंथ 'मुस्तसिरत उन तवारीस' नामक ग्रंथ की उन्नत है। सुजानराय ने अपने ग्रंथ की भूमिका में लिखा है कि मैं किसी से कुछ ही सुनया है और अपने प्रति इस ग्रंथ की रचना की है। इस कथन से इलियट को यह सादह हो गया था। खुलासत उन-तवारीस का उर्दू में अनुवाद मीर शेर अली जाफरी ने किया जिम्मा उपनाम "अफसोत" था। यह अनुवाद ऐराइजे महमिल के नाम से भी प्रसिद्ध है।

खुलासत उन तवारीस में औरगजेब की मृत्यु का विवरण भी दिया गया है। ज़क़ी लेखक ने यह लिखा है कि उसने इस ग्रंथ की रचना 1695-96 ई० में की थी, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि 1696 ई० के बाद का इतिहास इस ग्रंथ में किसी दूसरे लेखक ने लिखा है। आधे ग्रंथ में तो लगभग सूबों और अमताई शासकों के पूर्ववर्ती हिन्दू और मुस्लिम सुलतानों का विवरण है। हिन्दुओं के कुम्भ के मले का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि यह प्रति 12 यप के बा हरिद्वार में होता है। इस ग्रंथ के प्रारम्भिक अध्याय बहुत अच्छे लिखे हुए हैं। जिनमें हिन्दुस्तान की भौगोलिक स्थिति, एब पैदावार का विवरण दिया गया है। गजनी वंश के शासकों का हिन्दुस्तान से सम्बन्ध का भी विस्तृत वर्णन किया गया है। दिल्ली के मुस्लिम सुलतानों (तुग़) का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। सुजानराय ने प्रथम चार मुगल सम्राटों बाबर, हुमाय, अकबर एब जहांगीर का अच्छा वर्णन किया गया है। लेखक ने शाहजहा का इतिहास बहुत संक्षिप्त लिखने का कारण यह बताया है कि चूँकि वारिस खा ने शाहजहा का विस्तृत इतिहास लिखा है, इसलिये अधिक विवरण देना अनावश्यक है। औरगजेब और उसके भाईयों में उत्तराधिकार के युद्ध का वर्णन बहुत ही विस्तृत किया गया है।

सुजानराय ने इतिहास के महत्व के बारे में लिखा है कि दुनिया में ईश्वरीय ज्ञान के बाद कोई ज्ञान है तो वह है इतिहास का ज्ञान। उसने हिन्दुस्तान के प्राचीन राज्यों का वर्णन मुस्लिम बादशाहों के शासन के साथ मिलाकर किया। उनका अलग अलग वर्णन नहीं किया है। शाहजहा ने अपने भाई सुसरवा खा का वध करवाया था या नहीं, इस विषय में लेखक सन्दिग्ध है। उत्तराधिकार युद्ध

का वृत्तान्त देते हुए मुजानराय लिखता है कि जमवन्तसिंह इसलिये हारा कि राजा जयसिंह तिस्रोदिया और राजा मुजानसिंह चद्रावत ने उसका साथ छोड़ दिया था। वह यह भी लिखता है कि दारा खलील उल्लाह के कहने से हाथी से नहीं उतरा। दारा के सिंघ में गुजरात भागने के बाद बी घटना से सहसा प्रथम समाप्त हो जाता है और लेखक यह कह देता है कि 92 वर्ष की अवस्था में औरमजेद दक्षिण में परलोक विधारा।

1- सक्तेना, बी पी (डा०) मुगल साम्राट शाहजहां, पृष्ठ ३८ (प्रवेश)



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(प्र) हिन्दी

- 1- इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (भाग 1 से 8 तक)
- 2- ईश्वरी प्रसाद (डा०) - भारतीय मध्य युग का इतिहास (1200-1526 ई०)
- 3- ठाकुर, बेशवमुंमार - बाबरनामा (ग्रन्थ०)
- 4- निगम, एस० बी० पी० (डा०) - मूरवग का इतिहास
- 5- नागोरी, एस० एल० (डा०) - राजस्थान के इतिहास के प्रमुख खोज -
- 6 रिजवी, सैयद प्रतहर अगगात (i) आन्तितुवकालीन भारत
(ii) सिलजीकालीन भारत
(iii) तुगलककालीन भारत भाग एक एक दो
(iv) उत्तर तै मूरकालीन भारत भाग एक एक दो
(v) मुगलकालीन भारत
- 7- लुनिया, बी० एन० - अकबर महान्
- 8- शर्मा, एम० एल० (डा०) (i) तुजुब ए शायरी (ग्रन्थ०)
(ii) अकबरनामा (शेख अबुल फजलकृत का ग्रन्थ०)
- 9 सक्सेना, आर० के० (डा०) - तुजुब-ए-तीमूरी (ग्रन्थ०)
- 10 सक्सेना, बी० पी० (डा०) - मुगल सम्राट गार्हजहा
- 11- श्री वास्तव, ए० एन० (डा०) - अकबर महान् भाग प्रथम

(ब) अंग्रेजी

- 1- Basu, K K - English Tr or Traikh-i-Mubarakshahi
- 2- Beveridge A S, (i) Memories of Babar
(ii) Gulbadan Begum s Humyau Namah
- 3- Habib Mohammad - Life and works of Hazarat Amir Khusrau
- 4- Mirza M W - Life and works of Amir Khusrau
- 5- Smith V A - Akbar the Great Mughal



डॉ एन एल नागोरी
4 जुलाई, 1949 को
डूंगला जिला चिन्नीडगढ़
(राज०) म ज म ।

- 1972 में बी ए प्रथम श्रेणी में
- 1974 में एम ए इतिहास प्रथम श्रेणी में प्रथम रहकर स्वर्णपदक प्राप्त किया और उदयपुर विश्वविद्यालय में बीतिमान स्थापित किया ।
- 1978 में 'मलबर राज्य का इतिहास' विषय पर पीएच डी ।
- विगत ग्यारह वर्षों से स्नातक एवं स्नातकोत्तर वक्षाओं में प्राध्यापन ।
- सम्प्रति राजकीय महाविद्यालय, सिराही (राज०) के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग में प्राध्यापक ।

प्रकाशित कृतियाँ

- मलबर राज्य का इतिहास
- विश्व का इतिहास
- विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास
- भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास
- राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत
- आधुनिक विश्व का इतिहास
- भारतीय संस्कृति
- प्राचीन भारत

शीघ्र प्रकाश्य

- भारत के स्वतंत्रता सेनानी
- आधुनिक भारत
- भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन